समर्पण

आदरणीय भाई श्री रामशरण
शर्मा (मुंशी) जी को अपार आदर
और स्नेह के साथ

दर्शक

भूमिका

संग्रह की अनेक कहानियां मैंने पढ़ी हैं, और लेखक की कला के अनेक पहलुओं से प्रभावित हुआ हूं। यथार्थ जीवन पर उनकी पकड़ है, दृश्य-चित्रण प्रभावशाली है और सबसे बड़ी बात, कहानियां सरल हैं पढ़ने वाला उन्हें बड़ी रुचि से पढ़ता है। हमारे यहां कहानी की जिस परम्परा का सूत्रपात प्रेमचन्द ने किया था कि कथानक यथार्थ जीवन में से निकल कर आये और कहानी आदर्शोन्मुख हो, उसमें नैतिक तत्व हो सामाजिक जीवन को बेहतर बनाने की प्रेरणा हो लेखक समाज के अन्दर पाये जाने वाले अन्तर्विरोधों के प्रति सचेत हो, और अपनी लेखनी द्वारा उन अन्तर्विरोधों को सामने लाये, मुझे ये कहानियां उसी सार्थक परम्परा से जुड़ी हुई लगीं। बल्कि यह भी लगा कि लेखक प्रेमचन्द की शैली और दृष्टि दोनों से विशेष रूप से प्रभावित हुआ है।

यह जानकर मुझे सुखद आश्चर्य हुआ कि यह लेखक का पहला कहानी संग्रह है। समय बीतने पर निश्चय ही लेखक की कलम में और अधिक निखार आयेगा, उनकी अपनी दृष्टि और शैली पनपेगी, और वह आज के जीवन का अधिक व्यापक मार्मिक और कलापूर्ण चित्र प्रस्तुत कर सकेंगे।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भीष्म साहनी

अपनी बात

अपना पहला कहानी संग्रह धारा बहती रहो पाठकों के हाथों म सौपते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। कहानिया कसी है इसका निर्णय तो पाठक ही करेग। यहा तो म केवल इतना बताना चाहता हू कि मैंने ये कहानिया क्यों लिखी?

म क्यो लिखता हू?

मेरा बचपन हिमाचल प्रदेश के एक बहद पिछड गाव म बीता है। गाव इतना पिछडा था कि मैं शायद गाव का चौथा लडका था, जिसने मटिक पास किया था। लडकी तो उस गाव म आज भी कोई मटिक पास नही है। चार वर्ष पहल तक गाव के आदमी और पशु एक ही जोहड म नहात और पानी पीत थ। जमीन के स्वामी राजपूत लोग अपने आसामियो पर वैसा ही अधिकार जतात थ, जसा राजा प्रजा पर जताता है। गरीबी, अन्ध विश्वास और जोर-जुल्म की घटनाए जो प्राय नित्य ही गाव म घटती रहती थीं, मेरे दिमाग पर बहुत प्रभाव डालतीं। शारीरिक तौर पर कम जोर और कम उम्र होने के कारण म कुछ कर तो सकता नही था, तो भी उक्त व्यवस्था के प्रतिकार की भावनाए मन मे उठती ही।

मैंटिक पास करने के बाद गाव स बाहर निकला तो देखा कि भूख, गरीबी, अन्धविश्वास और जोर जुल्म कवल हमारे गाव की ही बपौती नही, बल्कि सारे देश मे व्याप्त है। प्रभाकर मे पढने के कारण साहित्य के विषय मे भी कुछ ज्ञान हो गया था। अत प्रतिकार की जो भावनाए दिमाग मे उठतीं, व कागज के पन्नो पर उतरने लगीं। मेरे कमजोर हाथो मे हथियार आ गया।

अब कुछ इस सकलन के छपने के विषय म। यह भी एक कहानी है। मैं लिखता जरूर था, लकिन मैंने यह कभी नही सोचा था कि मेरी कोई पुस्तक छपगी।

जनयुग तब साप्ताहिक निकलता था। मेरी कई कहानिया उसमे छप चुकी थीं। एक दिन 'जनयुग' के कार्यालय म गया, तो पता चला कि श्री व्यास (श्री एच के व्यास) मुझे याद कर रहे थे। मिलने पर उन्होने बताया कि पी पी एच मेरा कहानी सग्रह निकालने पर विचार कर रहा है। यह सन १९७० की बात है।

और अब १९७७ मे जब यह सग्रह छप रहा है, तो मेरा दिल पी पी एच के प्रति और अपने उन सभी मित्रो और आदरणीय बुजुर्गों के प्रति अपार श्रदधा से भर उठा है, जिन्हें इसे निकालने का वास्तव

मे श्रय है। श्री एच के व्यास की सहृदयता के कारण यह काम शरु हुआ। श्री आचार्य, श्री बद्रीनाथ तिवारी और श्री बालकष्ण उपाध्याय, सभी किसी न किसी रूप मे इस काम मे सहायक हुए। और आदरणीय था रामशरण शर्मा (मुशी), जिन्होन बहद परिश्रम करके कहा नियां को सजाया सवारा ही नहीं, बल्कि इस छपवाने मे भी निजी तौर पर रुचि ली। उनके सही मार्गदर्शन के बिना न तो य कहानिया ऐसी बन पडती और न ही यह सकलन निकल पाता। समझ म नहीं आ रहा है कि किन शब्दो मे इन सबको धन्यवाद दू! और फिर जनयग', प्रस और बाहर के बहुत स साथी हैं, जो यदा कदा इस सग्रह के विषय म उत्सुकता दिखा कर मेरा उत्साह बढात रहे है। उन्हे भी मैं धन्यवाद देना चाहता हू। और अन्त मे प्रगतिशील लखक सघ के महामत्री आदरणीय श्री भीष्म साहनी का मैं बहुत आभारी हू, जिन्होने पस्तक की भमिका लिख कर मरा उत्साह बढ़ाया।

दर्शक

क्रम

धारा बहती रही

वे पुल से जरा नीचे ढलान पर बैठे थे। नीचे पहाडी नदी की पतली धारा बह रही थी।

वे इकट्ठे नही, बीच मे फासला छोड कर बैठे थे। युवक की आयु होगी चौबीस पच्चीस के करीब। सिर पर हिप्पियो जैसे केश। आकर्षक चेहरे पर उदासी के गहरे भाव।

युवती कोई अठारह या बीस की होगी। फूल सी मुलायम पर मौत सी पीली।

मई मास की बिना चाद की रात। साफ आकाश मे तारो की भरमार। दूर मदिर के आगन मे लगे बिजली के बल्ब को धुधली जादुई रोशनी। नदी तट पर सिवा उन दोनो के अब कोई नही रह गया था। पर पुल पर से लारिया ट्रकें और पैदल आदमी अभी तक आ-जा रहे थे।

युवक सरे शाम ही वहा आ बैठा था। युवती काफी रात गये आयी थी। आ कर उस शिला के किनारे खडी हो गयी थी, जो छज्जे की तरह पानी पर छा रही थी। असख्य तारों के अक्स के कारण पहाडी नदी की नीली चचल धारा नववधू की साडी की तरह झिलमिला रही थी।

युवती खोये खोये अदाज मे कुछ सोचती सी कुछ क्षणो तक वहा खडी रही। तभी युवक ने सिगरेट सुलगाने के लिए लाइटर जलाया। युवती चौंक उठी। सहमी, डरी, अपराधी, क्रुद्ध दृष्टि से उसने युवक की ओर देखा। फिर वह उससे कुछ दूर ढलान पर जा बैठी।

× × ×

उनमे बातचीत आरम्भ करने की कोशिशें ही नही बल्कि मन्शें भी हो चुकी थी। युवक ने पानी मे ककड फेंका था। पानी के छींटें चारों ओर उड़े थे, जैसे किसी ने नन्ही नन्ही मोतियो की लडिया बिखेर दी हों। युवती मुस्करायी थी। उदास फीकी मुस्कान।

'कितना सुहाना दृश्य है!'' उसके मुह से अचानक निकला था।

'होगा,'' युवक ने कहा।

''क्या ?'' युवती पूछने को हुई और फिर मौन रह गयी।

''आप क्या यहा रोज आती हैं ?'' कुछ क्षण खामोश रहने के बाद, शायद खामोशी से ऊब कर, युवक बोला था।

"आप से मतलब ?" युवती की आवाज में पहले की अवज्ञा के कारण क्रोध था।

× × ×

तब से वे खामोश बैठे थे। एक-दूसरे से चिढ़े-चिढ़े। युवती नदी की नम रेत पर बार बार किसी का नाम लिख और मिटा रही थी। नदी की दूसरी ओर ऊंची पहाडी थी, जिस पर थोडे थोडे फासले पर बिजली की असंख्य बत्तियां जल रही थीं और लग रहा था, मानो वह पहाडी नहीं, तारों भरे आकाश का ही कोई भाग हो। युवक एकटक उधर देख रहा था।

अचानक युवक ने उधर देखना बंद कर दिया, जम्हाई ली, कलाई पर बंधी घडी पर नजर डाली और जैसे अपने आप से बोला "ग्यारह बज गये।"

युवती पूर्ववत रेत पर लकीरें खींचती रही।

"मैंने कहा, ग्यारह बज गये," युवक ने अब सीधे युवती को संबोधित किया।

"बला से," युवती ने खीझभरे रूखेपन से जवाब दिया।

"मेरा मतलब है, आप को देर नहीं हो रही है ? आप के घर वाले नाराज नहीं होंगे ?"

"आप से मतलब ?"

"मतलब है। मुझे यहाँ एक काम करना है।"

"तो करते क्यों नहीं ? मैं कोई रोक रही हूं ?"

"वह काम किसी के सामने नहीं हो सकता।"

"तो और कहीं जाकर कीजिए।"

"और कहीं नहीं हो सकता।"

"क्यों नहीं हो सकता ?"

"क्योंकि नदी में और कहीं भी न तो इतना गहरा पानी है और न ही छलांग लगाने के लिए इतनी अच्छी जगह।"

"मतलब ?"

"मतलब यह कि मैं मरना चाहता हूं।"

युवती की बडी-बडी आंखें और भी बडी हो गयीं।

"लेकिन मुश्किल यह है," युवक ने बोलना जारी रखा, "कि दुनिया शांति से मरने भी नहीं देती। मैं यहां शाम से बैठा हूं, पर"

युवती पत्थर बन गयी थी।

युवक उसके सामने जा खडा हुआ और बहुत ही आजिजी से बोला, "तो, अब कृपा करें प्लीज !"

युवती कुछ क्षणों तक खामोश बैठी रही बुत की तरह। फिर उसका चेहरा विकृत हो उठा, जिसे उसने हाथों से ढाँप लिया और सिसक उठी।

"अरे, आप तो रोने लगीं ! मैं कौन हूँ आप का ?"

× × ×

और कुछ देर बाद वे दोनों खामोश पास पास बैठे थे। युवती का पीला उदास चेहरा धुला धुला लग रहा था। युवक के चेहरे पर उदासी के बादल और भी घने हो गये थे।

'तो आप भी इसी शुभ काय के लिए आयी हैं क्या ?" युवक के उदास चेहरे पर करुण मुस्कान दौड़ गयी।

युवती खामोश।

'वह आप से प्यार करता था," युवक बोला, "पर जब उसे पता चला मेरा मतलब है आप की दशा का, तो भाग खड़ा हुआ ! यही न ? धोखेबाज !"

"नही, नहीं ! उन्हें गाली मत दीजिए," युवती ने घबराये स्वर मे कहा।

'ओह ! अभी भी इतना प्यार है ! अजीब लड़की हैं आप ! और एक शालू थी कि सारा प्यार, सारे वादे भूल कर किसी दूसरे की हो बैठी। केवल इसलिए कि दूसरा एक बहुत बड़े ठेकेदार का बेटा है, जबकि मैं एक मामूली गरीब आदमी हूं।"

"नहीं वास्तव मे उन्होंने मुझे धोखा नहीं दिया था," युवती बेहद उदास आवाज मे बोली। 'नियति ही हमें धोखा दे गयी। हमने मन्दिर मे जा कर चुपचाप शादी कर ली थी। हम दोनों के एक जाति के न होने की वजह से मेरे माता पिता मान नहीं रहे थे। उनके माता पिता तो जीवित थे ही नहीं। आशा थी, बाद में हम अपने माता-पिता को राजी कर लेंगे और सब इकट्ठे रहने लगेंगे। और तभी जाना पड़ गया उन्हें किसी काम से शिमला। वहां से वापस नहीं लौट पायें वे। ऐक्सीडेन्ट मे "

युवती फिर सिसक उठी।

× × ×

पूरब मे ऊंची पहाड़ी के पीछे से चांद की कटे किनारे वाली पीली चमकदार थाली उभरी और धीरे धीरे ऊपर उठती चली गयी। चारों ओर जैसे चांदी ही चांदी बिखर गयी। पहाड़ की चोटियां, वृक्ष, नदी की धारा, मकानों की छतें—सब रुपहली हो उठीं। स्वप्नलोक की सृष्टि !

"सुनिए !" अचानक युवक बोला।

"कहिए !" युवती ने कहा।

'मेरे दिमाग में एक बात आयी है।"

"बोलिए !"

"आप का आत्महत्या करना ठीक नहीं है।"

"और आप का जैसे ठीक है ?" इतने दुख के समय भी युवती के लबों पर व्यग्यभरी मुस्कान खिल उठी।

"हा, मेरा ठीक है," युवक ने उत्तर दिया, "क्योकि मैं केवल अपनी जान ही ले रहा हू, किसी दूसरे की नहीं, जबकि आप अपने साथ एक और जीवन भी समाप्त करने जा रही हैं।"

"नहीं, आत्महत्या करना कभी भी ठीक नहीं। किसी दशा म भी नहीं, जि दा रहना ही ठीक है।"

"तो फिर आप क्या कर रही हैं आत्महत्या ?"

'क्योकि मेरे लिए और कोई चारा नहीं है।"

"सभी आत्महत्या करने वाले यही कहत हैं।"

"नहीं। जि दा रहने के लिए यदि जरा-सा भी उपाय होता, तो मैं कभी यह कदम न उठाती। जीवन से बहुत प्यार है मुझे।"

"ठीक है। तब एक बात हो सकती है।" कुछ देर सोचने के बाद युवक बोला। "आप सारी जिम्मेदारी मुझ पर डाल सकती हैं।"

"जी नहीं, धन्यवाद, बाद मे ताने दे दे कर आप उमर भर मेरी जि दगी नरक बनाते रहेंगे।"

"नहीं, यह नहीं होगा।"

दूर घटाघर की घडी ने दो बजाये। युवक चौंक उठा। "अरे दो बज गये! इतनी जल्दी ? समय का पता ही नहीं चला।" वह उठ खडा हुआ।

'कहा चले ?" युवती ने पूछा।

'अपना काम करने। सुबह होने वाली है। आप तो "

"और कुछ देर पहले मेरी जो जिम्मेदारी ले रहे थे ?"

"ले तो रहा था, पर आप ने जवाब ही कहा दिया ?"

"अब देती हू बैठ जाइए।"

युवक बैठ गया। युवती बोली, "मुझे मजूर है, पर शत यह है कि आप भी "

"नहीं। यह नहीं हो सकता। मैं इस स्वार्थी दुनिया मे नहीं रह सकता।"

"अच्छा, एक बात बताइए।" कुछ देर चुप रह कर युवती बोली, "दुनिया मे क्या केवल स्वार्थी ही बसते हैं ?'

'मेरा तो यही ख्याल है।"

तो फिर आप जो मेरी जिम्मेदारी ले रहे हैं वह किस लिए ?"

युवक निरुत्तर। युवती बोली, 'विशेप परिस्थितियो के कारण इस समय आपको ऐसा लग रहा है। जिस तरह आप चाहते हैं कि मैं जि दा रहू, उसी

तरह मेरी भी जबदस्त इच्छा है कि आप जिंदा रहें, क्योंकि जीवन से बढ कर इस दुनिया म और कोई चीज नहीं है।"

'बकवास है! सरासर बकवास!!'—युवक ने कहा।

"कहा न, विशेष परिस्थितियो के कारण इस समय आप को ऐसा लग रहा है।" युवती की आवाज अतिरिक्त नम हो आयी थी।

धारा बह रही थी। चादनी के कारण वह बिल्कुल चादी सी लग रही थी। उसकी तरगो म गुनगुनाहट सी बज रही थी और ऐसा लग रहा था जैसे वह गा रही हो।

युवक ने पहचानी नजरो से गौर से उसकी ओर देखा। उसे वह शायद सी ही मोहक और प्यारी लग रही थी।

●

एक और सावित्री

मैं आश्चर्यचकित रह गया। इसके दो कारण थे। पहला यह कि हमारे इलाके की वह पहली औरत थी, जो डैम पर काम करने आयी थी। दूसरे, वह बहुत सुन्दर और कोमल थी।

मैंने हैरानी से कहा "तुम मजदूरी करोगी ?"

"क्यों, मना है क्या ?" उस ने होंठों से उत्तर दिया।

"नहीं, मेरा मतलब है—कर सकोगी ? टोकरी उठा सकोगी ?"

"आजमा कर देख लीजिए। मेरे छोटे-से शरीर पर न जाइए, मेरे अन्दर बिजली भरी है।"

और वह मुस्कराई बहुत ही मधुर मुसकान।

× × ×

उसका कहना गलत नही था। वास्तव मे उसके अन्दर बिजली भरी थी। अच्छे से अच्छा मर्द भी काम मे उसकी बराबरी नही कर सकता था। प्रातः आठ से लेकर शाम चार बजे तक, सिर पर रेत अथवा बजरी की टोकरी उठाये, वह फिरकी की तरह बजरी मिलाने वाली मशीन और रेत और बजरी के ढेरो के मध्य चक्कर काटती रहती। सिवा आधा घंटा लंच के, एक क्षण के लिए आराम न करती। आठ मास तक उसने मेरे पास काम किया। इन आठ महीनो मे मैंने उसे एक दिन भी देर से आते या पहले जाते नही देखा।

लेकिन इससे भी बड़ी विशेषता उसका मधुर स्वभाव था। उसकी जबान बहुत मीठी थी और वह हर समय मुस्कुराती रहती थी। सम्बन्ध जोड़ने मे तो उसे कमाल हासिल था। कुछ ही दिनो के भीतर मशीन पर काम करने वाले हर आदमी के साथ उसने कोई न कोई सम्बन्ध जोड़ लिया था।

पर यह कहानी मैं केवल उसके काम अथवा मधुर स्वभाव को बताने के लिए नही लिख रहा हू, कुछ और बताने के लिए लिख रहा हूं। एक दिन वह मेरे पास आयी और मुस्कुराते हुए बोली—'वीर जी, मेरा एक काम कर देंगे ?"

"बोलो ! करने योग्य हुआ, तो अवश्य करूंगा।'

"यह बेच कर पैसे ला दीजिए। मुझे कुछ पता नही है। लोग ठग लेते हैं।" उसने मंगलसूत्र मेरे हाथ में देते हुए कहा।

एक और दिन प्रातः छः बजे किसी काम से मैं अपने एस डी ओ

साहब के घर गया और उसे वहां देख हैरान रह गया। वह फर्श साफ कर रही थी।

"अरी मन्दा, तू यहां !" मैंने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

"जी, वीर जी, सुबह-शाम तीन चार घरों में मैं चौका-बर्तन कर देती हूं।" उसने उत्तर दिया और मुझे आश्चर्यचकित छोड़ नल की ओर चल दी।

लेकिन दोनों बार से अधिक हैरानी मुझे एक बार और हुई। डैम में दो शिफ्टें लगती थी, सुबह आठ बजे से शाम चार बजे तक और शाम चार बजे से रात बारह बजे तक। एक दिन शाम के चार बजे, पहली शिफ्ट की समाप्ति और दूसरी के शुरू होने के समय, वह मेरे पास आयी और बहुत ही मधुर स्वर में बोली, "वीर जी, मुझे शाम को काम पर लगा लीजिए !"

"क्या कहा ?" मैंने ऐसे स्वर में पूछा, मानो उसकी बात मेरी समझ में न आयी हो।

"मुझे शाम की शिफ्ट में भी काम पर लगा लीजिए !" उसने दोहराया।

"क्या मतलब ! तुम डबल शिफ्ट काम करोगी?" हैरानी से मेरी आखें सिकुड़ गयी।

'हां वीर जी, पैसों की मुझे बहुत जरूरत है और चौका बर्तन करने से कुछ मिलता नहीं।"

"नहीं-नहीं। मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता।" मैंने उत्तर दिया।

"लगा लीजिए वीर जी, जरूर लगा लीजिए ! आपकी बहुत कृपा होगी।" वह याचना की प्रतिमूर्ति बन गयी थी।

'बिल्कुल नहीं। मैं अपने सिर हत्या मोल नहीं ले सकता।"

'लगा लीजिए वीर जी ! मुझे कुछ नहीं होगा। मेरा शरीर बहुत सख्त है। फिर पैसों की आवश्यकता मुझे अपनी जान से भी ज्यादा है। आप एक बार मेरी कहानी सुन लीजिए, फिर ।"

× × ×

और उसकी कहानी ओफ ! भयानक सकटमय था उसका वर्तमान। आश्चर्य था, इतनी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी वह कैसे हरदम मुस्कराती रहती थी ! वह पास के गांव की एक विधवा ब्राह्मणी की लडकी थी। कोई तीन वर्ष पहले उनके घर एक युवक किरायेदार बन कर आया था। युवक अच्छा पढ़ा लिखा और शरीफ था। डैम पर वह कोई अस्थायी नौकरी करता था। दुनिया में उसका अपना कहने को कोई नहीं था। दोनों एक-दूसरे से प्रेम करने लगे। पता लगने पर बुढ़िया बहुत चीखी-चिल्लायी। पर जब दोनों अपने फैसले पर अटल रहे, तो गांव वालों और रिश्तेदारों की परवाह न करते हुए, उसने दोनों की शादी कर दी।

तीनो सुख से रहने लगे। पर उनका सुख विधाता से नहीं देखा गया। विवाह हुए साल भर भी नही हुआ था कि लड़का बीमार पड़ गया। छ: मास से टी बी स ग्रस्त वह अस्पताल म पडा था। वेतन मिलना बन्द हो गया था। घर मे सिवा चन्द बतनों के कुछ नही बचा था। पढ़ी लिखी भी पर्याप्त नहीं थी कि कही अच्छी नौकरी मिल जाती। सहायता करने वाला, यहां तक कि झूठी सहानुभूति तक दिखाने वाला वहाँ कोई नही था। उलटे, लोग मजाक उड़ाते बुरे कम (अर्थात प्रेम विवाह) करने का फल मिल रहा है।

मैंने उसे डबल शिफ्ट काम की अनुमति दे दी। मेरा विचार था, वह कुछ दिन काम करके छोड देगी। पर आश्चर्य! रात की शिफ्ट में भी वह उसी उत्साह और सहजता से काम करने लगी, जिस तरह दिन की शिफ्ट मे करती थी। हा, दूसरी शिफ्ट मे उसकी चाल कुछ सुस्त पड जाती थी। खाना बनाना, खाना और दूसरे आवश्यक काम वह शेप आठ घटा मे कैसे पूरे करती होगी, मैं सोचता और मेरा दिल उसके प्रति गहरी सहानुभूति से भर उठता।

एक दिन मैंने उससे कहा, "नन्दा, तू मुझे भाई समझती है न?"

'जी, वीर जी। सगा भाई होता, तो वह भी क्या मेरी इतनी सहायता करता?"

"तो फिर मेरी एक बात मानेगी?"

'जरूर मानूगी, यदि मानने योग्य हुई।"

"तू रात की शिफ्ट में काम करना छोड दे। जितने पसो की तुझे जरूरत हो, मैं दूगा। जब तेरे पति अच्छे हा जायें, तो लौटा देना।'

नन्दा का चेहरा गुलाबी हो उठा। लम्बी सुन्दर आखो के कोना मे सफेद मोती चमक उठे। कुछ क्षणों तक वह खामोश खडी रही—नजरें झुकाय। लग रहा था, वह अपनी भावनाओ पर काबू पाने का प्रयत्न कर रही है। फिर बहुत ही धीमे स्वर मे बोली 'नही वीर जी, मैं ऐसा नही कर सकती।"

'क्यो, क्या हर्ज है?"

"मैंने कसम खायी है वीर जी, कभी किसी का एहसान नही उठाऊगी। नाराज न हो जाना, वीर जी! आप नाराज हो गये, तो हमारा क्या बनेगा?" एक क्षण चुप रह कर वह बहुत ही मार्मिक स्वर मे बोली, "एक बात हो गयी थी। हमारे गाव मे एक दुकानदार था। उम्र होगी कोई साठ साल। उनकी बीमारी के शुरू के दिनो मे उसने हमारी बहुत सहायता की थी। मुझे वह बेटी कहा करता था। कहा करता था— बेटी, जरूरत पड़ने पर एकदम मेरे पास चली आया करो, झिझका न करो। मैं भी उसकी बहुत इज्जत करती थी और उसे चाचा जी कह कर बुलाती थी। मुझे क्या पता था, उसके दिल मे खोट है। एक दिन शाम को, जबकि मैं कोई चीज उधार लेने दुकान पर गयी

थी और वहां सिवा मेरे और उसके कोई नही था, उसने अचानक मेरा हाथ पकड लिया। मेरे तन बदन मे आग हो सी लग गयी, वीर जी। मेरी वह सारी रात रोते बीती। रोते और सोचते। क्या हुआ यह ? क्यों हुआ ? कैसे हुआ उसे इतना साहस ? क्या मेरा भी इसमे कुछ दोष है ? सुबह होने तक मैं इस निर्णय पर पहुच चुकी थी कि भविष्य मे कभी किसी का एहसान नही उठाऊंगी, चाहे कोई भी क्यो न हो ! लोग चाहे कुछ भी कहे, कल स डैम पर मजदूरी करने जाने लगूगी ! इज्जत बेचने से परिश्रम बेचना अच्छा है।"

× × ×

गर्मियाँ आ गयी। अत्यधिक परिश्रम का प्रभाव अब उसके शरीर पर साफ दिखायी देने लगा था। रेशम सी नम और बर्फ सी सफेद त्वचा काली और खुरदरी पड गयी थी। शरीर हर समय थका थका रहता। गालो की हड्डिया उभर आयी थी और आखें अन्दर को धस गयी थी। उसे देख मुझे रोना आता, पर मैं कर ही क्या सकता था !

वह साल का सर्वाधिक गर्म दिन था। बिजली के पखो के नीचे बैठे शरीर तक पिघले जा रहे थे। मैंने उसे रात की शिफ्ट में काम करने से मना किया, पर वह नही मानी।

शाम के पाच बज रहे थे। मैं दफ्तर मे बैठा था। अचानक डैम मे भगदड मच गयी। चारो ओर से मजदूर भाग भाग कर मेरी मशीन की ओर आने लगे। कोई दुर्घटना हो गयी शायद—मैंने सोचा और तेजी से उधर भागा। पास जा कर देखा, मजदूरों की विशाल भीड मे घिरी नन्दा पृथ्वी पर पडी थी निश्चेष्ट पसीने से तर बतर। हाथ लगा कर देखा, शरीर बर्फ जैसा ठडा, नब्ज का कही नाम नही। फौरन मैंने एक आदमी डाक्टर को बुलाने को भेजा। पर डाक्टर के आने से पहले ही उसकी बेहोशी दूर हो चुकी थी।

× × ×

डाक्टर के आदेशानुसार उसे रिक्शे मे बैठा कर घर भेज दिया गया। मेरा दिल दु ख और चिन्ता के अथाह गर्त मे डूब रहा था। क्या होगा नन्दा का अब ? क्या बनेगा उसके पति और मा का ?

दूसरे दिन सुबह मैं सोच ही रहा था कि शाम को उसे देखने उसके घर जाऊंगा कि अचानक उसे सामने देख हैरान रह गया। वह हमेशा की तरह मुस्करा रही थी। पर आज उसकी मुस्कान फीकी थी—उदास उदास।

"अरी नन्दा, तू यहां ! मरना है क्या ? तुझे तो डाक्टर ने दो सप्ताह तक पूर्ण विश्राम करने को कहा है।" मैंने हैरानी से कहा।

नही, वीर जी। मुझे कुछ नहीं हुआ है। डाक्टर वैसे ही कहते हैं। मैंने

हकीम जी को दिखाया था। वे कहते हैं कुछ नहीं है, गर्मी के कारण चक्कर आ गया। फिर वीर जी, मैं अभी विश्राम कर भी कैसे सकती हूँ। पढ़िए तो जरा इसे।"

और उसने पत्र निकाल कर मेरे हाथ में पकड़ा दिया और मुस्कराई—वही फीकी उदास मुस्कान।

पत्र उसके पति का था—यह सूचना देते हुए कि उसका स्वास्थ्य पहले से अच्छा है और यह कि उसके द्वारा भेजे पैसे समाप्त हो गये हैं। उससे जल्द ही कुछ और पैसे भेजने का आग्रह किया गया था।

पत्र पढ़ कर मेरे मुह से एक लम्बी सद आह निकल गयी। पत्र मैंने लौटा दिया और उसके झुके, याचना की साक्षात मूर्ति बने, चेहरे की ओर देखने लगा। अधेड़ औरत का बीमार, कुछ-कुछ कालिमा लिये हल्दी सा पीला चेहरा! यकायक मेरी आखो के सामने छः माह पहले देखा एक चेहरा घूम गया। फूल सा सुन्दर चेहरा! मैं अजीब दुविधा मे फस गया। अनुमति देना उसे साक्षात मौत के मुह मे झाकना था। पर अनुमति न देना?

मैं कुछ भी फैसला नहीं कर पा रहा था कि अचानक उसने एक ओर पड़ी टोकरी उठायी और तेज कदम रखती बजरी के ढेर की ओर चल दी।

मैं अवाक् एकटक उसे जाते देखता रहा।

जीत-हार

जैलदार हाकिम सिंह और चौधरी रत्न सिंह मे साप और नेवले का वैर था। दोनो के जीवन का एक ही ध्येय था—दूसरे को नीचा दिखाना, उसे बरबाद कर देना।

दोनो गाव के जाने माने व्यक्ति थे। जैलदारी प्रथा समाप्त हो जाने के कारण हाकिम सिंह यद्यपि अब जैलदार नही रह गये थे और उनकी आर्थिक अवस्था भी कुछ पतली हो थी, तो भी अफसरो के साथ उनका मेलजोल अभी बना हुआ था। उधर चौधरी रत्न सिंह का काम इस समय हुल्लारे पर था। हजार रुपये की घोडी, एक गाय, दो भैंसें, चार बैल हमेशा तबेले मे बधे रहते। अत उनका यह सोचना स्वाभाविक था कि गाव के लोग उन्हे अपना नेता मानें। पर जैलदार यह स्थान छोडने के लिए तैयार न थे। दोनो की शत्रुता का कारण यही था—जबकि शत्रुता प्रकट हुई दूसरी तरह।

झगडा शीशम के एक वृक्ष से आरम्भ हुआ। जैलदार और चौधरी के खेत साथ साथ थे और वह वृक्ष मेड पर था। जैलदार उसे अपना समझते थे और चौधरी अपना। जैलदार को बैठक की छत के लिए शहतीरो की जरूरत पडी तो उन्होंने वृक्ष काटने के लिए आदमी लगा दिये। चौधरी ने उन्हें रोक दिया। जैलदार को यह अपना अपमान लगा। चार पाच आदमी साथ लेकर वह सामने खडे होकर वृक्ष कटवाने पहुचे। चौधरी और उनके लडके पहले से ही तैयार बैठे थे। खूब लट्ठ बजे। दोनो ओर के कई आदमी जख्मी हुए। इसके उपरान्त थाना, कचहरी, पटवारी, वकील। बर्षों मुकदमा चला। अन्त म जीत चौधरी के पैसो की हुई। अदालत ने फैसला उनके हक मे दे दिया। जैलदार खून का घूट पीकर रह गये।

अपनी हार जैलदार के दिल मे काटे की तरह खटकती रही। वह प्रतीक्षा मे थे कि कब समय मिले और कब बदला लें।

और समय उन्हें शीघ्र ही मिल भी गया।

चौधरी के दो लडके थे—देशराज और बख्तावर सिंह। देशराज शरीफ आदमी था, लेकिन बख्तावर सिंह उद्दण्ड स्वभाव का। शराब के नशे मे धुत होकर उसने एक दिन एक हरिजन को पीट दिया। पीटा भी इतना कि उसकी टाग टूट गयी। गावो म ऐसी घटनाए होती रहती थी और प्राय दबा दी जाती थी। यह भी शायद दब जाती यदि जैलदार हरिजनों के पीछे न आ खडे होते।

लोगो का तो कहना है कि सब भी जैलदार ने अपनी जेब से किया। हरिजन थाने गये। बख्तावर सिंह का चालान हो गया। चौधरी ने रुपया पानी की तरह बहाया, पर वह लड़के को बचा न सके। बख्तावर सिंह को एक साल की सख्त कैद की सजा हो गयी। चौधरी के घर मातम छा गया।

× × ×

जैलदार हाकिम सिंह के एक ही लड़का था। नाम था रमेश। रमेश देखने में जितना सुंदर था, पढने में उससे कम तेज न था। चौथी में उसे छात्रवृत्ति मिली थी, इस समय छठी में पढ रहा था।

वह गाव से चार मिल दूर सतोपगढ पढने जाता था। मार्ग में स्वा नदी पड़ती थी।

यह नदी बहुत भयानक है। साल के नौ महीने तो इसमें नाम मात्र का पानी रहता है पर वर्षा ऋतु में जबरदस्त बाढ आती है। बाढ आने पर इसकी धारा इतनी तेज हो जाती है और इसमें इतनी ऊची लहरें उठती हैं कि नाव इत्यादि कोई चीज इसमें चल नही पाती। कई दिनों तक आना जाना रुका रहता है।

खतरे से बचने के लिए जैलदार बरसात के तीन महीनों के लिए रमेश के ठहरने का प्रबंध सतोपगढ में ही कर देते थे। पर उस साल बरसात अभी आरम्भ नही हुई थी।

उस दिन प्रात से ही आकाश में घने काले बादल छाये हुए थे। लगता था, अभी वर्षा होगी। रमेश के सभी साथियों ने स्कूल जाने से इन्कार कर दिया। लेकिन पढने में तेज बच्चे का मन स्कूल गये बिना कहा लगता है! मा बाप ने बहुतेरा रोका वह नही माना। अकेले ही स्कूल चल दिया।

वह अभी स्कूल पहुचा ही था कि मूसलाधार वर्षा आरम्भ हो गयी। वह घबरा उठा। उसने स्कूल से छुट्टी ले ली और वर्षा में भीगता हुआ घर की ओर भागा।

वाधु गाव से कोई तीन मील ऊपर से स्वा नदी दो धाराओं में बट गयी है। एक धारा सतोपगढ के साथ साथ बहती है और दूसरी डेढ मील दूर गुरु पलाह के बाग के नीचे नीचे। पहली धारा तो रमेश ने कुशलतापूर्वक पार कर ली, लेकिन वर्षा में भीगता हाफता हाफता जब तक वह दूसरी धारा तक पहुचा, तब तक नदी में बाढ आ चुकी थी। वह बीच में घिर गया था।

× × ×

जैलदार हाकिम सिंह किसी दूसरे गाव में थे। वर्षा आरम्भ हुई तो वहां से ही वह सतोपगढ की ओर भाग पड़े। नदी किनारे पहुच कर देखा, नदी ठाठें मार रही है और दूर दूसरे किनारे पर रमेश वर्षा में भीगता सहमा-सा

खड़ा है। उनकी छाती मे जैसे किसी ने घूसा मार दिया हो। बडी कठिनाई से उन्होंने अपने आप को सभाला और चीख चीख कर रमेश को पीछे हट जाने का आदेश देने लगे। काफी पीछे हट कर जब रमेश ऊचे स्थान पर बैठ गया तब उन्हें कुछ शान्ति मिली। जैलदार भी वर्षा मे भीगते हुए इस किनारे पर बैठ गये और भगवान से प्रार्थना करने लगे कि वर्षा शीघ्र बद हो, पानी जल्दी उतरे।

लेकिन उनकी प्रार्थना बेकार गयी। सुबह से शाम हो गयी, वर्षा नहीं रुकी। नदी मे पानी बढता ही जा रहा था। दोनो धाराओ के मध्य अब न कुछ सा स्थान रह गया था। बेटा मौत के शिकजे मे फसा बाप से केवल दो फरलाग दूर बैठा था। और बाप उसकी कुछ भी सहायता नहीं कर पा रहा था।

जैलदार के दिल पर छुरिया चल रही थी। काश उनके पर होते और वे उड कर बेटे के पास पहुच जाते और उसे बचा लेते! कोई उनका सब कुछ ले ले यहा तक कि जान भी, पर रमेश को बचा ले! लेकिन यह हो कैसे सकता था? किस मे इतनी हिम्मत थी कि दस दस फीट ऊची उठ रही इन विकराल लहरो का मुकाबला करे! सारे इलाके मे केवल दो ही ऐसे तैराक थे, जो इन महाशक्तिशाली लहरो से टक्कर ले सकते थे। एक सतोपगढ का पूरन हलवान (वह नदी के दूसरी ओर था) और दूसरे थे चौधरी रत्न सिंह। पिछले साल साथ वाले गाव के दो आदमी इसी तरह फस गये थे, तब चौधरी ने ही उन्हें बचाया था।

लेकिन कौन सा मुह लेकर जैलदार चौधरी के पास जायें! जायें भी तो क्या चौधरी न जायेंगे! अभी तो उनका बेटा जेल से बाहर भी नहीं आया।

आज पहली बार जैलदार को लगा कि उन्होने चौधरी के साथ अन्याय किया है। औलाद का दु ख क्या होता है, यह भी आज पहली बार उन्होने अनुभव किया। उनकी आखों के सामने चौधरी का पीला, मुरझाया-सा चेहरा घूम गया जो उन्होंने उस दिन देखा था जिस दिन चौधरी के बेटे को जेल का हुक्म सुनाया गया था।

× × ×

स्थिति अत्यन्त गम्भीर हो उठी थी। सूर्य अस्त हो रहा था। और, नदी मे पानी बढता ही जा रहा था। दोनो धाराए अब प्राय मिल-सी गयी थी। गुरुपलाह से लेकर सतोपगढ के कुएँ तक पानी की विशाल चादर तन गयी थी।

जहा रमेश बैठा था, अब वहा पानी पहुचने लगा था शायद, क्योकि वह अपने स्थान से उठ कर आग से घिरे जगली जानवर की तरह घबराया इधर-उधर कूद रहा था।

जलंधार पागल हो उठे। अब उन्हें पक्का यकीन हो गया कि रमेश बच नहीं सकेगा। यदि बहने से किसी तरह बच भी गया तो रात को अकेले में डर कर, सांप के काटने से अथवा वर्षा में निरन्तर भीगते रहने के कारण ठिठुर कर अवश्य मर जायगा।

वह अपने स्थान से उठे और इससे पहले कि कोई कुछ समझे, उन्होंने नदी में छलांग लगा दी। तीन चार आदमियों ने भाग कर उन्हें पकड़ा और बड़ी कठिनाई से घसीट कर पानी से बाहर लाये। नीम बेहोशी की अवस्था में थे वह।

× × ×

'वह देखो लाश—वह रही वह!' अचानक कोई चीखा और सब की नजरें एकदम उधर उठ गयीं। बोलने वाला संकेत कर रहा था—"दूर ऊपर की ओर एक कद्दू-सा लहरों पर उछलता चला आ रहा है।"

'अरे नहीं यह लाश नहीं है, यह तो कोई तैर रहा है। देख नहीं रहे हो कि दूसरे किनारे की ओर बढ़ा जा रहा है!'' किसी दूसरे ने कहा।

बात सही थी। कोई तैरता हुआ दूसरे किनारे की ओर जा रहा था। नदी तट पर विस्मय की लहरें दौड़ गयीं। कौन है वह बहादुर आदमी, जो इस समय इतनी चढ़ी नदी को पार करने की कोशिश कर रहा है।' सब उठ खड़े हुए। जलंधार भी एकटक उधर देखने लगे। लहरों के साथ ऊपर उठता और नीचे गिरता काला सा वह कद्दू, तिरछे तिरछे, तेजी से आगे बढ़ता चला जा रहा था।

लहरों का पार कर वह साफ पानी में आ पहुंचा। अब काली गोल चीज के नीचे कोई चपटी चीज भी दिखायी दे रही थी। वह आदमी शायद पैरों पर खड़ा हो गया था। पानी उसकी बगलों तक था।

अरे यह क्या! वह तो उधर ही जा रहा है जिधर रमेश खड़ा है! तट पर खड़े लोग और भी ध्यान से उसकी ओर देखने लगे। धीरे धीरे आगे बढ़ रहा था वह। जैसे-जैसे आगे बढ़ता जाता था वैसे वैसे पानी कम होता जाता था। बगल कमर घुटने! लो वह रमेश के पास जा पहुंचा उसे उठा कर कंधे पर रखा और फिर वापिस पानी में घुस गया।

तट पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। सब प्रशंसा भरी नजरों से उस आदमी की ओर देख रहे थे। कौन है यह फरिश्ता! पर दूरी काफी थी और कुछ-कुछ अंधेरा भी हो रहा था इसलिए पहचानना कठिन था।

चलते चलते वह आदमी लहरों के पास आ पहुंचा और तैरने लगा। अब तट पर खड़े लोगों को केवल दो सिर दिखायी दे रहे थे—लहरों पर झूला सा झूलते हुए।

अतीत

वह—जिसकी पिछली दीवार अभी तक साबुत खडी है—जिसके मध्य मे शीशे का टुकडा चमक रहा है—फीरोज खा का मकान था। फीरोज खा अधेड आयु का मामूली-सा मोटापा लिए, फौजी पेंशनर था। अपने और आस पास के गावो मे 'मुल्ला' नाम से प्रसिद्ध। एक लडकी थी, जिसकी शादी हो चुकी थी। अत जीवन मे केवल दो ही शुगल रह गये थे। लाला मिलखी राम की दुकान पर जा कर छिकडी खेलना और कुरानशरीफ पढ़ना।

फीरोज खा के मकान के साथ रसा खा का मकान था। लम्बा, छटी सफेद दाढी वाला, बूढा आदमी। बहुत शरीफ। बहुत प्यारा। घाडे पर सवारिया या बोझा ढाने का काम करता था।

रसा खा के मकान के सामने बरकत अली और अनायत खा दो भाई रहते थे। बरकत अली धक्के का मरीज था। अनायत खा खेती करता था।

रसा खा के मकान की बायी ओर निक्का खा ऊट वाला रहता था। जरा आगे जा कर, ऊपर की ओर, साहबदीन का मकान था। साहबदीन पठान था। लम्बा, खूब गोरा मजबूत शरीर। लाल आखें। नीचे को झुकी हुई लम्बी मूछें। घर मे सख्त परदा रखता था। उसकी बीवी थी भी बहुत सुन्दर। वैसी सुन्दर स्त्री मैंने जिन्दगी मे और नही देखी।

मकानो के पश्चिम मे काफी बडा अहाता था। अहाते के चारो ओर झोपडिया थी। झोपडियो और अहाते मे पशु बधते थे। इसी अहाते म नूरा मिली थी मुझे।

×　　　　　　　　×　　　　　　　　×

तब मैं बारह साल का था। प्राय बीमार रहता था। पडित जी ने ग्रहो को शा■ करने के लिए साल भर हर मगलवार के दिन इक्कीस गायो को अनाज के पेडे खिलाने को कहा था।

गाव मे तब दो सौ के करीब घर थे। उन मे डेढ सौ घर ब्राह्मणो, राज पूतो और बनियो के थे। हैरानी की बात यह है कि उन डेढ सौ घरो म मुश्किल से पाच गायें थी, जबकि पाँच मुस्लिम घरानो मे बीस से भी अधिक।

गायो को पेडे खिलाने आया था मैं यहा।

गायों के लम्बे सींगों से मुझे डर लगता था, अत मैं झिझक रहा था कि

लगभग दस वर्ष की एक गुड़िया सी लड़की ने आ कर कहा, "लाओ, वीर जी मैं सिला दू।"

"नहीं। मां ने अपने हाथ से सिलाने को कहा है।"

"तो मैं आगे खड़ी हो जाती हू, तुम सिला देना।"

"तुम्हें डर नहीं लगता ?" मैंने पूछा था। गुड़िया ने सिर हिला दिया था—नहीं। पेड़े सिला चुकने के बाद मैंने पूछा था, "तुम रला खा की लड़की हो न ?"

सिर फिर हिल उठा था—हां।

"मैं हर मगलवार को आया करूगा और हम इसी तरह पेड़े सिलाया करेंगे।"

नन्हा सुन्दर सिर फिर हिल उठा था। अधिकतर आंखो और सिर के इशारे से ही बातें करना नूरा का स्वभाव था। सिर का हिलाना उसका था भी अत्यन्त मोहक।

× × ×

वर्षा ऋतु आती। गांव के चारों ओर, पहाड़ियो पर, दूर-दूर तक घास उग आती। हवा के झोकों से घास हिलती तो लगता जैसे हरित सागर लहरा रहा है। लाल मखमल के रंग की बीर बहूटिया से धरती भर उठती। तालाब, नदी-नाले पानी से भर उठते और बच्चे उनमें तैरते।

बरसात में स्कूल बन्द रहते थे। अत उन दिनों मेरे जिम्मे जगल में भैंस चराने का काम रहता। उस साल मैं और नूरा इकट्ठे पशु चराने जाते रहे।

× × ×

दिन गुजरते गये। नूरा और मैं निकट से निकटतर आते गये। हमारे सम्बन्ध बिलकुल सगे भाई-बहिन जैसे बन गये थे। नूरा दीवाली, दशहरा, होली मेरे साथ मनाती और मैं ईद और मुहर्रम नूरा के साथ।

हमारे घर वाले भी एक दूसरे के बहुत नजदीक आ गये थे। रला खा नूरा के निकाह के विषय में पिता जी से सलाह करते और मां मेरी पढ़ाई के विषय में नूरा के साथ।

"वीर जी बी ए में फस्ट आयेंगे, तो मैं पीर जी के थान पर शीरनी चढ़ाऊगी।" नूरा कहती और उसका चेहरा अपार हर्ष और स्नेह के भावो से दमक उठता।

× × ×

अंग्रेज सरकार ने साम्प्रदायिकता की जो चिनगारियाँ फेंकी थी, अनुकूल हवा पाकर वे भड़क उठीं। सारा देश धू धू करके जल उठा। हजारो वर्षों में अर्जित मानवीय गुणो को तिलांजलि दे कर इसान हैवान बन गया। हैवान से

भी बदतर। और उसने लूटमार, कत्ल और बलात्कार के ऐसे ऐसे घृणास्पद काय किये कि देख कर शैतान भी शरमा जाता। आश्चय की बात यह थी कि यह सब कुछ ईश्वर और अल्ला के नाम पर किया गया और नेतृत्व करने वाले थे कट्टर मजहबी लोग!

इलाके में खिचाव बढने पर गाव के युवक 'ललारी मुहल्ले' की रक्षा के लिए दिन-रात पहरा देने लगे थे। पर कुछ दिनों बाद जब हालात बहुत ज्यादा खराब हो गये और आसपास के गावो से धमकी भरे पत्र आने लगे कि हम भी अपने यहा के अल्पसख्यको के साथ वैसा ही बरताव करें जैसा कि उन्होंने किया है अन्यथा वे सारा गाव जला देंगे—तो पचायत की बैठक हुई और निणय लिया गया कि उन लोगो को अपने घरो में छिपा लिया जाय और बात फैला दी जाय कि वे भाग गये हैं।

नूरा का परिवार हमारे घर ठहरा था। रला खा, नूरा और उसकी मा दिन रात कोठरी मे बद रहते। उनके चेहरो पर आतक, और मृत्यु जैसी घनी उदासी के भाव अकित रहते। मैं उन्हे प्रसन्न करने की बहुत कोशिश करता, पर कभी सफल नही हो पाता। उनके चेहरो पर यदि कभी मुस्कराहट आती भी, तो ऐसी कि लगता बस वे मुस्करा नही रो रहे हो।

मेरा दिल टूक टूक हो जाता। मजहब पर से मेरी आस्था उठ गयी। ये कैसे मजहब हैं, जो जीवन के बजाय मृत्यु बाट रहे हैं, जो इसान को इसान पर भेडियो की तरह झपटने के लिए उकसा रहे हैं!—मैं सोचता। एक और बात मेरे नन्हे दिमाग मे नही समाती थी। एक मजहब के मानने वाला ने दूसरे मजहब के मानने वालो पर कही ज्यादती की, तो इस बात में क्या तुक है कि उसका बदला हजारो मील दूर ऐसे लोगो को मार काट कर लिया जाय [जिनका कि उस घटना से कतई कोई सम्बन्ध नही। और फिर यह एकाएक ही क्या गया! पुश्तो से रह रहे लोगो के लिए अचानक अपना देश बेगाना कैसे बन गया! और कुछ लोगो के अनुसार उन्हे यहा से निकालना क्या आवश्यक हो गया?

× × ×

बहुत कुछ जलाने और फूक चुकने के बाद साम्प्रदायिकता की आग कुछ ठडी पडी। सारे पजाब की तो नही कह सकता इलाके भर मे हमारा गाव ही ऐसा बचा था, जहा कोई नुकसान नही हुआ था—न आर्थिक, न शारीरिक। पर इस राष्ट्रीय विपत्ति मे हमारा गाव बिल्कुल अछूता निकल गया हो, यह बात नही थी। साहबदीन गाव मे खतरा जान किसी दूसरी जगह चले गये थ। यहा से उनका कोई पता नहीं चला था।

× × ×

हल्का जाड़ा पड़ने लगा था। हरे-भरे खेतों से हो कर प्रात स्कूल जाना कितना अच्छा लगता! ठण्डी हवा! हरे गेहूं के पौधों पर मोतियों की तरह चमक रही शबनम की बूंदें! जी चाहता उड़ चलें।

स्कूल के लिए तैयार हो ही रहा था कि अचानक खबर लगी कि ललारियों को पाकिस्तान ले जाने के लिए मिलिट्री आयी है। दिल धक से रह गया। बस्ता फेंक मैं उसी क्षण उधर को भाग चला।

वहां पहुंचा, तो काफी लोग जमा हो चुके थे। ड्योढ़ी के दरवाजे पर एक बलोच सिपाही हाथ में राइफल पकड़े खड़ा था। कुछ दूर गांव के सरपंच और पिता जी एक फौजी अफसर के साथ खड़े बातों में मशगूल थे। अफसर कह रहा था, 'यहां न ही किसी के लिखने पर हम आये हैं। हम किसी को जबरदस्ती नहीं ले जायेंगे। जो यहां रहना चाहे रह सकता है। आप पूछ लीजिए!"

पिता जी और सरपंच साहब के साथ मैं भी अन्दर चला गया था। मैं सीधा रला खां के घर गया था। नूरा कोने में बैठी रो रही थी। रला खां और उनकी पत्नी सामान बांधने में व्यस्त थे। उनके चेहरों पर उदासी के गहरे भाव थे।

'अब्बा जी, आप यहां रह सकते हैं। कप्तान साहब ने कहा है कि वे किसी को जबदस्ती नहीं ले जायेंगे। पिता जी और सरपंच साहब आपको पूछने आ रहे हैं।' मैंने प्रसन्न होते हुए कहा।

रला खां कुछ देर सायत खामोश बैठे रहे थे। फिर उनके मुंह से एक लम्बी सद आह निकल गयी थी।—"रहना तो चाहता हूं, बेटा! अपना वतन छोड़ने को किसका दिल चाहता है! लेकिन इस नूरा का क्या करूं? कहां करूंगा इसका निकाह? नजर आता है कहीं कोई लड़का?"

दिल में आया था कह दूं—मैं करूंगा नूरा से निकाह। पर उस समय के गांव के घोर रूढ़िवादी समाज में यह सोचना भी चरित्रहीनता समझा जाता। अत मैं चुप रह गया था। तब तक पिता जी और सरपंच साहब भी वहां आ गये थे। उनके चेहरे उतरे हुए थे। प्राय सभी ने वैसे उत्तर दिये थे।

× × ×

एक घंटा दिन रहता होगा जब वे ड्योढ़ी से बाहर निकले। धीरे-धीरे काफिला स्कूल वाले पीपल की ओर, जिसके नीचे ट्रक खड़े थे, चल दिया था। अत्यन्त करुण दृश्य था। बेटी की विदाई जैसा। जाने वाले रो रहे थे। पीछे रह जाने वाले भी रह थे। यहां तक कि कुछ सैनिकों की आंखें भी भर आयी थीं।

ट्रक पर बैठने से पहले नूरा मेरे पास आ खड़ी हुई थी।

"ध्यान से जाना !" मैंने कहा था।

उसने सिर हिला दिया था।

"पहुचते ही खबर भेजना!"

उसका सिर फिर हिल उठा था।

"निकाह की खबर जरूर भेजना ! जैसे भी होगा, मैं अवश्य पहुचूगा।"

वह शरमा गयी थी।—"वीरजी, नतीजे की खबर जरूर देना। मैंने पीरजी के थान पर शीरनी चढाने की मनौती मानी हुई है।" कुछ देर चुप रह कर उसने भर्रायी आवाज मे कहा था और फफक-फफक कर रो उठी थी। और थोडी देर बाद ट्रक हम सब के दिलो को रौंदते हुए चल दिये थे।

× × ×

दिन बीतते गये मैं प्रतीक्षा करता रहा, पर उसकी कोई खबर नही मिली।

वह बसन्त ऋतु की एक बेहद सर्द रात थी। हलकी वर्षा हो रही थी। लिहाफ ओढे चारपाई पर लेटा, मैं सोने का प्रयत्न कर रहा था। अचानक साथ वाले कमरे से पिता जी की आवाज उभरी थी—"सो गयी ?"

"नही तो।" माता जी ने उत्तर दिया था।

"लडका सो गया ?"

"हा। आज जल्दी सो गया। कह रहा था, तबीयत ठीक नही है।"

मेरे कान उधर लग गये—

'क्यो, क्या बात है ? क्यो पूछ रहे हो ?" माता जी ने पूछा था।

'लडके को न बताना !" पिताजी की आवाज फुसफुसाहट मे बदल गयी थी।—'रला का का खत आया है। नूरा पाकिस्तान नही पहुच सकी।'

खच ! मेरी छाती म जैसे छुरा घोप दिया गया हो। क्या हुआ नूरा को ? मेरी सम्पूर्ण चेतना कानो मे सिमट आयी थी।

हुआ क्या ?" माता जी फुसफसायी थी।

'साफ कुछ नही लिखा सुन्दर भी तो बहुत थी मरजानी।'

"पर उनके साथ तो पाकिस्तानी मिलिट्री थी !" माता जी ने कहा था।

"इससे क्या फर्क पडता है। हे दयामय, दया करो ! दया करो !' पिता जी की आवाज में अपार दु ख था।

मैं जैसे पत्थर हो गया था—जड ! निकाह की खबर जरूर भेजना। जैसे भी होगा, मैं अवश्य पहुचूगा। वीर जी, अपने नतीजे की खबर भेजना। पीरजी के थान पर मैंने शीरनी चढाने की मनौती मानी हुई है। किसका होगा निकाह अब ? कौन चढायेगा पीरजी के थान पर शीरनी ?

× × ×

उपहार

(टिप्पणी मेरे एक अमरीकी मित्र ने मुझे एक डायरी भेजी है। डायरी एक ऐसे सैनिक की है जो कई साल तक वियतनाम मे लडता रहा और अब पागल हो गया है। डायरी के साथ छोटा सा पत्र भी है, जिसमे लिखा है कि यह डायरी वह मुझे इसलिए भेज रहा है कि मैं और मेरे देश के दूसरे लोग जान सकें कि उसका महान देश अपने राष्ट्रपति के आदश से स्वतत्रता, जनतत्र और विश्व शाति की रक्षा के लिए उत्तरी और दक्षिणी वियतनाम मे कितने महान काय कर रहा है। डायरी मे प्राय दो सौ पन्ने हैं और सभी महान कारनामो से भरे पडे हैं। उनमे से अभी मैं पाठको की सेवा मे केवल एक पन्ना पेश कर रहा हू।—लेखक)

सारी तैयारिया रात को ही पूरी हो चुकी थी। सुबह रवाना होने से पहले रीति के अनुसार हमारे कमाडर ने एक अत्यत जोशीला भाषण दिया, जिसमे बताया गया कि वियतनाम मे स्वतत्रता, जनतत्र और विश्व शाति की रक्षा के लिए यहा के वासियो का शिकार करना कितना आवश्यक है! और कि जब तक यहा स्वतत्रता, जनतत्र और विश्व शान्ति की रक्षा का काम पूरा नही हो जाता महान अमरीका अपना कतव्य पूरा करना जारी रखेगा, भले ही यहा एक भी आदमी जीवित न रहे।

दिन निकलने से पहले ही हमने गाव को घेर लिया। हमने तीन टोलिया बनायी। एक टोली का काम घरो मे आग लगाना था, दूसरी टोली के जिम्मे आग से डर कर भागे लोगो को मारना अथवा पकड कर कमाडर के सामने पेश करने का काम था। तीसरी टोली कमाडर के सामने पक्ति बाघे खडी थी। शिकार का असली काम इनके जिम्मे था। मैं इसी टोली मे था।

सबसे पहले एक लगडा बूढा लाया गया। वह इतना दुबला-पतला और मरियल-सा था कि उसे घसीट कर लाया गया था। 'बोलो, वियतकांग मुर्दाबाद!' हमारे कमाडर ने आदेश दिया।

बूढे का मुर्दा चेहरा एकाएक जीवित हो उठा, मानो उसमें बिजली का करेंट लगा दिया गया हो। वह पूरी शक्ति से दहाडा— वियतकाग जिन्दाबाद!—यांकी मुर्दाबाद!

हमारे कानो म जैसे किसी ने दहकती हुई सलाखें घुसेड दी हो। कमांडर

तो मारे क्रोध के पागल हो ही उठा था। वह गरजा—"कमीने बूढे ! एक बार फिर से तो कह !"—और ज्योही बूढे ने दूसरी बार कहने के लिए मुह खोला कि उसने पास खडे सैनिक से राइफल छीन कर सगीन बूढे के मुह मे घुसेड दी और फिर नीचे को झटका दे कर बूढे को पेट तक फाड डाला।

इसके बाद एक तेरह चौदह साल की लडकी लायी गयी। उसे देख कर सब की बाछें खिल उठी और भेडियो की तरह उसकी ओर झपटे।

"अनुशासन ! अनुशासन !" कमाडर गरजा। "सभी को अवसर मिलेगा।"

और फिर सभी को अवसर मिला। छह आदमियो को झेलकर लडकी मर गयी।

इसके बाद दो ढाई सौ आदमियो, औरतो और बच्चो का एक हुजूम तीन भागो मे बाट दिया गया। आदमियो को खाइयो के किनारे खडा करके गोलियो से उडा दिया गया। बच्चो को सगीनो पर उछाल कर उनके नन्हे शरीरो के साथ पोलो खेली गयी। स्त्रियो के साथ वही बर्ताव किया गया, जो पहली स्त्री के साथ किया गया था।

इसके बाद एक और हुजूम लाया गया और उसे भी पहले की तरह ही ठिकाने लगा दिया गया।

अब काम प्राय समाप्त हो चुका था। सारा गाव एक बहुत बडे श्मशान मे बदल गया था। सब बेहद चिडचिडे और उदास हो रहे थे। या शायद मुझे ही ऐसा लग रहा था, क्योकि मैं स्वय बहुत उदास और चिडचिडा हो उठा था। इसका कारण शायद यह था कि इस दौरान जबकि सब ही युद्ध भूमि मे बढ चढ कर हाथ मार रहे थे और एक से एक बढ कर महान काय कर रहे थे, मैं बिलकुल बेकार खडा था—बिलकुल एक दर्शक की तरह। वीरता दिखाने में मैं अपने साथियो से पीछे रह गया हू, शायद यही बात मुझे उदास बना रही थी। तभी दो सैनिक एक स्त्री को घसीटते हुए वहा लाये। स्त्री का पेट इतना आगे को बढा हुआ था कि लग रहा था अभी फट जायगा। उसे देख कर मेरा दिल प्रसन्नता से नाच उठा। अनुशासन का ख्याल किये बिना मैंने उसे पकड लिया और चिल्लाया,—'देखो, इसे कोई हाथ मत लगाना। यह मेरा शिकार है। इसके साथ मैं एक ऐसा महान कारनामा करूगा जैसा कि तुम मे से किसी ने नहीं किया है बल्कि दुनिया म आज तक किसी ने कभी नही किया होगा।"

सब लोग मेरे गिर्द एकत्र हो गये और कमाडर भी हैरानी से देखने लगा।

'तुम जानते हो प्राचीन समय मे सम्राट लोग किस चीज के जूते पहनते थे ?' मैंने पूछा।

'नही जानते न !" उन्हे चुप देख कर मैं मुस्कराया। "मैं बताता हू।

मैंने एक पुस्तक मे पढा है। आग पर पानी गर्म होने रख दिया जाता था। जब पानी खोलने लगता था, तब एक भेड लायी जाती थी—एक ऐसी भेड, जिसके कुछ ही मिनटो मे बच्चा पैदा होने वाला होता था। उस जीवित भेड का पेट चीर कर बच्चा निकाल लिया जाता था। और इससे पहले कि बच्चे को बाहर की हवा लगे, उसे खौलते हुए पानी मे डुबो दिया जाता था। भेड के उस बच्चे का चमडा रेशम से भी नर्म होता था। प्राचीन समय के सम्राट उसी चमडे के जूते पहनते थे।"

लोग मेरी बात बहुत ध्यान से सुन रहे थे। अत मैंने कहना जारी रखा।

"इस स्त्री के साथ मैं ठीक ऐसा ही करूंगा। बच्चे का चमडा उतार कर बडे दिन के उपहार के रूप मे दुनिया मे जनतन्त्र और शान्ति के सबसे बडे सरक्षक अपने महान देश के राष्ट्रपति की सेवा मे भेजूंगा। मैं उनसे प्रार्थना करूंगा कि रेशम से भी नर्म चमडे के जूते पहन कर वह सयुक्त राष्ट्र सघ की जनरल असेम्बली मे विश्व को स्वतन्त्रता, जनतन्त्र और विश्व शान्ति का महान सदेश दें!—लेकिन यह क्या! तुम लोग मेरी ओर अब क्रोध और घृणा से क्यों देख रहे हो! बिलकुल उसी तरह, जिस तरह शिकार करने से पहले वियतनामी लोगों की ओर देखते थे।—नहीं-नहीं! मेरा शिकार न करना! मैं तो तुम्हारे ही देश का एक सैनिक हू—एक वीर सैनिक।"

●

जागो

"सुनो ! मैं आज बहुत उदास हू !"

मैं मदिर वाले चबूतरे पर बैठा हू। रात काफी गुजर चुकी है। चारो ओर गहरा सन्नाटा छा रहा है। अचानक आवाज सुनायी देती है।

मैं हैरानी से चारो ओर देखता हू। कही कोई नही है। फिर आवाज कहा से आयी ! आवाज फिर सुनायी देती है, "ऊपर देखो ! मैं, बिजली का बल्ब बोल रहा हू।"

"अरे ! तुमने कब से बोलना शुरू कर दिया ?"

"आज से ही, बल्कि अभी से बात यह है कि आज मैं बहुत दुखी हू इतना दुखी कि अपना दुख यदि किसी से कहूगा नही, तो फट जाऊगा।"

'फट नही, फ्यूज हो जाओगे।" मैंने कहा।

चलो, ऐसे ही सही। लेकिन कृपा करके मेरी कहानी सुन लो। बोलो, सुनोगे ?"

"जरूर सुनूगा। और काम ही क्या है मेरा !"

"तो फिर सुनो !"

"सुनाओ !"

थोडी देर तक खामोशी छायी रहती है, फिर आवाज आनी शुरू होती है "जैसा कि तुम देख रहे हो, मैं एक विशेष स्थान पर लगा हू। दूसरे बल्बो की तरह इधर उधर लटका हुआ नही हू। मेरे पावो के नीचे मदिर का चबूतरा है और मरे सामने सुदर पाक। अपने छोटे से जीवन म मैंने अच्छी बुरी, खुशी की, गमी की, सकडो घटनाए देखी हैं पर ऐसी ददनाक और दिल हिला देने वाली घटना पहले कभी नही देखी।

'कोई दो वष पहले की बात है। दिसम्बर की एक बेहद ठडी और अधेरी रात थी। साफ नीले आकाश मे चमक रहे सितारे ऐस लग रहे थे, मानो बहुत बडी नीली चादर पर किसी ने स्थान स्थान पर मोती टाक रखे हो। हवा धीमी थी पर बेहद सर्द। समय अभी आठ का ही हुआ था पर लग रहा था जसे आधी रात हो गयी हो। चारो ओर सन्नाटा था। मेरे सामने वाली सडक बिलकुल सुनसान थी।

'मैं बेहद अकेलापन और उदासी महसूस कर रहा था। अचानक अठारह उन्नीस साल का एक बहुत सुदर और भोला भाला लडका मेरे नीच आ

खडा हुआ। वह खादी का कुरता और पाजामा पहने था। सर्दी से बचने के लिए खादी की ही एक मोटी चादर उसने लपेट रखी थी। थोडी देर तक सर्दी से कापता वह चुपचाप मेरे नीचे खडा रहा, फिर नीचे झुककर उसने एक चटाई, जिसे वह अपने साथ ले आया था, चबूतरे पर बिछा दी और उस पर बैठ कर थैले मे से एक पुस्तक निकाल कर पढने लगा।

'मेरा दिल प्रसन्नता से नाच उठा। पहले भी बहुत स लोगों ने मेरी रोशनी से लाभ उठाया था। पिछली सारी गमियो मे जुआडियो की एक टोली मेरे नीचे बैठ कर जुआ खेलती रहती थी। अभी कुछ दिन पहले एक नवयुवक मेरी रोशनी मे अपनी महबूबा के प्रेम पत्र पढा करता था। पर यह पहला मौका था कि कोई मेरी रोशनी मे बैठ कर अच्छा काम कर रहा था। मैं खुशी से फूला नही समा रहा था।

"अब वह लडका रोज यहा आकर पढने लगा। आठ बजते ही वह मेरे नीचे आ बैठता और आधी रात तक बैठा पढता रहता। उसे पढते देख मैं प्रसन्न होता रहता। कई बार मेरा जी चाहता कि उससे बातें करू। लेकिन यह सोचकर कि उसका समय बरबाद होगा मैं चुप रहता। कभी-कभी सोलह-सत्रह साल की एक बहुत ही सुन्दर और सुकुमार लडकी भी यहा आया करती थी। वह नजरें झुकाये लडके के पास खामोश बठी रहती। एक शब्द तक मुह से न निकालती। हा बीच-बीच मे कभी वह अपनी बादाम जैसी बडी बडी आखें ऊपर उठा कर, जिनमे प्यार, पवित्रता और लज्जा का सागर ठाठें मारता दिखायी दता था, एक क्षण के लिए लडके की ओर देख अवश्य लेती थी। मुझे तो यही शक होने लगा था कि वह गूगी है। तभी एक दिन उसने अपन पतले, गुलाब की पखुडिया जसे नम व नाजुक होठ खोले और कासे का कटोरा जैसे धरती पर गिरकर बज उठा हो, एक पतली सुरीली आवाज वातावरण म गूजी।

' 'पिता जी बहुत जल्दी कर रहे हैं।'

'लडका पढते पढते रुक गया।

" तू उन्हें एक साल तक और रोक रख राज केवल एक साल तक। तब तक मैं बी ए कर लूगा।'

"और उसने प्यार और याचनाभरी नजरो से लडकी की ओर देखा।

× × ×

'एक दिन वह आया तो बहुत प्रसन्न था बहुत ही प्रसन्न। वह उसी स्थान पर जा बैठा, जहा रोज बैठा करता था। मैं जानता था, वह किसकी प्रतीक्षा कर रहा है। और थोडी देर बाद वह आ भी गयी। मन्द मन्द

मुस्कराती हुई, बायें हाथ मे मिठाई का दोना पकडे, वह तेजी से चली आ रही थी।

"'मुह खोलो !' पास आने पर मुस्कराते हुए उसने सुरीली आवाज मे कहा।

- "'नही खोलते।' लडके ने शोखी से उत्तर दिया।

"'क्यो नही खोलते ?' लडकी उसी स्वर में बोली।

"'पहले बताओ क्या है ?' लडके ने प्रश्न किया।

"'नही बताते।'

" तो फिर हम भी नही खोलते।'

"'नही, ऐसे नही कहते ! भगवान का प्रसाद लेने से इनकार नही करते !'

"लडकी ने प्यार भरी नजरो से लडके को देखते हुए समझाया।

"लडके का मुह खुल गया। लडकी ने अपनी पतली सुन्दर उगलियो से बर्फी का एक टुकडा उसके मुह मे डाल दिया। फिर एक टुकडा अपने मुह मे रखा। और अब दोनो चबूतरे पर आ बैठे और भविष्य के सपनो मे खो गये। लडके को कोई अच्छी सी नौकरी मिल जायगी। सुन्दर बगीचे से घिरा उनका छोटा सा घर होगा। वे तीनो उसमे रहेंगे (वे दोनो और लडके की मा)। कुछ समय बाद एक और आ जायगा।

"पर ये सपने सपने ही रहे। उस दिन के बाद मैंने लडके को कभी प्रसन्न नही देखा। दिन-ब दिन वह उदास होता गया। उसके कपडे भी अब गन्दे रहने लगे थे। दाढी और सिर के बाल बढे रहते। अब वह आ कर अपने स्थान पर उदास बैठ जाता और सिर हथेली पर रखे न जाने क्या सोचता हुआ घटा बैठा रहता। न जाने उसे क्या हो गया था। दिन ब दिन वह सूखता ही जा रहा था।

"परसो आया, तो मैं उसे देख कर डर गया। वह हड्डियो का ढाचा रह गया था। वह अपने स्थान पर उदास बैठ गया। थोडी देर बाद लडकी भी उसके पास आ बैठी। वह भी बहुत दुबली हो गयी थी। कुछ देर तक दोनो नजरें झुकाय उदास बैठे कुछ सोचते रहे, फिर लडका बोला,—'राज, तुम यह न समझना कि मैं नाराज हू। मैं तो खुश हू—बहुत खुश ! तुम्हारी शादी अच्छे घर म हो रही है। सुन्दर पढा लिखा, अच्छी जगह पर लगा हुआ पति तुम्हें मिल रहा है, इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है !—तुम प्रसन्न और सुखी रहो, बस यही मेरी इच्छा है !' और उसने एक लम्बी सर्द आह भरी।

"लडकी ने अपनी बडी-बडी उदास आखें ऊपर उठा कर पल भर को लडके की ओर देखा, बोली कुछ नही।—थोडी देर बाद किसी के घुट घुट कर सिसकने की आवाज आयी। वह रो रही थी।

"'रो क्यों रही हो ? पगली ! यह सब क्या हमारी इच्छा से हो रहा है ?' लडके ने भर्रायी आवाज मे कहा ।

"उत्तर में लडकी और भी जोर से रोने लगी । लडका भी रोने लगा । मुझे भी रोना आ गया । पता नही हम तीनों कितनी देर तक रोते रहे । फिर सबसे पहले लडकी ने रोना बद किया । पल्लू से आसू पोंछते हुए बोली,— 'माता जी का क्या हाल है अब ?'

" अच्छा नही है । आशा नहीं है कि यह सप्ताह निकल जाय ।' लडके ने उत्तर दिया । थोडी देर चुप रह कर वह फिर बोला, 'राज, मुझे मौत का गम नही है । मरना तो सभी को एक न एक दिन है ही । मुझे दुख इस बात का है कि मैं उनकी सेवा नही कर सका, उनका ठीक से इलाज नही करवा सका । वे बिना इलाज के मर रही हैं यह बात चौबीसो घण्टे मेरे दिमाग को कचोटती रहती है—चौबीसो घण्टे ! अच्छा अब चलें ।'

'वे दोनों डगमगाते कदमो से अलग-अलग दिशा मे चल दिये ।

'आज सुबह मैं अभी ऊघ ही रहा था कि सडक पर दो अर्थियो को गुजरते देख मेरा दिल धक से रह गया । एक अर्थी उस लडके की थी, दूसरी एक बुढिया की । शायद लडके की मा थी । मा तो उसकी बीमार थी मर गयी होगी, पर लडके को क्या हो गया अचानक !

'मैं यह सोच ही रहा था कि अर्थियो के साथ चलने वाले एक बूढे की आवाज सुनायी दी । वह अपने किसी साथी से कह रहा था—'सब ईश्वर की लीला है । उसकी मर्जी के आगे किसी का बस नही चलता । जो भाग्य मे लिखा है वही होता है ।—लडका बहुत नेक था—बहुत काबिल ! बिजली के खम्बे के नीचे पढ पढ कर बा ए फर्स्ट क्लास मे पास कर लिया था । पर गरीब था, सिफारिश कोई नही थी, इसीलिए किसी ने नहीं पूछा । चपरासी तक की नौकरी नही मिली । दो साल तक दर दर की ठोकरें खाता रहा । मा छ मास से बीमार चली आ रही थी । रात बहुत बीमार हो गयी । घर मे डाक्टर बुलाने के लिए एक पैसा तक न था । बचा खुचा घर का सामान बच कर लडके ने डाक्टर को बुलाया पर तब तक बुढिया बेचारी इस दुखिया ससार को छोड कर जा चुकी थी । लडका यह सदमा न सह सका । हार्ट फेल हो गया । '"

× × ×

और आवाज आनी बद हो गयी । मेरा दिल गहरी उदासी मे डूब रहा है—बहुत ही गहरी उदासी मे ! लग रहा है, वह लडका मैं ही था और मैं मर चुका हू !

रात आधी के करीब बीत चुकी है। चारो ओर गहरा सन्नाटा है। हवा साय साय कर रही है, मानो सारा ससार सिसकिया भर रहा हो। बस्ती से चौकीदार के डडे की आवाज सुनायी दे रही है—ठक!—ठक! मेरा जी चाह रहा है, उठू और चौकीदार के डडे की आवाज के साथ पागलो की तरह पुकारने लगू—"जागो!—जागो! जागो!"

मनहूस

उसका असली नाम दो चार बडे बूढो को छोडकर गाव मे और किसी को मालूम न था। सब उसे मनहूस के नाम से ही पुकारते थे।

उसके इस नाम की भी एक कहानी है।

मनहूस का इस ससार में आये चद घटे ही हुए थे कि उसकी मा की मत्यु हो गयी। एक माह बाद पिता भी चल बसे। लोगों ने कहा, लडका मनहूस है, मा बाप को खा गया।

मनहूस की एक विधवा बुआ थी। उसने मनहूस के पालन पोषण का भार अपने जिम्मे लिया। पर मनहूस छ साल का भी नही हुआ था कि वह भी चल बसी।

अब तो सबको शक हो गया कि लडके मे कोई न कोई खराबी जरूर है। कोई भी उसकी देखभाल करने को तैयार न था। चाचा, ताऊ मामू, फूफा—सभी ने उसे अपने घर मे रखने से इनकार कर दिया। सभी के दिल में यह वहम समा गया था कि जिस घर में मनहूस रहेगा उसका सत्यानाश हो जायगा।

फिर भी मनहूस मरा नही, कुत्ते की तरह दर-दर भटकता हुआ पलने लगा। कुछ बडा हुआ तो एक दिन अचानक न जाने कहा चला गया।

फिर कई साल बाद एक दिन अचानक ही वह आ भी गया। पर अकेला नही आया। उसके साथ बीस बाईस साल की एक बेहद काली और कुरूप लडकी थी। मनहूस के दिन अब सुख से बीतने लगे। लेकिन सुख तो जैसे उस के भाग्य मे लिखा ही नही था। गाव आने के कोई चार महीने बाद उसकी पत्नी के बच्चा हुआ और जच्चा-बच्चा दोनों का एक साथ ही देहान्त हो गया।

अब तो उसके मनहूस होने मे किसी को जरा भी शक नही रहा। गाव के पडित रामजी दास ने फतवा दिया, "लडके के बारहवें शनि है जो मित्रो की ओर शत्रु भाव से देख रहा है। जिसकी ओर वह प्यार से देखेगा, उसे विधाता भी नही बचा सकते।"

लोग अब उसकी छाया से भी बचने लगे। उसके घर के पास से लोगों ने निकलना छोड दिया। जिधर से वह गुजरता उधर ही भय घृणा और क्रोध से भरी आखें उसका पीछा करती। कोई उससे ठीक से बात तक न करता। उसे आते देख स्त्रिया बच्चो को घरों मे छिपा लेती। सारा दिन वह झोपडी के बाहर दीवार से पीठ लगाये बैठा लबी-लबी आह भरता रहता। उसके

लम्बे रूखे बाल हवा मे लहराते रहते और उसकी उदास डरी डरी आखें दूर आकाश को निहारती रहती। कई बार सोचता, आत्महत्या कर ले, पर हिम्मत न पड़ती।

× × ×

नदी मे बाढ आयी थी। मीलो तक पानी ही पानी फैला था—गरजता, शोर मचाता, ताडव नृत्य करता हुआ पानी, पानी, जो जीवन का आधार है, पर आज वही जीवन को समाप्त करने पर तुला हुआ था। चारो ओर प्रलय जैसा दृश्य था।

हजारो एकड पकी हुई, खडी फसलें तबाह हो गयी थीं। जिंदगी से हुमकते हुए सैकडो गाव जलमग्न हो गये थे। सडको ने नहरो का रूप धारण कर लिया था। रेलवे लाइनो का कहीं पता नही चल रहा था। बिजली, तार टेलीफोन—सब कुछ तहस नहस हो गये थे।

सैकडो आदमियो को जल समाधि मिल चुकी थी। सैकडो को सापो ने काट खाया था। हजारों बेघरबार हो गये थे। हजारों वृक्षो, मकानों की छतो या दूसरे ऊचे स्थानो पर शरण लिये थे। और बाढ ही जैसे काफी न हो—इस मुसीबत मे कल से घनघोर वर्षा भी हो रही थी। चारो ओर से पानी मे घिरे, भूखे, प्यासे वर्षा मे भीगते बैठे वे मौत से लड रहे थे।

कल शाम से राजापुर गाव के पूर्वी छोर पर बने रामू नबरदार के पक्के मकान की छत पर तमाम आदमी फसे बैठे थे। गाव मे सात फीट गहरा पानी भरा हुआ था। दूसरे मकान गिर चुके थे। एक यही पक्का होने के कारण अब तक खडा था। सात फीट गहरे पानी मे डूबा वह मकान कल शाम से वर्षा और पानी की तेज लहरो का मुकाबला कर रहा था।

लेकिन अब वह और अधिक देर तक खडा रहेगा, इसकी कोई सभावना नही थी। लहरो के निरतर टकराते रहने के कारण उसकी दीवारो मे जगह जगह दरारें पडने लगीं थी। उधर पानी लगातार चढता जा रहा था। कब मकान गिर कर इस अथाह जल मे समा जायगा, उस पर शरण लिये हुए तीस प्राणी मौत की गहरी वादी मे खो जायेंगे, यह कोई नही कह सकता था।

मौत ने अपना निर्मम शिकजा, उन तीस प्राणियो की गरदनो पर कस दिया था। उनके चेहरे लाशो की तरह पीले पड गये थे। उनके लिए बोलना और उठ कर खडा होना भी असभव हो गया था।

सफेद पत्थर के बुत बने वे खामोश बैठे थे। उनकी आखें लगातार पानी मे चारो ओर कुछ ढूढ रही थीं—शायद कही कोई नाव आ रही हो पर वे निराश हो जाते।

कल से लगातार होती बारिश उनके कष्टो को और भी बढा रही थी।

× × ×

"बाबा, उधर क्या देख रहे हो ? हमे बचाने कोई नही आयेगा। हमारी चिंता ही किसे है ! कोई करेगा भी क्या ! बस, अब तो हमे यही थोडी-सी देर और है।"—बूढे नबरदार को मकान से कोई दो सौ गज दूर पानी मे डालियो से कुछ नीचे तक डूबे बेर के एक पेड की ओर एकटक देखते देख कर पास बैठे अधेड ने कहा।

"नही, मैं नाव की प्रतीक्षा नही कर रहा हू। मैं कुछ और सोच रहा हू", नबरदार ने उत्तर दिया।

थोडी देर तक चुप रहने के बाद उसी बेर की ओर इशारा करते हुए नबरदार ने अधेड से पूछा, "टीकाराम, इस बेर का तना कितना होगा भला !"

"चार हाथ से कुछ कम ही होगा।"

"सारा तना तो पानी मे नही डूबा है।"

"नही, हाथ सवा हाथ के करीब पानी से बाहर है।"

नबरदार खामोश बैठे थोडी देर तक कुछ सोचते रहे फिर बोले, "सुनो, भगवान ने चाहा तो हम सभी बच जायेंगे।"

सब की नजरें एकदम नबरदार की ओर उठ गयी। यह देखकर उन्होने फिर कहना आरम्भ किया, सामने वह जो बेर का पेड है, उसका तना करीब चार हाथ है। पानी म सारा तना नही डूबा है। हाथ सवा हाथ बाहर है। इसका मतलब यह हुआ कि यहा पानी की गहराई ढाई तीन हाथ है। बेर का यह पेड शामलात की टीकरी पर उगा हुआ है। यह टीकरी यहा से सीधी रानीपुर की लबी बड तक चली गयी है। यहा से वहा तक जमीन की सतह लगभग एक जैसी ही है, इसलिए पानी की गहराई भी एक जैसी ही होगी।"

वह कुछ रुक कर फिर बोले "यहा से लेकर बेर तक पानी बहुत गहरा है। अगर हम मे से कोई बहादुर आदमी तैर कर इस पानी को पार कर ले, तो फिर वह पानी मे चलता हुआ आसानी से रानीपुर की लबी बड तक पहुच सकता है। लम्बी बड के साथ ही रानीपुर का नाला है। वहा पानी गहरा तो है ही तेज भी बहुत होगा। उसे भी तैर कर ही पार करना होगा। नाले के पार जमीन धीरे धीरे ऊची होती चली गयी है। नाला पार करके बिल्कुल बड की सीध मे चलते जाना है। पानी अधिक से अधिक धनपुर के मदिर तक पहुचा होगा। वहा नावो का भी कुछ न कुछ इतजाम जरूर होगा।"

इतना कह कर बूढे नबरदार चुप हो गये।

छत पर सन्नाटा छा गया। पानी बहने की हरहराहट और बारिश की छरछराहट के अलावा और कोई आवाज नही सुनायी पडती थी।

सबके चेहरों की ओर बारी बारी से देखते हुए नबरदार ने कहा, "बोलो, है किसी म हिम्मत ?"

किसी ने जवाब नही दिया। कोई देता भी क्या ! समुद्र की तरह फैले इस अथाह, अपार पानी को पार करना क्या इ सान के वश की बात थी। यह तो साक्षात मृत्यु से टक्कर लेना था। यहा तो बचने की कुछ आशा भी थी। हो सकता है मकान न गिरे और पानी उतरना शुरू हो जाय। उधर तो मौत निश्चित सी थी। भवर मे जा फसे या तैरते तैरते सास फूल गयी और डूब गये। साँप ने काट खाया और मर गये। जानबूझ कर मौत के मुह मे कौन फसना चाहता !

सबको खामोश बैठे देख नबरदार ने डाटा—'किसी मे हिम्मत नही है, तो फिर मरो सभी यहा। मुझ मे अब दम नही है, नही तो मैं जाता।"

वातावरण बहुत बोझिल हो उठा। किसी की दृष्टि ऊपर नही उठ रही थी। सास भी वे रुक रुक कर ले रहे थे, मानो डर रहे हो कि कहीं दूसरे सुन न लें। एक दूसरे से नजरें मिलाने मे उन्हे लज्जा अनुभव हो रही थी। कोई पाच मिनट तक इसी तरह का दम घोट देने वाला वातावरण छाया रहा, फिर अचानक एक भारी आवाज गूज उठी।

'मैं जाता हू ।"

सब नजरें एकदम ऊपर उठी और बोलने वाले के चेहरे पर जा टिकीं। मनहूस !

हा, वही था ! जिसके विषय मे उनकी धारणा थी कि जिस घर मे वह रहेगा उसका सत्यानाश हो जायगा, जिसके लिए गाव के पडित रामजीदास ने फतवा दिया था कि जिसकी ओर वह प्यार से देखेगा, उसे विधाता भी नही बचा सकते। इस घोर सकट के समय भी जिसे उन्होंने अलग बैठा रखा था ।

उसी मनहूस के चेहरे की ओर दो कम साठ आखें एकटक देख रही थी। लेकिन आज उन आखो मे डर नही था, क्रोध नही था, घृणा नही थी—थी प्यार, श्रद्धा और प्रशसा की कोमल भावना।

मनहूस के कमजोर, भूख से निढाल और सर्दी से ठिठुरे हुए शरीर मे शक्ति का सागर हिलोरें लेने लगा। कभी किसी ने उसे ऐसी नजरो से नहीं देखा था। लोग जन्म से ही उससे घृणा करते आये थे। आज पहला दिन था कि वे उसकी ओर प्यार से देख रहे थे।

उसका दिल स्फूर्ति और उत्साह से भर उठा। उसे लगा, यह थोडा सा पानी तो कोई चीज ही नही है, इन भोले भाले इ सानो को बचाने के लिए, जो

उसकी ओर इतनी आशा और श्रद्धा से देख रहे हैं, वह सागर पार कर सकता है, आग मे कूद सकता है, बर्फ से ढके ऊचे ऊचे पर्वत लाघ सकता है।

"हा, मैं जाऊगा। मैं इस गागर के सहारे तैर कर यह पानी पार कर लूगा। फिर डडे के सहारे चलता हुआ लबी बड तक पहुच जाऊगा। और फिर नाला भी इसी गागर के सहारे पार कर लूगा।"

वह उठ खडा हुआ, पास पडी पीतल की गागर उठायी, एक लबा डडा हाथ मे पकडा और इससे पहले कि कोई कुछ बोले, वह पानी म कूद पडा।

× × ×

पेड के पास पहुच कर मनहूस ने पाव धरती से लगा दिए। बूढे नबरदार का अदाजा बिल्कुल ठीक था। पानी उसकी छाती तक था।

सास लेने के लिए थोडी देर तक वह पेड के पास रुका। गागर को डडे वाले हाथ मे पकड कर दूसरे हाथ से अपना चेहरा पोछा। पीछे मुड कर उडती सी दृष्टि सामने छत पर बैठे लोगो पर डाली। उसे अपनी ओर देखते देख कर लोग हाथ हिलाने लगे। मनहूस का दिल दुगने उत्साह से भर उठा। उसने भी हाथ हिला कर उत्तर दिया। उसके बाद वह मुडा गागर कधे पर रखी और डडे से पानी नापता हुआ आगे बढने लगा। . .

बहाव तो ज्यादा तेज नही था, लेकिन पानी ठडा बहुत था। ऊपर से वर्षा की बूदे तीखे बाणो की तरह उसके सिर, चेहरे और कधो पर पड रही थी। लेकिन उसे इसकी बिल्कुल परवाह नही थी। उस तो बस एक चिंता थी—शीघ्र, अति शीघ्र, रानीपुर की लम्बी बड तक पहुचना है।

बहते पानी की ओर देखने से चक्कर आ जाता है और आदमी गिर जाता है, यह मनहूस जानता था, इसलिए वह बिल्कुल सामने नजर रखे चला जा रहा था। पानी कही उसकी छाती तक रहता, कही गले तक, कही ठोडी तक, कही ठोडी से भी ऊपर चढने लगता। जब ठोडी से ऊपर चढने लगता, तो वह गागर छाती के नीचे रख लेता और तैरने लगता। थोडी दूर तक तैरता रहता, फिर पाव धरती से लगा कर देखता। यदि लग जाते, तो पैदल चलने लगता। इसी तरह कभी पैदल, कभी तैरता वह बढा जा रहा था।

चलते चलते कभी अचानक उसका पाव किसी कटीली झाडी पर पड जाता। उसका सारा शरीर असह्य पीडा से ऐंठ उठता। नीचे झुक कर तो वह काटे निकाल नहीं सकता था, इसलिए पाव को धरती पर रगड देता। पहले से भी अधिक पीडा होती और काटे पाव मे ही टूट जाते। वह फिर आगे बढने लगता।

एक जगह उसका बाया पाव झाडी की एक जड मे फस गया और वह गिर पडा। उसके मुह, कानों और नाक में पानी भर गया। आखो के आग

लाल-पीले तारे नाच उठे। काफी कोशिश करने पर अंत मे वह सभल तो गया लेकिन इस कशमकश म गागर डूब गयी।

गागर का डूब जाना तो आधी ताकत खत्म हो जाने के बराबर था, मगर अब हो क्या सकता था। गागर को ढूढने का प्रयत्न करना केवल समय बरबाद करना था। इसलिए दो-तीन बार सिर इधर-उधर झटक कर उसने कानो मे भरा पानी निकाला, तीन चार बार सांस ली और आगे चल पड़ा।

बारिश कुछ धीमी हो गयी थी। बादल फटने लगे थे। पश्चिम मे सूर्य ने बादलों का परदा फाड कर अपना कमजोर पीला चेहरा बाहर निकाला। मटमैला पानी रक्तिम हो उठा। दृश्य और भी भयानक हो गया। मनहूस गहरी चिंता मे खो गया। दिन थोडा रह गया था और उसे अभी काफी दूर जाना था। उसने अपनी चाल तेज कर दी।

लबी बड अब बिल्कुल सामने नजर आ रही थी। जमीन यहां कुछ ऊची थी। पानी उसकी कमर से कुछ ही ऊपर तक था। उसका दिल उत्साह और प्रसन्नता से भर गया। आधा मार्ग उसने तय कर लिया था।

अचानक बर्फ से भी ठडी कोई चीज आकर उसके दायें हाथ से टकरायी और चिपट गयी। उसने जल्दी से अपना हाथ ऊपर उठाया। उसकी ऊपर की सास ऊपर और नीचे की नीचे रह गयी—एक बहुत बडा काला साप उसके हाथ को जकडे हुए था। बडी कठिनता से उसने अपने आपको बेहोश होने से बचाया और पूरे जोर से हाथ झटक दिया। साप छिटक कर दूर जा गिरा, लेकिन जाते जाते हाथ की पिछली ओर काट गया। वहा खून की बूदे उभर आयी और देखते-देखते हाथ नीला पडने लगा।

बिना एक क्षण की भी देर किये मनहूस ने सिर पर बधी चादर फाड कर बाजू को कुहनी से कुछ नीचे से कस कर बाध दिया और फिर इस तरह, मानो कुछ हुआ ही न हो, आगे बढ गया।

× × ×

वह लबी बड तक जा पहुँचा। बड पाच फुट गहरे पानी मे खडी थी। साप उसके तने और शाखाओ से चिपटे हुए थे। पास ही झाडी म तीन लाशें फसी तर रही थी। एक आदमी की, एक औरत का और एक बच्चे की। तीनो लाशें आपस मे गुथी हुई थी और उनके गिर्द बीसो काले साप लिपटे थे।

यह भयानक और करुणाजनक दृश्य देख कर मनहूस का कलेजा दहल उठा। आखो म आसू आ गये। लेकिन जल्दी ही उसने उधर से ध्यान हटा लिया। वह लाठी से टटोलता हुआ बड के गिर्द बने पत्थरो के चबूतरे पर चढ़ गया और धनपुर के मदिर की ओर देखने लगा।

मंदिर का सुनहरा कलश वर्षा से धुल कर और भी चमक उठा था। मंदिर के दोनो ओर दूर तक सैंकडो तबू तने हुए थे, जिससे प्रतीत होता था कि पानी वहा तक नही पहुचा है और वहा सहायता का भी अच्छा प्रबध है।

सामने नाले मे दस दस फुट ऊची उठती विकराल लहरो को देख कर एक बार तो वह काप उठा, लेकिन दूसरे ही क्षण छत पर बैठे, मृत्यु के चगुल मे फसे, डरे, घबराये, एक कम तीस चेहरे उस की आखों के सामने घूम गये और उस ने दृढ निश्चय कर लिया—कुछ भी हो जाय, मंदिर तक पहुँचना ही है।

तैरने मे मनहूस बहुत माहिर नही था। बस, हाथ-पैर मारना आता था उसे। वह छोटा था तो गाव के दूसरे लडको के साथ नदी मे तैरा करता था। एक बडा लडका, जिसे तैरना अच्छी तरह आता था, उन्हें सिखाया करता, 'बिल्कुल सीधे नही तैरना चाहिए। तिरछे तिरछे तैरना चाहिए। लहर के ऊपर उठने के साथ ऊपर उठना और नीचे गिरने के साथ नीचे गिरना चाहिए।"

बचपन की सीखी ये बातें आज काम आ रही थी। तिरछे-तिरछे तैर रहा था वह—लहरो के साथ ऊपर चढता और नीचे गिरता हुआ। पानी का बहाव बहुत तेज था। लहरें दस दस फीट ऊची उठ रही थी। कई बार वह लहर के साथ ऊपर न उठ पाता, लहर उस के ऊपर से गुजर जाती। उसकी आखो के आगे घुप अधेरा छा जाता। सास रुकने लगती। लगता मानो किसी ने उसे जमीन के नीचे दफन कर दिया हो। लेकिन शीघ्र ही वह सभल जाता और फिर से तैरने लगता।

अब वह लबी बड से काफी दूर आ गया था। उसकी सास धौंकनी की तरह चल रही थी। छाती और कनपटियो म जोर की पीडा हो रही थी। कानों मे सा सा की आवाज गूज रही थी। एक हाथ तो उसका पहले ही बेकार हो चुका था अब धीरे धीरे दूसरा हाथ और टागें भी काम करना बद करने लगी। कुछ देर बाद तो उन्होने हिलने से बिल्कुल ही इनकार कर दिया। वह डूबने ही वाला था कि कुछ दूरी पर उसे लकडी का एक तख्ता तैरता दिखायी दिया।

तख्ता पा जाने पर उसका उत्साह लौट आया। सास लेने के लिए कुछ देर तक वह बिना हाथ पैर हिलाये तख्ते पर लेटा रहा। फिर दुगने वेग से तैरने लगा।

यहा लहरें नहीं उठ रही थी। पानी बहता जा रहा था। तख्ते का सहारा लेता हुआ वह तेजी से तैरता रहा। सूर्य या तो छिप चुका था या छिपने वाला था और वह किसी भी कीमत पर अधेरा होने से पहले धनपुर के मंदिर पहुँचना चाहता था।

एक स्थान पर पहुच कर अचानक उसका दिल प्रसन्नता से भर उठा। इतनी प्रसन्नता सूम को सोना मिल जाने पर भी क्या होती होगी, जितनी उसे उस समय हुई। उसके पाव धरती से जा लगे थे। वह किनारे लग गया था।

× × ×

और आधे घटे बाद सामान और आदमियो से भरी तीन नावें अथाह जल को चीरती हुई राजापुर गाव से धनपुर के मदिर की ओर तेजी से बढी जा रही थी। यहा मृत्युशैया पर लेटा मनहूस बेचैनी से उनके वहा सुरक्षित पहुच जाने की प्रतीक्षा कर रहा था।

असली हकदार

सुरेन्द्र ने साइकिल दीवार के साथ लगा कर खड़ी कर दी और आवाजें लगाता हुआ रसोई घर की ओर बढ़ा—"गुड्डी ! गुड्डी !"

"आ रही हूँ" गुड्डी ने रसोई घर से उत्तर दिया और फिर सुरेन्द्र की ओर आते हुए बोली, 'क्या बात है ? आज बहुत खुश नजर आ रहे हो।'

"हां, आज मावदौलत बहुत खुश हैं," सुरेन्द्र ने कहा और फिर जेब में से दस-दस के दो नोट निकाल कर गुड्डी के हाथ पर रखते हुए बोला, "लो, तुम भी क्या याद करोगी !"

'अरे ! ये कहां से मिले ?" गुड्डी बच्चा की तरह चहकी। 'आज सुबह से ही मेरी दायीं हथेली खुजला रही थी।'

"ओवर टाइम मिला है"—सुरेन्द्र ने उत्तर दिया और लपक कर पास ही चारपाई पर पड़े पप्पू को गोद में उठा कर खिलाने लगा।

× × ×

सुरेन्द्र डाकघर में बाबू है। मासिक आय है—२१४ रुपये। दस रुपये जी पी एफ कट जाता है। साठ रुपये मां बाप को गांव भेजने होते हैं। बाकी बचे १४४ रुपये, जिनमें घर का सारा खर्च चलाना होता है। पहला सप्ताह ठीक निकल जाता है, बाकी तीन सप्ताह बीतते हैं पति पत्नी के बीच चखचख में और उधार के लिए दूसरों के आगे गिड़गिड़ाने में।

ऐसे घर में—वह भी अंतिम सप्ताह में—यदि कहीं से बीस रुपये आ जायें तो ! घर की बिना पलस्तर की दीवारें तक मुस्करा उठीं।

सुरेन्द्र बादशाहों की तरह शेखी मारता हुआ बोला 'ये रुपये तुम्हारे हैं। तुम जैसे चाहो, इन्हें खर्च कर सकती हो।"

गुड्डी सुरेन्द्र से सट कर बैठी थी। प्रसन्न होती हुई बोली, "मैंने सोच लिया है। तुम्हारी पैंट बिल्कुल फट गयी है। तुम्हारे लिए पैंट का कपड़ा आयगा और पप्पू के लिए सूट का।

'नहीं इनकी तुम्हारे लिए साड़ी आयगी," सुरेन्द्र ने कहा।

"साड़ी मैं फिर कभी ले लूंगी" गुड्डी ने जिद की। 'मुझे क्या कहीं बाहर जाना होता है ? तुम्हारी पैंट पीछे से बिल्कुल फट गयी है। पहनते हो तो मुझे शर्म आती है।'

"कहता तो तुम किसी का मानोगी नहीं। अपनी ही जिद करोगी," सुरेन्द्र को क्रोध आ गया।

"हाय ! कम से कम आज तो न लड़ो"—गुड्डी ने अपना नर्म हाथ सुरेन्द्र के मुंह पर रख दिया। "कल दफ्तर से जरा जल्दी आ जाना। बाजार चलेंगे। वहां जो चीज ठीक लगेगी ले लेंगे।"

"ठीक है," सुरेन्द्र मान गया।

× × ×

अगले दिन सुरेन्द्र चार बजे ही दफ्तर से लौट आया। गुड्डी चारपाई पर बैठी पुराना स्वेटर उधेड़ रही थी। "अरे ! तुम अभी तक तैयार नहीं हुई?"—उसने आश्चर्य प्रकट किया।

"अब जरूरत नहीं है। मैं खरीद लायी हूं," गुड्डी ने उत्तर दिया।

"सच ! दिखाओ जरा।"

गुड्डी अन्दर से अपना बैग उठा लायी और उसमें से कागज की एक छोटी-सी परची निकाल कर सुरेन्द्र के हाथ मे पकड़ा दी।

सुरेन्द्र हैरानी से मनीआर्डर की उस रसीद को देखने लगा।

गुड्डी डरते डरते बोली, "देखिए नाराज न होइयेगा। आपने कहा था कि ये रुपये मेरे हैं। मैं जैसे चाहूं खर्च कर सकती हूं। सुबह समाचार पत्र मे बिहार के सूखा पीड़ित लोगों के चित्र देख कर मेरा दिल भर आया। मैंने सोचा, हमने कपड़े न खरीदे तो कुछ बिगड़ेगा नहीं। इन भाइयों को इन रुपयों की जरूरत हमसे अधिक है। हो सकता है इनकी बदौलत किसी गुड्डी का पप्पू मृत्यु के मुंह से बच निकले।"

गुड्डी का गला भर आया था। आंखों से मोतियों के दाने टूट कर गिरने लगे थे। इस रूप में वह सुरेन्द्र को बहुत प्यारी लगी। उसने उसे भुजाओं मे भर लिया और बोला, "नहीं, तुमने कोई गलत काम नहीं किया। तुमने अच्छा किया, बहुत अच्छा ! इन रुपयों के जो असली हकदार हैं, उनके पास पहुंचा दिया।"

●

ट्राई-साइकिल

सहन मे घुसते ही देवराज ने देखा, पप्पू फर्श पर बैठा रो रहा है। पत्नी पर बेहद क्रोध हो आया उसे। कैसी स्त्री है, दो बच्चो को भी नही सभाल सकती। सारा दिन रुलाती है उन्हें।

"क्या बात है ? क्यो रो रहा है पप्पू ?' क्रोध भरी आवाज।

'पिटा है।" उत्तर वैसी ही आवाज में।

"क्यों ?—कितनी बार कहा, बच्चे को पीटा न कर।"

"क्या करू। यह है ही पीटने लायक।" पत्नी की आवाज मे क्षोभ था। "बेहद जिद्दी हो गया है। कहना तो मानता ही नहीं। साथ वाला ठेकेदार अपने लडके के लिए तीन पहियो वाली साइकिल लाया है आज। उसे देख यह भी पीछे पड गया। लगा रोने। चुप ही न हो रहा था। दुकान से किराये पर साइकिल ले कर दी, तब माना। फिर वापस नही कर रहा था। छीन कर वापस की।"

पप्पू अब भी रो रहा था। देवराज ने उठा कर उसे जोर से छाती से भीच लिया और पीठ पर धीरे धीरे हाथ फेरते हुए बोला 'चुप बेटा, चुप! बडा कामा है तू! ऐसे कोई रोता है ? गदे बच्चे रोते हैं। हम तुम्हारे लिए नयी साइकिल ला देंगे। कल ही ला देंगे। हम अपने बेटे के लिए नयी साइकिल लायेंगे।"

× × ×

देवराज डाकखाने मे पैकर है। वेतन कम है, खर्च अधिक। कर्ज हमेशा सिर पर चढा रहता है। कर्ज भी भारी ब्याज का। दस रुपये पर एक रुपया महीना। एक सौ बीस रुपये सैकडा सालाना। कर्ज के इस बोझ ने उसकी कमर तोड दी है। तीस साल की आयु मे ही वह बूढ़ा हो गया है।

दूसरे दिन दफ्तर से लौट कर देवराज ने अभी साइकिल रखी ही थी कि पप्पू ने पूछा, "मेरी गड्डी (गाडी) पापा ?"

"ओह भूल गया बेटा! कल लाऊगा।'

अगले दिन दफ्तर से लौटते समय देवराज पप्पू को बस-स्टड के पास खडा देख हैरान रह गया।

"अरे शैतान, क्या कर रहा है तू यहाँ ?" उसने उसे डाटा।

"मेरी गड्डी (गाडी) पापा ?"

देवराज की आखो मे आसू आ गये । ओह! तो यह गाडी के लिए इतनी दूर आ गया ! उसने तो केवल टालने के लिए कह दिया था । उसने उठा कर पप्पू को साइकिल पर बैठा लिया और बोला, 'ऐसा नही करते बेटा ! इतनी दूर नहीं आते । गाडी मैं तुम्हारे लिए पहली तारीख को ला दूगा । अभी पैसे नही हैं । पहली तारीख को तनख्वाह मिलेगी, तो गाडी ले आऊगा अपने बेटे के लिए । "

– *शायद कभी समय रहा होगा, जब दफ्तरो मे काम करने वालो के लिए* पहली तारीख ईद होती थी, दीवाली होती थी । इस महगाई के जमाने मे—विशेष तौर पर चौथी श्रेणी के कर्मचारियो के लिए—तो पहली तारीख मुहरम से कम नही होती । इन लोगो का वेतन गुजारे से बहुत कम होता है ।

अत हाथ मे आने से पहले ही वेतन का बडा भाग पहले लिये कर्जों के बदले कट चुका होता है । महीने भर के खर्चों की लबी लिस्ट उनकी आखो के सामने होती है और वे समझ नही पाते कि क्या करें ।

पहली तारीख जिनके लिए मुसीबत बन कर आती है, देवराज उन्ही लोगो में से है । जी पी एफ एडवास, फेस्टीवल एडवास, साइकिल एडवास, सहकारी समिति के कर्जे की किस्त इत्यादि कट कर और दफ्तरी साहूकारो के कर्जे का ब्याज अदा करके उसके पास केवल एक सौ पचहत्तर रुपये पचास पैसे बचते हैं । क्या करे वह, इन रुपयो का, कैसे चलेगा पूरे महीने का खर्च । साठ रुपये तो उस कब्रनुमा अधेरी कोठरी का किराया ही देना होता है । पचास रुपये राशन के । कम से कम पच्चीस रुपये वनस्पति घी, बीस रुपये दूध, और तीस रुपये दाल, साबुन, तेल आदि, के । बीस रुपये सब्जी के लिए और कम से कम पद्रह रुपये कोयले के लिए चाहिए । पत्नी की साडी बिल्कुल फट गयी है । गुड्डी के लिए फराक चाहिए । और पप्पू के लिए गाडी ? कितने दिनो से आस लगाये बैठा है बचारा !

× ×

"पापा जी—!"

देवराज ने पीछे मुड कर देखा । पप्पू गली के मोड पर खडा था ।

"आ बेटा, चलें घर ! देखो तुम्हारे लिये क्या लाया हू ?"

लेकिन पप्पू अपने स्थान से हिला तक नही । उसके चेहरे पर उदासी के गहरे भाव उभर आये थे ।

देवराज पहली तारीख को बच्चों के लिए पचास साठ पैसे की कोई चीज ले आता है। लेकिन इस बार पप्पू को झासा देने के लिए वह दो रुपये की जलेबिया लाया है । थैले में से जलेबियो का लिफाफा निकाल वह पप्पू की ओर बढ़ा ।

"ले बेटा, जलेबिया खा !" पास पहुंच कर उसने प्यार भरे स्वर म कहा।

-'नही, हम गड्डी (गाडी) लेंगे।" पप्पू की आवाज भर्रायी हुई थी।

"गाडी भी लाते हैं बेटा। पहले जलेबिया खा ले।"

"नही, हम गड्डी लेंगे।" पप्पू ने कहा और लिफाफा दूर हटाने के लिए हाथ मारा। लिफाफा देवराज के हाथ से छूट कर नीचे नाली म जा गिरा।

देवराज को क्रोध आ गया। वह एक एक पैसा दांतो से पकडता है और इस कम्बख्त ने दो रुपये का नुकसान कर दिया—'गाडी लेगा?—ले गाडी?—ले?—और ले?" कहते हुए तीन चार थप्पड उसने पप्पू के जड दिये और फिर उसे वही छोड चल दिया। "हे ईश्वर मुझे मौत दे दे—मुझे मौत दे दे।" कहता हुआ वह घर म अदर चारपाई पर जा पडा। क्रोध, निराशा और दुख के कारण उसकी आखो मे आसू आ गये थे।

पप्पू जैसे पत्थर हो गया था। उसकी आखें सूखी थी, जबान बद थी, लेकिन उसके नन्हें से दिमाग मे तूफान उठ रहे थे।—क्या पीटा गया उसे? क्या दोष था उसका? पापा रोज गाडी लाने का झासा देते थे। गाडी के बदले मार क्यो?

× × ×

चार दिन से पप्पू बुखार मे बेहोश पडा है। मम्मी पापा परेशान हैं। पापा उसे गोद मे उठाये दिन मे दो बार सी जी एच एस डिस्पेंसरी जाता है। "मेहरबानी करके जरा अच्छी तरह देखिए! होश ही नहीं ले रहा है।"

लेकिन देवराज के कपडे चूकि मैले हैं इसलिए डाक्टर उसे डाट देता है। "क्या बात है? क्यो बार-बार लिये आ जाते हो इसे? क्या यही एक बीमार है मेरे पास? अभी सुबह ही तो दो दिन की दवाई दी है।"

आठवें दिन पप्पू की दशा ज्यादा खराब हो गयी। जबान और लबो का रग नीला पड चला। बेहोशी मे वह अजीब-अजीब वाक्य बडबडाने लगा।—गड्डी? नहीं लूगा गड्डी? नही लूगा।" उसकी मा घबरा उठी। देवराज डिस्पेंसरी भागा।

"उसे बडे अस्पताल ले जाओ!" सारा हाल सुनने के बाद डाक्टर ने परची पर जल्दी से कुछ घसीटते हुए लापरवाही से कहा और परची देवराज के हाथ मे पकडा दी।

जसा मुह, वैसी चपेट—हमारे अस्पतालो मे इस कहावत पर पूरी तरह अमल किया जाता है। यदि आप विशेष आदमी हैं तो आपका स्पेशल वार्ड म स्थान मिलेगा, मिनट मिनट बाद डाक्टर आपको देखने आयगा। कीमती से कीमती दवाए आपको दी जायेंगी।

लेकिन यदि आप जनसाधारण में से हैं तो अव्वल तो अस्पताल में आपको

प्रवेश ही नही मिलेगा और यदि किसी तरह प्रवेश मिल भी गया, तो बेड नही मिलेगा। फर्श पर बिछे मोटे गद्दे पर आपको लिटा देंगे। बस लेटे रहिए वहा निश्चित हो कर।

सी एच एस वालो ने लिखा था, इसलिए दाखिल करना जरूरी था। लेकिन बेड की क्या जरूरत थी पैकर के लडके को ! नाम इत्यादि लिखने के बाद नर्स ने पप्पू को फर्श पर बिछे गद्दे पर लिटा दिया और रौब से बोली, "एक आदमी इसके पास ठहरे। बाकी जाओ ! शोर मत मचाओ !"

अगले दिन मुलाकात के समय देवराज जब वार्ड में पहुचा, तो पत्नी फूट कर रो उठी।' इसे अगर बचाना है तो यहा से ले चलिए !"

"क्या ? क्या हुआ ? ' देवराज घबरा गया।

"हालत इतनी खराब है, लेकिन यहा कोई पूछता ही नही। बीस बार कहने पर डाक्टर आया और बस यह परची लिख कर दे गया।"

देवराज डाक्टर के पास पहुचा। डाक्टर ने बताया—' इन्जेक्शन लगेंगे, लेकिन इन्जेक्शन अस्पताल में खत्म हैं। अपनी डिस्पेंसरी से जा कर लाओ।"

' देवराज डिस्पेंसरी पहुचा। इन्जेक्शन वहा भी खत्म थे। क्या करे देवराज ! दवाई ले जाना जरूरी था, पर पैसा एक भी पास नही। कही से उधार मिलने की भी गुजाइश नही। हार कर अपनी नयी साइकिल उसने सौ रुपये मे बेच दी। दवाई खरीदी और अस्पताल के लिए चल दिया।

दिल बेहद उदास था। जी चाहता था, उड कर अस्पताल पहुच जायें। पप्पू से सबधित सैकडो बातें याद आ रही थी उसे। जब वह पैदा हुआ था जब उसने घुटनो के बल चलना सीखा था जब वह पहले पहल पाव पर खडा हुआ था । अचानक उसे उस दिन की याद आ गयी, जिस दिन गाडी के लिए जिद करने पर उसने उसे बुरी तरह पीट दिया था। दिल मे जैसे किसी ने छुरा घोप दिया हो— खच !

मार्केट मे एक स्थान पर वह अचानक रुक गया। सामने साइकिलो की दुकान पर, दरवाजे के साथ, चमचम करती, बच्चो की तीन पहियो वाली साइकिल टगी थी।

"क्या कीमत है इसकी ?" पास पहुच कर उसने दुकानदार से पूछा।

'चालीस रुपये।"

"दे दीजिए ! जल्दी कीजिये। मेरा बच्चा अस्पताल मे सख्त बीमार है।"

देवराज वार्ड मे पहुचा। पर पप्पू वहा नही था, जहा उसे छोड कर वह गया था। दिल धक् से रह गया। हैरान खडा वह इधर उधर देख ही रहा था कि नर्स बोली, ' ऐ मिस्टर ! क्या बात है ? ट्राई साइकिल उठाये कैसे घूम रहे हो यहा ? बाहर जाओ !"

"मेम साहब, मेरा लडका था यहां। दो घंटे पहले यहां लेटा था। सख्त बीमार था। डाक्टर साहब ने मुझे दवाई लेने भेजा था।" देवराज की आवाज भर्रा आयी थी। नर्स के चेहरे पर करुणा के भाव उभर आये।.. "तुम्हारे लडके का नाम रमेश था न? बहुत दुख है। आध घंटा पहले उसका डेथ हो गया। तुम्हारा वाइफ बाहर होगा।"

देवराज पर जैसे बिजली गिर पडी हो। एक क्षण तक वह पत्थर का बुत बना स्तब्ध खडा रहा। फिर उसका चेहरा विकृत हो उठा। मुंह से भयानक चीख निकली। "तुम्हारे लिए मैं गाडी लाया था बेटा पप्पू बेटा!"

वार्ड मे सब की हैरान नजरें उधर उठ गयीं।

अगले अप्रैल मे

"नमस्ते जी ।"

मैं तीन साल बाद गाव लौटा था। पीपल की घनी छाया मे बैठा था। समाचारपत्रो म पढा करता था गावों की कायापलट हो गयी है, गाव स्वग बन गये हैं। और मैं सोच रहा था कि इस दौरान कुछ-न कुछ परिवतन अपने गाव मे भी हुआ ही है, चाहे वह परिवतन कैसा भी क्यो न हो। कुलदीप सिंह नम्बरदार के कच्चे मकान के स्थान पर दोमंजिली पक्की हवेली बन गयी थी। मिलखी शाह की एक दुकान की जगह दो दुकानें हो गयी थी। सराय के साथ बारह हाथ लम्बा, छह हाथ चौडा, पक्की ईंटो का एक नया मकान बन गया था, जिसके अन्दर हर समय समझ म न आने वाली आवाज मे रेडियो घरघराता रहता था और जिसके दरवाजे पर साइनबोड टगा था "पचायत घर।" मगू महर अपने मकान के दरवाजे पर बडा सा ताला लगा कर न जाने कहा चला गया था। कहते हैं, मिलखी शाह ने कज के बदले उसकी सारी जमीन हडप ली थी। तभी सुनायी दिया, 'नमस्ते जी ।"

मैंने ऊपर देखा। लट्ठे का कुर्ता पाजामा पहने अठारह-उन्नीस साल का एक नौजवान सामने खडा था।

'नमस्ते। ओह योगेन्द्रनाथ तुम ?" मैंने प्रसन्न होते हुए कहा "आओ बैठो।"

वह मेरी बगल मे पत्थर पर बैठ गया।

× × ×

योगेन्द्रनाथ गाव के एक गरीब किसान पडित मशाराम का लडका है। प मशाराम को आसपास के कट्टरपथी ब्राह्मण नही मानते क्योकि वह ब्राह्मणो की शान के खिलाफ खुद हल थाम कर धरती का सीना चीर अपनी रोजी पैदा करता है। उसकी आर्थिक दशा वैसी ही है जैसी कि हमारे देश मे बेजमीन किसानो की है।

तीन साल पहले जब मैं गाँव आया था तो योगेन्द्रनाथ इसी वृक्ष के नीचे मुझे मिला था। वह उस दिन बहुत प्रसन्न था। बातो ही बातो म उसने मुझसे अपने विषय मे कितनी ही बातें बता डाली थी। वह नवी कक्षा का विद्यार्थी है। क्लास म हमेशा प्रथम आता है। आठवी की परीक्षा मे

यह जिले भर में अव्वल रहा था और उसे स्कॉलरशिप मिली थी। विज्ञान में उसकी विशेष रुचि है। दो दिन पहले स्कूल के वार्षिक उत्सव के अवसर पर उसने एक रॉकेट का नमूना पेश किया था। उस अवसर पर राज्य के शिक्षा मंत्री भी उपस्थित थे। शिक्षा मंत्री ने उसकी खूब प्रशंसा की थी। उसे भारत का भावी एडिसन कहा था। दस रुपये इनाम में दिये थे। गुरु जी लगा कर पढ़ने की सलाह दी थी और आवश्यकता पड़ने पर हर तरह की सहायता करने का वचन दिया था। वह एम एस सी करेगा! बहुत बड़ा वैज्ञानिक बनेगा!...और भी कितनी ही बातें

योगेन्द्रनाथ को देख कर ये सब बातें मुझे याद हो आयीं। मैंने पूछा "सुनाओ योगेन्द्रनाथ, मैट्रिक कर ली ?"

"जी हां, पिछले साल कर ली।"

"कौन सा डिवीजन आया ?"

"फर्स्ट डिवीजन। पांच नम्बरों से स्कालरशिप रह गयी। परीक्षा के दिनों मुझे टाइफाइड हो गया था जी।"

"अच्छा? बहुत होशियार हो तुम!" मैंने प्रसन्न होते हुए कहा। "आगे पढ़ रहे हो न ?"

"जी, कहां ?" योगेन्द्रनाथ निराश स्वर में बोला। "इच्छा तो बहुत थी, लेकिन कोई तरीका बना नहीं। बापू की सेहत बहुत गिर गयी है। अब उनसे ज्यादा मेहनत नहीं होती। कर्जा भी बहुत चढ़ गया है। अधिक बोझ उन पर कैसे डालूं? मैं तो जी, शिक्षा मंत्री से भी मिला था लेकिन वहां कौन पूछता है। तीन बार जाने पर एक बार मुलाकात हो पायी। पर, जी, उन्होंने पहचाना तक नहीं। वह तो, जी, केवल कहने भर को बात कह दी जाती है—ताकि लोग बड़े जोर से तालियां पीट सकें। अच्छा जी, मारो गोली उनको! मैं तो आपके पास यह कहने आया हूं कि आप मेरे लिए कोई छोटी मोटी नौकरी ढूंढ दें। आप तो जानते ही हैं जी, कि आजकल बगैर वसीले के कोई काम नहीं होता। हमारा कौन है आपके सिवा! लेकिन जी, नौकरी ऐसी हो कि मुझे पढ़ने को टाइम मिल सके। तनख्वाह चाहे थोड़ी हो। हमारे स्कूल में एक मास्टर थे, जी, पंडित शंकरदास। उन्होंने प्राइवेट पढ़ कर ही बी ए कर लिया था। बी ए करने के बाद वे जालन्धर जा कर बी टी में दाखिल हो गये। फिर हमारे स्कूल में लगे लगे ही उन्होंने एम ए किया। आजकल एक कालेज में प्रिंसिपल हैं वे। मैं भी इसी तरह करूंगा जी।"

× × ×

इसके बाद मैं जितने दिन गांव में रहा योगेन्द्रनाथ एक बार रोज मुझसे मिलता रहा और अपनी बात याद कराता रहा। दो महीने की छुट्टियां काट

कर मैं दिल्ली वापस आ गया और काम मे फस कर योगेन्द्रनाथ को भूल गया। कोई एक साल बाद मुझे उसका यह पत्र मिला

"आदरणीय भाई साहब, नमस्ते !

मैं यहा पर सकुशल हू। आपकी कुशल श्री भगवान जी से शुभ चाहता हू। आगे समाचार यह है कि मुझे पब्लिक हाई स्कूल बीनेवाल म क्लर्क की नौकरी मिल गयी है। तनख्वाह थोडी है, लेकिन पढने की बहुत सुविधा है। हेड मास्टर साहब बहुत अच्छे हैं। कहते हैं, वे आगे पढने मे मेरी सहायता करेंगे। पढाई मैंने शुरू कर दी है। इस जून मे प्रभाकर की परीक्षा म बठने का विचार है। लेकिन, जी, पुस्तको की बहुत कठिनाई है। पुस्तकें बहुत अधिक हैं और बहुत महगी हैं। मुझे जो साठ रुपये मिलते हैं वे आटे-दाने म उड जाते हैं। इस साल फसल कुछ खराब हो गयी थी। फिर जी, अब बापू से मेहनत नही होती। इसलिए आप से हाथ जोड कर प्रार्थना है कि आप मेरी कुछ सहायता करे। या तो प्रभाकर की गाइड या कुछ रुपये भेजने की कृपा करे। यह लिखते हुए मुझे बहुत शर्म आ रही है। लेकिन, जी, आपके बिना और कौन है हमारा !

आपका योगेन्द्रनाथ'

उन दिनो मेरा अपना हाथ बहुत तग था। अत मै योगेन्द्रनाथ की कोई सहायता न कर सका।

इसके कोई छह महीने बाद एक शादी के सिलसिले मे मुझे फिर गाव जाना पडा। इस बार योगेन्द्रनाथ मुझसे घर पर मिलने आया। इधर उधर की चन्द रस्मी बातो के बाद मैंने पूछा 'कहो योगेन्द्रनाथ, प्रभाकर कर लिया न ?"

"जी कहा ? पुस्तकों का ही प्रब घ नही हो सका। फिर जी, कहने को तो मैं क्लर्क हू, लेकिन क्लर्की के साथ मुझे पाचवी से लेकर दसवी तक विज्ञान भी पढाना पडता है। पिछले साल तो जी, मुझे रात को भी क्लासें लेनी पडी और तनख्वाह देते हैं केवल साठ रुपये। मैं तो, जी फस गया हू। लेकिन हेड मास्टर साहब बहुत अच्छे हैं, जी। हर समय कहते रहते हैं, 'पढो, पढो।' बस, जी, इस जून मे प्रभाकर की परीक्षा अवश्य दे दूगा। तीन पेपर तो बिल्कुल तैयार हैं। अगले अप्रल मे एफ ए ओनली इग्लिश, फिर बी ए ओनली इग्लिश, फिर एक सब्जेक्ट और जी, फिर '

× × ×

इसके बाद मैं पाच साल तक गाव न जा सका। पाच साल बाद गया तो देखा, कितने ही परिवर्तन और हो गये हैं। मिलखी शाह ने दो दुकानो के साथ

आटे की चक्की भी लगा ली थी। फकीर चन्द सरपंच ने पक्की बैठक बनवा ली थी। गलियों में पत्थर लग गये थे। रेडियो बिगड़ा पड़ा था। "पंचायत घर" के साथ छप्पर में डाकखाना खुल गया था।

शाम को घूमने निकला तो देखा, डाकखाने के बाहर टूटी-सी कुर्सी पर सफेद बालों वाला कोई अध बूढ़ा चश्मा लगाये बैठा सामने मेज पर रखे रजिस्टर में कुछ लिख रहा है। "होगा कोई स्कूल मास्टर, जो पढ़ाने के साथ डाकखाने का भी काम करता होगा'—मैंने सोचा और आगे निकल जाना चाहा कि पीछे से आवाज आयी

"नमस्ते जी !"

मैं एकदम पहचान गया।

'योगेन्द्रनाथ तुम ! लेकिन यह क्या ? तुम तो एकदम सफेद हो गये हो !' पीछे मुड़ते हुए मैंने कहा।

"ही ही ही !" योगेन्द्रनाथ हंसा—झेंप भरी हंसी। 'नजला गिरता है, जी। आइए बैठिए !" और वह कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

"बैठे रहिए बैठे रहिए !" मैंने आग्रह किया। लेकिन वह माना नहीं। पास पड़ी चारपाई गिरा कर बैठ गया। मजबूरन मुझे कुर्सी लेनी पड़ी।

पांच साल में ही कैसा हो गया था योगेन्द्रनाथ कि उसे देख कर मुझे किसी बूढ़े का आभास हुआ। मेरा मन गहरी उदासी से भर उठा। शायद बहुत पढ़ लिख कर ही योगेन्द्रनाथ ऐसा हो गया हो।

मैंने पूछा बी टी कर ली न ?'

"जी कहां ! प्रभाकर भी नहीं कर सका।" योगेन्द्रनाथ की आवाज में गहरी उदासी थी।

'क्या ?" जैसे मैं आसमान से गिरा।

"क्या बताऊं जी !" योगेन्द्रनाथ पहले जैसी ही मरी मरी आवाज में बोला। 'उस साल मेरी पूरी तैयारी थी। फार्म वगैरा सब कम्पलीट। तभी बापू बीमार हो गये, जी, और दाखिले के पैसे बीमारी में उठ गये। बापू भी नहीं बचे।"

"बापू चल बसे ? कब ?' मैंने दुखी आवाज में पूछा।

"चार साल हो गये जी।' योगेन्द्रनाथ की आवाज कांप रही थी।

"अच्छा ! मुझे पता ही नहीं चला। बहुत अच्छे आदमी थे बहुत नेक !"

योगेन्द्रनाथ ने कोई उत्तर नहीं दिया। चुप बैठा रहा—सिर झुकाये। उसके चेहरे पर की झुर्रियों का जाल पहले से भी गहरा हो गया था और उसकी अन्दर को धसी बुझी बुझी आंखें आंसू के कारण धुंधला गयी थीं। मैं भी

चुप था। काफी देर तक दोनो चुप बैठे रहे, मानो महात्मा के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित कर रहे हो। फिर योगेन्द्रनाथ ने कहना शुरू किया "बापू के मरने पर मैं तो, जी, पागल ही हो गया था। समझ मे ही नही आता था कि क्या करू, क्या न करू। आप ही जरा सोचिए, जी, दो बहनें जवान ब्याहने लायक। छोटा भाई छठी मे पढ रहा था। ऊपर से डेढ़ हजार रुपये कर्ज। और मैं बिल्कुल अनजान ! मेरे तो, जी, होश ही गुम हो गये थे। लेकिन परमात्मा की दया से अब कुछ काम सीधा होने लगा है,जी। बडी बहन की पिछले साल मैरिज कर दी थी। रमेश इस साल मैट्रिक कर लेगा। रही छोटी, तो उसके लिए लडका ढूढ रहा हूँ, जी, इन सर्दियो मे उसका भी निबटारा कर दूगा। बस, जी, फिर खूब जी लगा कर पढूगा। आज ही अखबार मे पढा है कि पचास साल का एक आदमी बी ए की परीक्षा मे बैठा। मेरी तो, जी, अभी उम्र ही क्या है केवल छब्बीस साल। " वह लगातार बोले जा रहा था इस प्रकार, मानो रिकार्ड मे सुई लगा दी गयी हो और वह बज रहा हो। "बस जी, अगले अप्रैल मे प्रभाकर की परीक्षा अवश्य दे दूगा। उससे अगले अप्रैल मे एफ ए ओनली इग्लिश, फिर बी ए ओनली इग्लिश, फिर एक सब्जेक्ट और जी, फिर "

उसकी आवाज कुछ ऊची हो गयी थी और उसकी बुझी बुझी निर्जीव आखो मे जिंदगी की मामूली सी चमक लौट आयी थी। लेकिन उसका सत्तरसाला बूढा और झुर्रियो भरा पीला चेहरा,सफेद सिर, हड्डियो के ढाचे वाला शरीर कुछ और ही कह रहा था कुछ ऐसा, जो उसकी इन बातो से मिल कर मेरे अन्दर गहरी टीस भरता जा रहा था इतनी गहरी कि मेरा वहा बैठे रहना असम्भव हो गया।

'अच्छा चलू, तालाब तक घूम आऊ।" मैंने कहा और कुर्सी से उठ खडा हुआ।

काफी दूर आ जाने पर पीछे मुड कर देखा। वह मेज पर कुहनी टिकाये, कुर्सी पर जरा सा आगे को झुका बैठा था। ठुड्डी उसकी हथेली पर टिकी थी, आखें सामने दूर आकाश को एकटक निरख रही थी। शायद वह फिर सपनो म खो गया था।

यातना के पिंजड़े में

यह अचानक प्रकट हो गया था। रात ठंडी थी, इतनी ठंडी कि मुह से निकल रहे शब्द तक जम रहे थे। पजाब के उस गवई स्टेशन पर जीवन जैसे बिल्कुल सोया पड़ा था। यहा तक कि स्टेशन मास्टर के कमरे से निरंतर आने वाली टेलीग्राम यन्त्र की टिक टिक की ध्वनि भी बन्द थी। बेंच पर लेटा वह "साउथ वियतनाम— दि स्ट्रगल" पढता हुआ दिल्ली जाने वाली गाडी की प्रतीक्षा कर रहा था।—और न जाने उसकी आख कब लग गयी थी।

अचानक उसे सुनायी पड़ा "जा रहे हो ?"

उसने चारो ओर देखा। कही कोई नही। चिडिया का बच्चा तक नहीं। फिर आवाज कहा से आयी ? भूत है क्या ? दिल धक से रह गया। लेकिन साहस करके पूछा, "कौन हो भाई ? सामने आओ।"

"पहले बिजली बन्द कर दीजिए।"

'क्या ?"

'सहन नहीं होती। न जाने कितनी बार उन्होने मुझे बिजली के झटके लगाये हैं।   हे बुद्ध देव, रहम कर।"

आवाज बहुत ही दर्दीली और कमजोर थी। अत उठ कर उसने बिजली बुझा दी। जमा देने वाली सर्दी मे भी उसका शरीर पसीने से नहा उठा। धुधली रोशनी मे हाथ पैरो के बल रेंगता हुआ कोई जन्तु धीरे धीरे उसकी ओर बढ रहा था। बेंच के पास पहुच कर वह जन्तु कुत्ते की तरह हाथ पाव समेट और उस पर सिर टेक फर्श पर बैठ गया। वह विस्फारित नत्रों से उसे देखने लगा।

अजीब चीज थी वह, कुत्ते और आदमी का मिश्रित रूप ! शरीर उसका, जो सिवाय हड्डियो के ढाचे के और कुछ नही था आदमी का था, पर बैठा वह कुत्ते की तरह था। जिल्द उसकी जगह जगह से फटी हुई थी और उसमे से रक्त रिस रहा था। जुबान हाफ रहे कुत्ते की तरह बाहर निकली पड रही थी।

आराम से बैठिए, ऊपर आ जाइए।"उसने कहा।

"नही ठीक है। मैं इसी तरह बैठ सकता हू, सालो तक उन्होंने मुझे इसी तरह पडे रहने को बाध्य किया है।" और उसका शरीर देवता आये आदमी की तरह थर थर काप उठा। कुछ देर बाद कपकपी रुकी तो बेहद कमजोर

टूटती आवाज मे बोला—"क्षमा करना ! जब वे दिन याद आ जाते हैं, तो शरीर वस मे नही रहता।"

कुछ देर तक वह डरा डरा, सहमा सहमा खामोश बैठा रहा, फिर बोला, "आपको ढूढता मैं दूर से चला आ रहा हू।"

"मुझे ?"

"हा आपको। आप अफ्रेशियाई साहित्यकार सम्मेलन मे भाग लेने दिल्ली जा रहे हैं न ? आपको अपनी और अपने साथियो की व्यथा सुनाना चाहता हू। कहते हैं, आपके वाल्मीकि ने एक पक्षी की व्यथा देख कर रामायण लिख दी थी।"

और उसे खासी का जबरदस्त दौरा पड गया। काफी देर तक बुरी तरह खासते रहने के बाद उसने थूका, शायद खून। फिर पहले जैसी ही टूटी आवाज मे बोला, "हम पाच थे। सैगान के एक कालेज मे पढते थे। दूसरे असख्य देशवासियो की तरह हम भी चाहते थे कि गृहयुद्ध बद हो जाय, शाति छा जाय ताकि पढाई पूरी करके दूसरे स्वतन्त्र देशो के युवको की तरह हम भी अच्छे डाक्टर, वैज्ञानिक, लेखक और इजीनियर बन कर देश और मानवजाति की सेवा कर सकें। यही इच्छा लेकर हम सैगोन के उस प्रदर्शन मे सम्मिलित हुए थे। इसी अपराध पर उन्होंने हमे बन्दी बना लिया। बार बार बेहोश होने तक पीटा, बिजली के झटके लगाये, पानी मे गोते दिये, नाखूनो मे कीलें ठोकी।"

कुछ क्षणों तक वह मौन रहा। फिर बोला—

"वे हम से उन विमतकाग नेताओ के पते ठिकाने पूछ रहे थे, जिन्हें हम बिल्कुल नहीं जानते थे। लेकिन बाद मे पोलो कोडर मे हम पर जो बीती उसकी तुलना मे वे यातनाए ऐसी थी, जैसे गोली की चोट की तुलना मे प्यार की चपत।"

उसे फिर कपकपी और खासी का दौरा पड गया। पास ही कही किसी वृक्ष पर उल्लू बोला। दूर जगल मे गीदडो के बोलने की होऊ होऊ की ध्वनि सुनायी दी। रात का सन्नाटा भयानक हो उठा।

काफी देर तक खासते और कापते रहने के बाद उसने खून थूका और बोला " हिटलर के यातना शिविरो का हाल पढा था, लेकिन वह स्थान ! ३ मीटर लम्बा, १.५ मीटर चौडा लोहे की मोटी मोटी सलाखों वाला एक पिजडा था। कहते हैं वैसे वहा हजारो पिंजडे हैं। पाव बाध कर हम पाचो को उसमे ठूस दिया गया। ख्याल कीजिए पाच आदमियो के लिए ३×१.५ मीटर स्थान ! हमे हर समय लेटे रहना पडता था। यहा तक कि खाने और दूसरे नित्य कर्म करने के समय भी बैठने अथवा खडे होने की इजाजत नही

थी। एक दूसरे से हम एक शब्द तक नही बोल सकते थे, बहुत अधिक तकलीफ होने पर भी नही। इन नियमो का उल्लंघन करने पर (बहुत बार वे बहाना बना लेते थे) कैदियो पर वे टूट पडते और बेहोश होने अथवा मरने तक पीटते रहते।"

कुछ देर चुप रह कर वह फिर बोला, "बाद मे टाचर करने का उन्होने नया तरीका निकाला। पिंजडे की छत से वे धार बाध कर पानी सिरो पर फेंकते। पानी गोली की तरह गिरता। सिर भन्ना उठता। सास रुक जाती। मुह से भयानक चीख निकलती।

'हर आध घटे बाद वे यह अमल दोहराते रहते। ठडी हवा के झोके सीखचो मे से आते रहते। शरीर और कपडे हर समय पानी म सरा बोर रहते। शरीर बर्फ बने रहते। एक क्षण के लिए हम चैन न पडती। एक पल के लिए नीद न आती।

"उन्ही दिनो पानी की धार से सिर को बचाने के लिए सिर छाती के नीचे छिपा कर इस प्रकार उल्टे उकडू लेटने की कला सीखी थी।"

बाहर प्लेटफाम पर भारी बूटो की धमक सुनायी दी और वह सहम कर चुप हो गया। शायद उसे जेल के पहरेदारा की याद आ गयी थी। धमक दूर चली गयी तो उसने फिर कहना शुरू किया "बाद मे व पानी मे गन्दा तेल मिला कर फेंकने लगे। और बाद मे तो हद ही हो गयी। थोडी थोडी देर बाद वे सूखे चूने की बालटिया भर भर कर हमारे ऊपर फेंकते।

"चूना सीधा दिमाग और फेफडो मे जा घुसता। सास लेना दूभर हो जाता। खासी और छीको के भयानक दौरे पडते। लगता दिल फेफडे, अतडिया सब कुछ बाहर निकल पडेगा। शरीर की खाल जगह जगह से फट गयी और उसमे से खून रिसने लगा। कुछ दिनो बाद हम सभी ने खून थूकना शुरू कर दिया। और वह बात! हे बुद्ध देव रहम कर!" और वह फिर थर थर काप उठा।

"वह तो बताते हुए भी शर्म आ रही है।" काफी देर तक कापते रहने के बाद वह बोला।— हमे दिन मे दो बार खाने पीने को दिया जाता था। खाने के नाम पर दी जाती थी सडी गली मछली और ककर मिले चावलो की एक प्लेट और पीने के नाम पर आधा या तिहाई ग्लास पानी। मुश्किल यह थी कि खाना तीन मिनट मे पूरा करना होता था। हर समय हमे भूख प्यास बनी रहती। सूखे पत्ते, कागज, जो कुछ भी हमे मिलता, यहा तक कि कीडे-मकोडे तक, हम खा जाते।

"भूखे प्यासे रहने और लगातार यातनाए सहने के कारण हमारे शरीर सूख कर हड्डियों के ढाचे मात्र रह गये थे। हमारे बाल पक गये थे, दात टूट

गये थे और टागो को लकवा मार गया था। बडी तेजी से हम मौत की घाटी की ओर बढे चले जा रहे थे।

"वह बेहद गर्म दिन था। जून के सूय की तेज किरणें सीखचो मे से अग्निवाणो की तरह हम पर बरस रही थी। थोडी-थोडी देर बाद वे छत से चूना फेंकते। भयानक प्यास के मारे हमारे हृदय फटे जा रहे थे। अचानक हम मे से एक जो सबसे कमजोर था, धीरे धीरे सरक कर दरवाजे तक पहुचा और वह बतन जिसे हम नित्यकम के लिए प्रयोग मे लाते थे, उठा कर मुह से । बाद मे तो हम सभी पेशाब "

"बस, बस करो!" उसके मुह से अचानक चीख फूट पडी और वह उठ बैठा। 'साउथ वियतनाम—दि स्ट्रगल" नाम की पुस्तक उसके हाथ मे थी और उसका दिल बुरी तरह धडक रहा था। उसे अचानक आभास हुआ, अभी अभी हाथ पाव वे बन रेंगता कोई ज तु वेटिंग रूम से बाहर निकला है। उसका दिल बेहद भारी हो उठा। इतना भारी, मानो सारी दुनिया का बोझ उस पर धर दिया गया हो। बाहर प्लेटफाम पर कुछ हलचल शुरू हो गयी थी। गाडी आने का समय हो रहा था। गाडी जो उसे दिल्ली ले जायगी, जहा वह अफ्रेशियाई साहित्यकार सम्मेलन मे भाग लेगा। लेकिन क्या वह उन अभागो की व्यथा गाथा कभी लिख पायगा? इसके लिए तो कोई वाल्मीकि चाहिए, कोई गोर्की चाहिए, कोई प्रेमचन्द चाहिए, कोई हावड फास्ट चाहिए ।

●

अन्तरिक्ष यात्री

देख लेना, भारत का मैं पहला अन्तरिक्ष यात्री बनूगा। तुम लोग टेलीविजन पर मेरे चित्र देखा करोगे।

मैं गेट पर आ खड़ा होता हू। अन्दर लान खाली पड़ा है। बल्कि उजड़ा हुआ है। फूलो के पौधे सूख कर मिट्टी हो गये हैं। चारो ओर कूड़ा करकट बिखरा है।

पिछली बार आया था तो लान कैसा खिला दिख रहा था। फूलो से पागलपन की हद तक प्यार था कमल को। फूलो से ही क्यो, दुनिया की हर सुन्दर वस्तु से प्यार था उसे। फूल, पुस्तकें, अच्छे विचार, नये काम।

"देख लेना, भारत का मैं पहला अन्तरिक्ष यात्री बनूगा। तुम लोग टेलीविजन पर मेरे चित्र देखा करोगे।" वह प्राय कहा करता था।

गेट खोल कर मैं बरामदे की ओर बढ़ता हू। बरामदे म कुर्सिया हमेशा की तरह लगी हैं। पिछली बार, सुबह शाम यही पर बैठकें जमा करती थी। मुझे अचानक लगता है कमल बरामदे मे बैठा है। साथ बैठे हैं कई युवक युवतिया जोरो की बहस छिड़ी है।

तुम इसे क्राति कहते हो? क्राति का अर्थ समझते हो? क्रान्ति का मतलब है, समाज म उत्पादन के निम्न स्तर से उच्च स्तर तक साधनो पर अधिकार मे मेहनतकश वग के हक मे परिवतन—अर्थात पूजीवादी ढग म परिवतन। क्या यह प्रतिक्रियावादी पार्टियो और उनके सरपरस्त सेठ साहूकारो और बडे बडे जमीदारो के जरिये सभव है?

—तुमसे बात करना बेकार है। तुम लोगो ने हमेशा गद्दारी की है।

—आ गये न तानो पर। तकपूण बात करो।

—तक ही तो पेश कर रहा हू। क्या आप लोग इस बात से इकार करोगे कि देश मे भूख बेरोजगारी, महगाई और भ्रष्टाचार बेहद नही बढ गये हैं?

—इसमे कौन इकार करता है? 'सपूण क्राति' वालो को तो सताईस वष बाद अब इलहाम हुआ है कि देश मे भूख, बेकारी, महगाई और भ्रष्टाचार बहुत बढ गये हैं, जबकि ऐसे लोग भी हैं जो बहुत पहले से ये बातें कह रहे हैं। कहते ही नही इनके विरुद्ध सघष भी करते आ रहे हैं। दरअसल

'सपूण क्राति' का ढोल पीटने वाले देश के विकास के रथ को पीछे ले जाने के लिए केवल इन बातो का राजनीतिक इस्तेमाल करना चाहते हैं।

मैं बरामदे मे जा पहुचता हू। वहा कोई नही है। कुसिया खाली पडी हैं। उन पर धूल जमी है। लग रहा है कई दिनो से उन्हें झाडा तक नही गया है। अदर भी मुकम्मिल सन्नाटा है। मानो घर सो रहा हो या मर गया हो। पिछली बार, हरदम कैसी गहमा गहमी रहा करती थी यहा!

मैं दरवाजे के साथ लगा घटी का बटन दबाता हू। सुनसान घर मे घटी के घनघनाने की आवाज सुनायी पडती है, पर कोई हलचल नही होती। कुछ देर रुक कर फिर बटन दबाता हू। किसी के धीमे कदमो से चलने की आवाज और दूसरे ही क्षण आटी खुले दरवाजे मे खडी दिखायी देती हैं।

मेरे दिल मे जैसे छुरा घोप दिया गया हो। कैसी हो गयी हैं आटी! साठ साला बुढिया जैसी अभी कुछ महीने पहले तक लोग गलती से उन्हें कमल की बडी बहिन समझ लेते थे।

आगे बढ कर मैं आटी के पाव छूता हू और हम दोनो कमरे के अदर जा बैठते हैं।

वातावरण बेहद बोझिल है। आटी नजरें झुकाये खामोश बैठी हैं। उनके चेहरे पर बरसने के लिए तैयार बादलो जैसी उदासी की घनी घटाए छायी हैं। मैं भी चुप हू। समझ मे नही आ रहा कि क्या कहू।

कमरे मे कमल से सबधित सभी चीजें पूर्ववत रखी हैं। मैंटल पीस पर एक ओर कप और रिस्ट वाच पडी है, जो उसे 'मैं क्या बनना चाहता हू' नामक निबंध प्रतियोगिता मे राज्य भर के स्कूलो मे प्रथम आने पर मिली थी। दूसरी ओर मुशी प्रेमचद का 'गोदान' पडा है। यह उसे नौवी श्रेणी मे प्रथम आने पर मिला था। सामने वाली दीवार पर ग्रुप फोटो लगा है, जिसमे वह आगे बैठा मुस्कुरा रहा है।

—फोटो के साथ वह वर्दी टगी है, जिसे पहन कर कुछ महीने पहले उसने एक 'वैरायटी शो' मे भाग लिया था, जिसमें ऐसा लगता था, जैसे वह सचमुच का अतरिक्ष यात्री हो जो चद्रमा की सतह पर चट्टानें चुन रहा है। बारी बारी स सब पर मेरी नजर पडती है।

'हम तो लुट गये बेटा तबाह हो गये!' आटी की आवाज बेहद भर्रायी है।—"तुम्हारे अकिल को जमा करने की आदत नही थी। कहते थे, कमल पढ लिख कर कुछ बन जाय, समझ लो मुझे सारी दुनिया की दौलत मिल गयी "

कुछ देर रुक कर वे फिर कहती हैं— तुम जानते ही हो, पढने की कितनी लगन थी उसे!"

—"कालिज से एक दिन के लिए भी नागा नहीं करता था। उस दिन जाने लगा तो मैंने रोका। गडबड जो बहुत थी। पर वह नहीं रुका। कहने लगा परीक्षा मे न बैठने से साल बरबाद हो जायगा और फिर डर कर घर बठ जाने का मतलब होगा—गलत बात का समर्थन। चला गया। थोडी देर बाद खबर आ गयी ।"

और वे फूट-फूट कर रो उठती हैं। मेरे दिल पर छुरियां चलने लगी हैं। बडी कठिनता से मैं अपनी रुलाई रोक पाया।

'बेटा, मेरे पिता जी आजादी की लडाई मे मारे गये थे।" रो चुकने के बाद आंटी की आवाज बेहद उदास और ठंडी है—"हमें मुसीबतें तो बहुत उठानी पडी थी लेकिन उसे याद कर आज भी हमारा सिर फख्र से ऊंचा हो जाता है। इसमे तो वह बात भी नहीं है। किस लिए मारा गया मेरा बेटा ,किस लिए किया जा रहा है यह सब ? भ्रष्टाचार दूर करेंगे। अरे नासमझो ! बच्चो को स्कूलो, कालिजो मे जाने से रोकने से, उनकी हत्या करने से भ्रष्टाचार दूर होगा ! भ्रष्टाचार दूर करना है, तो कालाबाजारियो, गल्लाचोरो, जमीनचोरो, भ्रष्ट नेताओ और भ्रष्ट अफसरो का घेराव करो, उन्हें फासी पर लटकाओ "

आंटी बोलते बोलते अचानक रुक जाती हैं। उनके चेहरे पर दुख और चिंता की रेखाए और भी गहरी हो उठती हैं। साथ वाले कमरे से किसी के कर्कश स्वर मे चिल्लाने की आवाज आ रही है। "खोल मुझे, खोल ! क्यो बाधा है मुझे ? खोल मुझे ! मैं भी भ्रष्टाचार दूर करूंगा सब को खत्म कर दूगा। ठा ठा ठा धम ! हा हा हा धम ! बोलो संपूर्ण क्रांति की जय ! धम्म ! हा हा खोल मुझे ।"

आंटी उठ खडी होती हैं—'तुम्हारे अंकिल हैं। इनके मुह स कभी ऊंचा बोल तक नही निकलता था !" उनकी आवाज में बेइतहा पीडा है।

मैं भी उठ खडा होता हू और कमरे से बाहर आ जाता हू। मेरा दिल भारी है, बेहद भारी। मानो उस पर लाखो टन वजनी पत्थर धरा हो।

देख लेना, भारत का मैं पहला अंतरिक्ष यात्री बनूंगा"

अंकिल की कर्कश आवाज अब भी सुनायी दे रही है। "खोल मुझे, खोल ! मैं भी भ्रष्टाचार दूर करूंगा। ठा ठा धम ! "

●

कितनी रात और....

सामने मेज पर तीन कापिया पडी हैं और वह उनकी ओर एकटक देख रहा है।

दसवीं श्रेणी के विद्यार्थियों को उसने निबन्ध लिखने को कहा था 'मैं क्या बनना चाहता हूं'।

विद्यार्थियों ने निब ध लिखा था और वह उन्हें जांचने के लिए अपने घर ले आया था। उसी दिन शाम से शहर मे भयकर दगे भडक उठे थे। दगो की आग ठडी पडने पर आज कई दिन बाद स्कूल खुला था और कापिया उसने विद्यार्थियो में बाट दी थी। लेकिन ये तीन कापिया बच रही थी क्योंकि

कठोर उदासी का भयानक अजगर उसके पोर पोर को मजबूती से जकड लेता है और वह मणि छिने नाग की तरह कुर्सी से उठ कर कमरे में बेचैनी से चक्कर काटने लगता है। जिस दिन से शहर म दगे भडके हैं, यही दशा हो गयी है उसकी। हर समय दिल पर उदासी का भारी पत्थर रखा रहता है। लगता है, वह मर गया है, सारी दुनिया मर गयी है। किसी बात मे मन नहीं लगता। खाना खाने बैठता है, तो सब्जी म लाशें तैरती दिखायी देती हैं। आखें झपकती हैं कि भयानक सपने दिखायी देने लगते हैं। आग की हर लपट उसे चिता नजर आती है।

वह खिडकी में जा खडा होता है और सामने सडक की ओर देखने लगता है। सामान्य दिनो मे इस सडक पर आधी रात के बाद तक ट्रैफिक की इतनी भीड रहती है कि पार करने के लिए दस मिनट स कम समय नहीं लगता। लेकिन आज कर्फ्यू के कारण सडक नौ बजे ही वीरान हो गयी है। दोनों ओर थोडी-थोडी दूरी पर खडे बिजली के खम्भे हैं जिन पर चिताओं की तरह रोशनी जल रही हैं। उसे अपने रक्त में उदासी के विषैले कीटाणु और भी तेजी म बढ़ने महसूस होते हैं। झटके से वह खिडकी बद कर देता है, बत्ती बुझा देता है और चारपाई पर जा लेटता है। सोने का प्रयत्न करता हुआ वह सोचने लगता है—क्या कारण है कि एक ओर तो इन्सान ने इतनी उन्नति की है कि वह चांद सितारों तक जा पहुचा है दूसरी ओर वह इतनी मामूली सी बात भी नहीं समझ सका है कि जाति दूसरी होने, ईश्वर को किसी और नाम से याद करने पूजा दूसरा होने और त्वचा का रग भिन्न होने से इन्सान म भेद नहीं हो जाता।

खिड़की और दरवाजा बन्द होने के कारण कमरे मे गाढ़ा अंधेरा फैल गया है। लेकिन इस घुप अंधेरे मे भी वह मेज पर पड़ी कापियां साफ देख रहा है। तीनो कापियां एक जैसी हैं। तीनों पर खाकी कवर चढ़े हैं। तीनो पर अठकोने सफेद लेबल लगे हैं, जिन पर सुन्दर चमकदार अक्षरो मे छात्र का नाम, श्रेणी और स्कूल का नाम लिखा है।

अचानक कापियां गायब हो जाती हैं। अब मेज पर तीन सुन्दर फूल पड़े हैं। खूब खिले खिले तीन सुन्दर फूल। धीरे धीरे एक फूल की पखुड़ियां खुलने लगती हैं। फूल से एक नन्हा सा सुन्दर चेहरा झांक रहा है। चेहरा धीरे धीरे ऊपर उठने लगता है, ऊपर उठता जाता है।

अब मेज पर पन्द्रह सोलह साल का एक खूब स्वस्थ चुस्त तरुण लड़का एन सी सी की वर्दी पहने अटेंशन की मुद्रा मे खड़ा है। अब्दुल हमीद! हां, अब्दुल हमीद ही है। क्लास रूम मे जब भी वह किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए खड़ा होता था, तब इसी प्रकार सैनिक की तरह अटेंशन की मुद्रा में। सैनिक की तरह ही वही हलीमी, लेकिन ठनक भरे नपे-तुले शब्दों में बोलना था। अनुशासन प्रिय इतना कि देख कर हैरानी होती थी।

अब्दुल हमीद सैनिक की तरह सैल्यूट मारता है और उसकी ठनकदार आवाज कमरे मे गूंज उठती है। 'मेरा नाम अब्दुल हमीद है। लेकिन मैं वह अब्दुल हमीद नही हूं, जिन्होने पाकिस्तानी आक्रमण के समय वीरता दिखायी थी और शहीद हुए थे, जबकि मेरी बहुत इच्छा है कि मैं वैसा ही बनूं।

'मेरे दादा के दादा सन १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम मे उस समय के सबसे कुशल सेनानी तात्या टोपे के अधीन लड़े थे। मेरे दादा ने सन १६४२ के 'भारत छोड़ो' आंदोलन के समय कचहरी पर तिरंगा फहराते हुए पहली गोली खायी थी। मेरे पिता पाकिस्तानी आक्रमण के समय बरकी के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए थे। लेकिन फिर भी कुछ लोग कहते हैं कि हम देश के वफादार नहीं हैं क्योंकि हमारा सम्बन्ध एक विशेष मजहब से है। जीवन मे मेरी केवल एक ही इच्छा है यद्यपि है वह पागलपन भरी। मेरे प्यारे देश की स्वतन्त्रता का हनन करने के लिए यदि कोई आक्रमण करे, तो उसकी रक्षा के लिए पृथ्वी पर जो सबसे पहला शरीर गिरे वह मेरा हो।"

वह सैल्यूट मारता है, छलांग लगा कर मेज से नीचे उतरता है और लेफ्ट राइट लेफ्टराइट करता कोने मे जा खड़ा होता है। और क्षण भर मे ही दूसरे फूल से निकल कर उसी की आयु का काली, खोई खोई उदास आंखो वाला एक बहुत ही सुन्दर लड़का, जिसके काले लहरदार बाल उसकी पेशानी पर चिपके हुए हैं, उसके स्थान पर आ खड़ा होता है। वह जी एम पटेल है। श्रेणी का सबसे योग्य विद्यार्थी। किसी भी परीक्षा मे उसके ८० प्रतिशत से कम अंक

नही आते थे। क्लास मे उसके विद्वत्तापूर्ण प्रश्न सुन कर अध्यापक हैरान रह जाते थे।

जी एम पटेल दार्शनिक की तरह सोच मे डूबा डूबा कुछ देर खामोश खड़ा रहता है। फिर उसकी गंभीर सुरीली आवाज कमरे मे गूंजने लगती है "मुझे नही पता, मैं क्या बनना चाहता हू। गौतम बुद्ध ने एक लाश देखी थी, एक भिखारी, एक बीमार और एक बूढ़ा आदमी देखा था और जगल को चल दिये थे। आज शांति रक्षा के नाम पर हजारो लाखो की जनसख्या वाले नगर पूर के पूरे मिट्टी म मिला दिये जाते हैं आजाद व्यापार के नाम पर अनाज को गोदामो मे गाड कर पूरी की पूरी जाति को भिखारी बना दिया जाता है, धर्म के नाम पर लाखो करोडो आदमी मौत के घाट उतार दिये जाते हैं, लेकिन कोई गौतम जगल को नही जाता। मुझे नही पता, मैं क्या बनना चाहता हू। मेरी समझ म कुछ नही आ रहा।" जी एम पटेल चुप हो जाता है और मेज से नीचे उतर कर धीरे धीरे चलता हुआ अब्दुल हमीद के पास जा खड़ा होता है। और उसके स्थान पर मसीह आ खड़ा होता है। हमेशा की तरह मुस्कराता हुआ। मुस्कान उसके अधरो से कभी लुप्त नही होती थी। दगो मे एक लडकी की रक्षा करते समय जब एक धर्म रक्षक ने उसके पेट मे छुरा घोंपा था, तब भी वह मुस्करा रहा था। इतनी छोटी आयु मे इतने अच्छे व्यग्य लिखता था कि हैरानी होती थी।

ए पी मसीह मन्द मन्द मुस्काता हुआ कुछ देर खामोश खड़ा रहता है, फिर उसी शैली में, जिसमे वह स्कूल की पत्रिका के लिए व्यग्य लिखा करता था, बोलना आरम्भ करता है "दुनिया ने हमेशा मेरा मजाक बनाया है। मेरा पूरा नाम है अल्लाह प्रसाद मसीह। हिंदू, मुस्लिम और ईसाई तीनो नामो का समूह। इसी से पता चलता है कि दुनिया वालो ने मेरे साथ कितना मजाक किया है। मेरी प्यारी मा ने पैदा होते ही मुझे कूडे के ढेर पर फेंक दिया था। मेरा अपराध यह था कि मैं उसका विवाह होने से पहले ही इस दुनिया में प्रकट हो गया था। इस अपराध के कारण, जो कि निश्चय ही मैंने नही किया था, दुनिया ने कभी मुझे चैन से नही बैठने दिया। हमेशा मेरा अपमान किया, मेरा मजाक बनाया। इस अपमान का बदला चुकाऊगा मै। वाल्टेयर की तरह बहुत बड़ा व्यग्यकार बनूगा और दुनिया का मजाक उडाऊगा।"

वह मुस्कराता है, जैसे बादलो म बिजली चमकती है और अब्दुल हमीद तथा जी एम पटेल के साथ जा खड़ा होता है। अब वे तीनो साथ-साथ खड़े हैं। उसके सबसे प्यारे और सबसे योग्य तीन शिष्य। वह प्यार भरी नजरो से उनकी ओर एकटक देख रहा है। अचानक कही से एक छुरा प्रकट होता है और उनकी ओर बढने लगता है। हड़बड़ा कर वह बत्ती जला देता है। मर

की सी उदासी और चुप्पी से भरे कमरे के बीच मेज पड़ी है, जिस पर तीन कापियां रखी हैं, जिनके स्वामियों को साम्प्रदायिकता के जहरीले नाग ने डस लिया है। तभी उसे लगता है कि बत्ती के उजाले ने चारों ओर फैले विषादपूर्ण अंधेरे को और भी बोझिल तथा वीभत्स बना दिया है। घबड़ा कर वह फौरन बत्ती बुझा देता है। रात के घने अंधेरे में उसके ये शब्द तैरते रह जाते हैं

"उफ, अभी कितनी रात और बाकी है!"

वाड मे चादनी छिटक आयी। वही है सफेद वर्दी पहने, गोल पीले चेहरे पर बाल चन्द्र की चादनी जैसी मधुर मुस्कान छिटकाये, किसी देवी की मूर्ति सी पवित्र और शानदार।

नरेन्द्र ने आखें बन्द कर ली, क्योंकि वह जानता है कि वह पूछेगी कि अभी तक सोये क्यो नही और फिर नीद लाने की कोई दवाई पिला जायगी। लेकिन आज वह सोना नही चाहता, जागते रहना चाहता है—सारी रात जागते रहना चाहता है और पश्चाताप के उस दर्द को पूरी तरह भोगना चाहता है, जो कई दिनो से थोडा थोडा करके उसके दिल को तडपाता आ रहा है भट्टी की तरह धधकाता आ रहा है।

जिस औरत को कभी उसने लिखा था कि वह कुए मे डूब मरे, वही एक दिन अपना रक्त देकर उसके जीवन की रक्षा करेगी, कहा जानता था वह यह।

यह अनुमान करके कि वह वार्ड से चली गयी होगी, उसने आखें खोल दीं और ऊपर छत की ओर देखने लगा। आधी रात बीत चुकी है या शायद आधी से अधिक। बिस्तरो पर सोये अथवा बेचैनी से करवटें बदलते रोगियो, कुर्सियो और स्टूलो पर ऊघते कर्मचारियो को अपने विशाल उदर मे समेटे हुए अस्पताल गहरी नीद म पडा सो रहा है। कारीडोर मे लगे बल्व की रोशनदान से छन कर आती रोशनी छत पर फैल रही है। धीरे धीरे छत मानो सिनेमा हाल के परदे मे बदल जाती है, जिस पर सालो पहले के कितने ही भूले बिसरे चित्र आ आ कर उसकी आखो के आगे साकार होने लगते हैं।

बीस साल पहले शादी पर छूछकडे की रस्म। औरतें हलका बनाये खडी हैं। मध्य मे खडे हैं वर और वधू के रूप मे बारह तेरह साल का एक लडका और लाल कपडो मे लिपटी पाच-छ साल की गुडिया-सी लडकी। दोनो के हाथो मे शहतूत की ताजा छूछकें (छडिया) हैं। रस्म अनुसार दोनो को एक-दूसरे को छूछको से पीटना है। क्या मारे वह इस गुडिया को—लडका सोचता है। तभी वह गुडिया आगे बढ कर तीन चार छूछकें लडके को जड देती है। औरतें खिलखिला कर हसती हैं। कितनी तेज है बहू!

दूसरा दृश्य—दस साल पहले की एक रात। वह राओंटी (मकान की दूसरी मजिल) मे बैठा है खूब प्रसन्न और प्रतीक्षा करता हुआ। आज वह—

उस गुडिया को पहली बार देखेगा। पढ़ी लिखी तो वह है नहीं, देखने-सुनने में कैसी होगी ! शहर मे रहकर चल चित्रो द्वारा प्रथम मिलन के विषय म कितनी ही बातें जान ली हैं उसने। सब कुछ दोहरा रहा है वह मन ही मन। लेकिन उसे निराशा होती है जब एक गठरी सी आकर चुपचाप उसके साथ वाली चारपाई पर पड जाती है। क्रोध से उबलता हुआ वह भी रजाई ओढ कर लेट जाता है। लेकिन उसे चैन नही। थोडी देर बाद उठता है और आदेश भरे स्वर मे उस गठरी को अपनी चारपाई पर आने को कहता है। गठरी आ बैठती है। वह घूघट उठा देता है। घोर निराशा ! डरा डरा, रूखा साव के रग का गवार चेहरा, दायी आख में सफेद तिल। निराश सा, क्रोधित, सारी रात वह छत पर टहलता रहता है और फैसला करता है कि बिना छुट्टी समाप्त किये कल ही वह दिल्ली के लिए चल देगा।

और फिर गवारू भाषा मे लिखा एक पत्र।

पूज्य पति जी,

चरण व दना ! मैं यहा पर कुशलता से हू। आपकी कुशलता श्री भगवान जी से सदा शुभ चाहती हू। आगे समाचार यह है कि आप मुझे छमा (क्षमा) कर देवें और अपने पास बुला लेवें। मेरा दिल यहा बिल्कुल नही लगता। मैं तो अनपढ हू। आप पढ़े है, समझदार हैं। आप जानते ही हैं कि जिस औरत को उसका पति छोड देता है उसका फिर इस ससार मे कोई ठिकाना नहीं रहता। इसलिए आप से हाथ जोड कर प्रार्थना है कि आप मुझे अपने पास जरूर बुला लें। आप जो कहेगे मैं करूगी। जैसे भी रखेंगे रहूगी। आप चाहेंगे तो मैं पढ लिख भी जाऊगी।

आपकी दासी,

चन्द्र

फिर पहले की तरह लिखे दो और पत्र।

और फिर क्रोध मे लिखा पिता के नाम उसका एक पत्र, जिसम उसने लिखा था कि वे चन्द्र को फजूल के पत्र लिखने से रोकें और यदि चन्द्र का दिल घर म नही लगता तो उससे कहे कि वह जाकर किसी कुए म छलाग लगा ले।

और फिर दो साल बाद चन्द्र का मायके से आया वह पत्र, जिसे पढ कर उसे छुटकारे और क्रोध का एक साथ आभास हुआ था।

श्रीमान जी

आपके कहे अनुसार मैं कुए मे डूबने गयी थी, कि तु डूबी नही और न ही अब डूबूगी। जीवन इसान को जीने के लिए मिलता है और उसे इसे इस प्रकार जीना चाहिए कि मरते समय पश्चाताप न हो कि उसने इसे फजूल गवा

दिया। यह बात मैंने समझ ली है और यह भी समझ लिया है कि मेरी दुदशा का सबसे बडा कारण मेरा अनपढ होना है। मैं इसे दूर करूगी। मैं पढ़ूगी, चाहे कितनी ही रुकावटें क्यो न आयें और अपने पाँवो पर खडी हूगी।

खैर, छोडो इन वातो को। यह पत्र मैं आपको यह बताने के लिए लिख रही हू कि आप अपने को स्वतत्र समझ सकते है और यदि चाहे तो शादी करके अपने जीवन को सुखी बना सकते हैं। मेरी ओर से कोई रुकावट नही होगी।

चद्र

और फिर अतिम दृश्य। फैशनेबल पत्नी के बढे हुए खर्चों के कारण घर म हर समय मचे रहने वाले महाभारत से बचने के लिए वह कुछ दिनो के लिए गाव जा रहा था। बस ऊची-नीची, टेढी मेढी पहाडी सडक पर भागी चली जा रही थी, हिचकोले खाती हुई। अचानक एक जबरदस्त धक्का, मानो भूचाल आ गया हो। फिर असह्य पीडा, चीख पुकार, और, घुप अधेरा। न जाने कितने दिनो तक वह अधेरे और उजाले के झूले मे झूलता रहा था। अतिम बार जब उसे होश आया, तो उसने अपने आपको अस्पताल मे बिस्तर पर पट्टियो और पलस्तरो मे जकडे पाया। धीरे धीरे उसकी दशा सुधरने लगी और उसे सब कुछ ज्ञात हो गया। वह अपने गाव से कोई तीस मील दूर अपनी पहली सुसराल के गाव के साथ वाले कस्बे के अस्पताल मे पडा था। बस एक गढडे मे गिर कर उलट गयी थी। चार आदमी मर गये थे, अनेको जख्मी हुए थे। जख्मियो मे उसकी दशा चिताजनक थी। चद्र नाम की एक नर्स ने उसे बचाने के लिए अपना रक्त दिया था।

ये सब बातें उसे एक बूढे ने बतायी थी। बूढा उसके साथ वाली चारपाई पर बैठा था। उसकी अदर को धसी धुधली आखो म वात्सल्य झाक रहा था, मानो बेटी के विषय मे बातें कर रहा हो— चद्र बेटी तो हमारे लिए कोई देवी बन कर उतरी है। आप समेत तीन बार खून दे चुकी है। रोगियो की सेवा ही उसने अपना धर्म बना लिया है। किसी को दुखी देख कर इस प्रकार दुखी हो उठती है, मानो उसे ही चोट लगी हो। इसीलिए तो यह अस्पताल बीस बीस कोस तक चद्र के अस्पताल के नाम से मशहूर है। डाक्टरो को तो कोई जानता ही नही।

"और जो जुलम साइ का, ऐसी देवी लडकी को पति न छोड रखा है भाइयो ने भी घर से निकाल दिया। पर वाह री चद्र! हिम्मत नही हारी। अस्पताल मे माई का काम कर लिया। प्राइवेट तौर पर पढ कर मैट्रिक किया, फिर नर्सिंग की ट्रेनिंग की। आजकल सबसे बडी नर्स है वह अस्पताल म।"

भावातिरेक के कारण बूढ़े की आवाज कांप रही थी, आखें गीली हो आयी थी। नरेन्द्र को पहली बार शक हुआ कि कहीं यह चन्द्र उसकी पहली पत्नी तो नहीं है। और दूसरे दिन दोपहर को जब बूढ़े ने एक नर्स की ओर संकेत करते हुए कहा था कि यही चन्द्र है तब तो उसका शक तत्काल यकीन मे बदल गया था। शर्म से पानी-पानी हो उठा था वह। किस प्रकार सामना कर पायगा वह चन्द्र का। उसने तो एक दिन उसे कुए मे डूब मरने को कहा था।

लेकिन यह सामना बहुत आसानी से हो गया। टेम्परेचर लेती, बाल चन्द्र की चादनी जैसी अपनी मधुर मुस्कान द्वारा रोगियो के दुखी दिलो पर बर्फ का फाहा रखती, वह इस प्रकार गुजर गयी थी, मानो कोई बात ही न हो—मानो उसे जानती ही न हो। नरेन्द्र का दिल पश्चाताप के अथाह गर्त मे जा गिरा था। कितनी बड़ी गलती की उसने ! चन्द्र जैसी हीरा पत्नी को पत्थर समझ कर फेंक दिया। कितना नीच है वह ! स्वार्थी ! कितना सताया उसने चन्द्र को बिना कारण ही ! काश वह गलती ठीक हो सकती ! उसकी जबर दस्त इच्छा होती कि वह चन्द्र से क्षमा माग ले। फिर सोचता—नहीं, यह तो और भी बडी गलती होगी। चन्द्र तो देवी बन चुकी है। ईर्ष्या, क्रोध, शत्रुता क्षमा, इन सबसे ऊंची उठ चुकी है—बहुत ऊंची। अपने नाम को बिल्कुल सार्थक कर दिया है उसने। सही मानो मे चन्द्रकिरण बन गयी है वह—चाद की किरण जो शत्रु और मित्र का कोई भी विचार किना किये सबको एक सा प्रकाश और शीतलता प्रदान करती है। क्षमा मागना उसका अपमान करना होगा।

एक चीख की आवाज ने उसका ध्यान भग कर दिया। वार्ड के दूसरे सिरे पर कोई रोगी जोर जोर से चीख रहा है। कॉरीडोर मे हलके कदमो की आवाज सुनायी देती है। चन्द्र आ रही है—चेहरे पर मा की सी अथाह करुणा लिये वह तेजी से चली आ रही है। रोगी की चीखें कम होती जा रही हैं। मिटती जा रही हैं। ऐसा ही होता है। चन्द्र का देवी का सा करुणामय चेहरा देख कर ही रोगी का आधा दुख दूर हो जाता है।

●

दीवारें बोलती है

मैं कब्र म लेटा हू। हा कब्र ही तो है यह। छह फुट लम्बी, छह फुट चौडी, कठिनाई से सात फुट ऊची। ऊबड खाबड फर्श, हवा और रोशनी आने के लिए रोशनदान और खिडकी के नाम पर ऊपर तीन चार चौकोर सूराख—क्या कहेगे और आप इस अधेरी कोठरी को!

रात आधी से अधिक बीत चुकी है, किन्तु मुझे नीद नही आ रही। शायद नया होने के कारण अभी इस कब्र का अभ्यस्त नही हो पाया हू। रह रह कर वह भयानक घटना आखो के सामने घूम जाती है। दिल डर रहा है। लग रहा है, अभी छह नर ककाल किसी कोने से निकल कर मेरे सामन आ खडे होगे। चारो ओर गहरा सन्नाटा है—इतना गहरा कि मुझे अपने दिल की धडकन साफ सुनायी द रही है। इस गहरे सन्नाटे को तोडता हुआ किसी कोने मे एक भीगुर बोलने लगता है—पिप—पिप पी-इ। मैं कान उधर लगा देता हू और उसकी वीणा जैसी आवाज स लोरी का काम लेता हुआ सोने का प्रयत्न करता हू। धीरे धीरे मेरी आखें मुदने लगती हैं। नीद का नशा गहरा होता जाता है। अचानक एक आवाज सुनायी देती है, "सुनो! सुनो! सुनो!"

मैं हैरानी से अधेरे मे देखता हू। आवाज कहा से आयी? दरवाजा तो अन्दर से बन्द है फिर अन्दर कैसे आ गया कोई? मेरी सासें तेज चलने लगती हैं।

आवाज फिर सुनायी देती है। ऐसी आवाज, मानो कमरे म कही रेडियो रखा हो और वह मद्धिम आवाज मे बोल रहा हो।

"कौन बोल रहा है?'—मैं साहस बटोर कर पूछता हू।

"दीवारें।' उत्तर मिलता है।

'दीवारें? क्या मतलब?"

"इसी कमरे की दीवारें।"

मैं हैरान रह जाता हू। "तुम बोलती भी हो?"

हा, लोगो के विचार मे तो दीवारो के केवल कान होते हैं। लेकिन दीवारो की आखें भी होती हैं, जबान भी होती है, दिल भी होता है और जब स हमने वह घटना अपनी आखो से देखी है हमारा हृदय फटा जा रहा है। जी चाहता है, किसी को अपनी व्यथा सुना कर दिल हलका कर लें। लेकिन कोई नही सुनता, कोई भी नही। तुम सुनोगे? "

"हा मैं सुनूगा," मैं उत्तर देता हू, "क्योंकि मैं स्वय दुखिया हू, घर स दूर हू और मुझे नीद नही आ रही है।"

थोडी देर तक दमघाट खामोशी छायी रहती है, फिर आवाज आनी शुरू होती है "तो फिर सुनो, तुम स पहले इस कमर मे छह प्राणियो का एक परिवार रहना था "

'छह प्राणिया का परिवार! वह कैसे ? इसम तो एक आदमी भी ठीक से नही रह सकता।"

'देखा, जिरह मत करो। सुनते जाओ। हम एक शब्द भी झूठ नही बाल रही हैं।'

'अच्छा फिर कहती जाओ।"

'हा, तो इस कमरे म छह प्राणिया का एक परिवार रहना था। एक मर्द एक औरत और चार बच्चे। मर्द का नाम मगू था, औरत का काटो, बच्चा के भी इसी तरह के उलटे सीधे नाम थे। मगू का परिवार पजाब के किसी गाव से उजड कर यहा आया था। उस गाव में मगू की थोडी सी जमीन थी, मकान था। कुछ जमीन वह बटाई पर जोत लेता था। बहुत कठिन जीवन था उसका। दुखो, परेशानियो, लगातार बढ रहे कर्ज और जीवनापयोगी वस्तुओ को जुटाने की चिताओ स लदा। लेकिन मगू जिये जा रहा था किसी एसी रोशनी की किरण की आशा मे जो अकस्मात आ कर उसके जीवन को जगमगा देगी। लेकिन वह किरण कभी नही आयी। उलटे समय व्यतीत होन के साथ साथ उसके जीवन मे अधेरा ही बढता गया।

"स्वतत्रता प्राप्ति के बाद देश ने एकदम उन्नति करनी आरम्भ कर दी। मगू के गाव का बनिया भी उन्नति करने लगा और कुछ ही सालो मे उसने मगू की जमीन, हल बैल, मकान—सब कुछ कर्ज के बदले हडप लिया और मगू बेचारा एक मजदूर बन कर रह गया।

"यह न समझना कि यह सब हम अपनी ओर से कह रही हैं। हम तो वही कह रही हैं, जो हमने देखा है या समय-समय पर पति पत्नी की बातें सुन कर परिणाम निकाला है।

"गाव छोडने के बाद मगू पहाडगज मे एक हलवाई की दुकान पर नौकर हो गया था। उसे साठ रुपये मासिक वेतन मिलता था। काफी रात गये वह घर लौटता। थका हारा। आखें घुए और नीद के कारण लाल। चेहरा काला। काटो खाना तैयार किये बैठी प्रतीक्षा करती होती। वह खाना खाता और लेट जाता। लेकिन चिंता और अधिक थकावट होने के कारण काफी देर तक उसे नीद न आती। बिस्तर पर यानी जमीन पर बिछी चिथडे चिथडे हुई दरी पर लेटा वह करवटें बदलता रहता।

"फिर भी मगू अभी मरा नही था, जीवित था—क्योंकि वह अभी तक सपने देखता था। अच्छी जिन्दगी के सपने। वह बच्चो को अनपढ़ नही रखेगा, पढ़ायगा—खूब पढ़ायगा। पढ़ कर बच्चे दफ्तरो मे नौकर हो जायेंगे। तब उसके पास रहने के लिए अच्छा घर होगा, पहनने के लिए अच्छे कपडे होंगे, खाने-पीने की चीजो की भी कमी न होगी। कितना सुखद जीवन होगा तब ! हो सकता है तब वह गाव जाकर अपनी जमीन भी वापस खरीद ले।

'लेकिन धीरे धीरे मगू के ये सपने धुधले पड़ते गये और अन्त मे बिल्कुल ही मिट गये। जब वह यहा आया था तो परिवार मे तीन प्राणी थे, फिर चार हुए फिर पाच और फिर छह। महगाई भी इस दौरान बढती ही गयी। बच्चो को पढ़ाना तो अलग रहा, परिवार के लिए दो जून का खाना जुटाना भी मगू के लिए असम्भव हो गया। वह उदास रहने लगा खामोश। यदि कोई बुलाता तो काटने को दौड़ता। अकारण ही बच्चो और पत्नी को पीट देता। घर क्या था, पागलखाना बन गया था।

"उधर, साल दर-साल बच्चा जनने और गृह कलह के कारण काटो का स्वास्थ्य बिगड़ गया। उसे हल्का ज्वर रहने लगा। खासी भी थी। बाद मे खासी के साथ खून आने लगा।

'घर का ढाचा धीरे धीरे बिल्कुल ही बिखर गया। मगू बच्चो और पत्नी की देखभाल करे तो काम पर कैसे जाय ? काम पर न जाय तो गुजारा कैसे हो ?

"उन्ही दिनो मगू को नौकरी से जवाब मिल गया। काटो को टी बी अस्पताल मे ले जाने के लिए उसने गल्ले से कुछ रेजगारी निकाल ली थी।

"अरे यह क्या ! तुम अभी से रोने लगे ! अभी तो बहुत कुछ सुनना शेष है। इसके बाद की दशा का वर्णन करना कठिन है। मगू तो जैसे पागल ही हो उठा था। बात-बेबात वह पागलो की तरह बच्चो को पीट देता और फिर पागलो की तरह स्वय रोने लगता। काटो से तो अब बिस्तर से उठा भी नही जाता था। घर मे जैसे कोई भूत आ घुसा हो, जो लगातार घर की चीजें उठा-उठा कर कही ले जा रहा हो।

"वह एक भयानक बरसाती रात थी। काली और आधी तूफान वाली। आगे जो भयानक घटना घटने वाली थी, शायद उसका उसे आभास मिल गया था और वह बिफर उठी थी।

'रात काफी बीत चुकी थी। कई शाम के बाद आज घर मे चूल्हा जला था। खा पीकर बच्चे सो गये थे। काफी देर तक खासते रहने के बाद काटो की भी आख लग गयी थी। पर मगू जाग रहा था। दीवार से पीठ लगाये बैठा वह एकटक छत की ओर देख रहा था।

"शाम को मकान मालिक आया था। बस हर हालत में किराया अदा कर देने या मकान खाली कर देने की धमकी देकर चला गया था। तब से मगू इसी तरह बैठा था—बिना कुछ बोले, बिना हिले-डुले। छत की ओर देखते हुए।

"अचानक वह उठा और काटो के सिरहाने जा खड़ा हुआ। उसकी आंखों का जल उसकी दाढ़ी को भिगो रहा था। शायद उसे वह दिन याद आ रहा था, जिस दिन काटो पहले पहल उसके घर आयी थी। कितनी सुन्दर थी वह तब। और अब! वह झुका और बेतहाशा उसकी पेशानी, सूखे गालों और छाती को चूमने लगा। काफी देर तक वह उसे चूमता रहा, फिर एकाएक उसके दोनों हाथ दायरा बना कर उसकी सूखी गर्दन के गिर्द जा पड़े। दायरा तंग होने लगा। सांस रुकने की आवाज, एक अमानुषिक चीख, सन्नाटा! और फिर मगू बच्चों की ओर बढ़ा।

"हम थर थर कांप उठीं। हमें लगा, भूचाल आ गया है जबर्दस्त भूचाल और अब सब कुछ तहस-नहस हो जायगा। सब कुछ समाप्त हो जायगा। पर नहीं, यहां तो कुछ भी नहीं हुआ था। एक पत्ता तक नहीं हिला था। छह चिराग गुल हो गये थे और कहीं एक बत्ती न बुझी थी।'

× × ×

अचानक मेरी आंखें खुल जाती हैं। सारा शरीर पसीने से तर-बतर है। दिल धक धक कर रहा है। आंखें गीली हो रही हैं। शायद मैं सपने में रोया हूं। दिल गहरी उदासी में डूब रहा है। लग रहा है, मगू मैं ही था और ये सब मेरे ही साथ घटा है और मैं मर चुका हूं। काफी देर तक उदास, करवटें बदलता हुआ बिस्तर पर लेटा मैं सोने का प्रयत्न करता रहा।

जब किसी तरह भी नींद नहीं आयी, तो उठा और दरवाजा खोल कर बाहर आ गया। नजरें ऊपर आकाश पर टिकाये खुद से यही सवाल करता रहा हूं कितनी रात शेष है अभी, कितनी?

जीवन दीप जलता रहे

रात्रि का आकाश घने काले बादलो से ढका था। हवा धीरे-धीरे बह रही थी। थोडी थोडी देर बाद बिजली चमकती, तो एक क्षण के लिए किसी नाटक का कोई रोमाटिक दृश्य सा आखो के आगे घूम जाता।

यो, अभी आठ ही बजे थे, किन्तु गाव की बरसाती शाम आधी रात का दृश्य उपस्थित कर रही थी।

मैं और हेडमास्टर बाबू रामलुभाया स्कूल के बाहर चारपाइयों पर बैठे थे। मैं उसी दिन वहा आया था और सामने भाखडा नगल की बत्तियो की ओर एकटक देखता हुआ घर वालो के विषय में सोच रहा था। बाबू रामलुभाया खामोश बैठे हुक्का गुडगुडा रहे थे। अचानक तालाब के किनारे भक से कोई चीज जल उठी।

"छलावा !" मेरे मुह से निकला।

"नही, छलावा नही है पगली है।" बाबू रामलुभाया बोले।

"पगली !"

"हा !—इसी गाव की एक बूढी औरत है। हर रोज तालाब के किनारे दिया जलाती है। झक्खड चल, चाहे वर्षा हो—इसके नियम मे कोई बाधा नही पडती। पच्चीस साल से ऐसा कर रही है।"

"अच्छा !"

"हा।" और मेरे बहुत कहने पर बाबू रामलुभाया ने तालाब मे मढको के टर्राने, आसपास झाडियो मे बीडो के बोलने के मधुर सगीत के साथ मुझे पगली की कहानी सुनायी।

× × ×

पगली का असली नाम भागवती है, किन्तु भाग्य हमेशा उसके प्रतिकूल रहा। जब वह अठारह वर्ष की थी हैजे से पति की मृत्यु हो गयी। गोद मे था तब एक साल का बीरू। एक दिन आधी रात के समय सोये हुए बीरू को गोद मे उठा कर वह तालाब मे डूबने गयी थी। कमर तक पानी मे पहुची, तो बीरू जाग पडा और किलकारिया मारने लगा। भागवती लौट आयी। उस दिन सारी रात जाग कर भागवती ने निर्णय किया, मरेगी नही वह जिन्दा रहेगी—अपने बीरू के लिए, पति की एक मात्र निशानी के लिए!

और, कुछ दिनो बाद भागवती के घर से प्रात सूर्य निकलने से पहले से

ले घर आधी रात के बाद तक बपने सीन वाली मशीन के चलने की आवाज सुनायी देने लगी। सिलाई के लिए आया कपड़ा का ढेर गोबरलिप फर्श पर पड़ा रहता।

मशीन चलती रही। बीरू बड़ा होता गया। वह स्कूल जाने लगा। चौथी पास करने के बाद कस्बे में जाकर अंग्रेजी स्कूल में दाखिल हो गया। गाव का वह पहला लड़का था जो अंग्रेजी पढ़ने लगा था। भागवती के लिए ये दिन जिन्दगी के सबसे सुहाने दिन थे। जिस किसी औरत को बुला कर कहती, 'जी! दई! आवो! पता है, हमारा बीरू बाबा वाली जवान (मस्ट्रल) पढ़ने लगा है। अब बाब को बुलाने की कोई जरूरत नहीं है। हम ही बुला लिया करो। लाट साहब की भाषा भी पढ़ता है वह।"

आठवी के बाद भागवती बीरू की पढ़ाई जारी न रख सकी। आगे पढ़ाने के लिए बीरू को तहसील भेजना पड़ता। कहां से जुटाती भागवती वाहिंग का खर्चा! उसकी इच्छा थी कि बीरू सेनीगारी करे या आसपास कहीं छोटी मोटी नौकरी कर ले। किन्तु बीरू महत्वाकांक्षी युवक था। उसकी इच्छा कुछ बनने की थी। और उस समय थोड़े पढ़े लिखे ग्रामीण युवक के लिए अपनी महत्वाकांक्षा पूरी करने का एक ही मार्ग था—सेना में नौकरी।

बीरू के जाने के बाद भागवती की दशा बछड़ा छिनी गाय जैसी हो गयी। सारे दिन वह आंगन में चारपाई पर उदास लेटी रहती। पोस्टमैन को देखते बीसो चक्कर फकीर की दूकान के लगाती। खाने पीने कपड़े लत्ते, किसी बात में भी उसकी रुचि नहीं रह गयी थी।

रंगरूटी समाप्त करने के बाद बीरू छुट्टी पर आया। भागवती के लिए जैसे महीनो की अंधेरी रात के बाद दिन निकला हो। उसके जैसे पर उग आये हो। दिन रात वह भौंरे की तरह बीरू के आगे पीछे फिरती रहती।

बीरू छुट्टी काट कर चला गया। भागवती के घर फिर अंधेरा छा गया। किन्तु अब उसे एक काम मिल गया था। बीरू के लिए अच्छी सी लड़की ढूंढना। कल्पना के इन्द्रधनुषी पखो पर सवार वह घूघट निकाले सारे दिन आसपास के गावो मे घूमती रहती। महीनो की दौड़धूप के बाद आखिर उसे दुमेटे गाव के एक अवकाश प्राप्त हवलदार की लड़की पसन्द आ गयी। बात पक्की हो गयी।

किन्तु तभी दूसरी बड़ी लड़ाई शुरू हो गयी। बीरू को समुद्र पार भेज दिया गया। भागवती ने अनेको पत्र लिखे, बीसो तार अफसरों के नाम भेजे, किन्तु बीरू को छुट्टी न मिली।

अब भागवती के जीवन का केवल एक ही आधार था। बीरू के पत्र। पोस्टमैन बीरू का पत्र ला कर देता तो उसे लगता मानो किसी ने उसे सारी दुनिया की सम्पदा ला कर दे दी है। कुछ दिन बीरू का पत्र न आता तो वह

बेचैन हो उठती। वह चाहती, बीरू का पत्र रोज आये।

एक बार ऐसा हुआ कि बहुत दिनो तक बीरू का कोई पत्र न आया। भागवती की दशा गम रेत पर फेंकी मछली जैसी हो गयी। नगे मुह ही वह पोस्टमैन का पता करने बार बार फकीरे की दुकान के चक्कर लगाती रहती।

आखिर भागवती के नाम पत्र आया। कि तु बीरू का नही सरकारी पत्र सरकार ने उसे सूचना दी थी कि उसका बेटा लापता है। इस सूचना ने भागवती को बिलकुल ही मुर्दा बना दिया। वह पागल हो उठी। पीरो फकीरो और ज्योतिषियो के घरो के चक्कर लगाने लगी। एक नामी ज्योतिषी ने बताया, "बीरू शत्रु की कैद मे है। उसे कोई नुकसान नही पहुच सकता। ग्रहो का शा त करने के लिए उसे रोज तालाब के किनारे दिया जलाना चाहिए।"

अब भागवती के दिन मे केवल दो ही काम थे। बीरू के पत्र की प्रतीक्षा करना और शाम को तालाब किनारे जा कर दिया जलाना। दिन गुजरते गये—कई साल गुजर गये। लडाई समाप्त हो गयी। एक दिन भागवती के नाम एक सरकारी पत्र आया, जिसमे उसके पुत्र के दुश्मन कैद मे वीरगति को प्राप्त होने की सूचना दी गयी थी। साथ मे पेंशन के कागजात भी थे।

पत्र सुन कर भागवती स्तब्ध रह गयी, पत्थर! मानो उस पर बिजली गिरी हो। क्या हो गया यह? कैसे हो गया? ज्योतिषी का कहना गलत था गया?

बिना कुछ खाये पीये, बिना किसी से बोले, बिना आसू बहाये, बिना राय, कई दिनो तक भागवती पत्थर बनी अ दर चारपाई पर पडी रही। फिर एक दिन लोगो ने हैरानी से देखा, वह पहले की तरह ही श्रद्धापूवक तालाब किनारे दिया जलाने जा रही है। क्या हो गया है बुढ़िया को? किस लिए जा रही है अब तालाब किनारे दिया जलाने? क्या पागल हो गयी है मा?

इस बात को बीस साल से अधिक समय हो गया है। भागवती का जीवन तालाब किनारे दिया जलाने तक ही सीमित है। किसी भी दूसरी बात म उसकी रुचि नही। शाम को तालाब किनारे दिया जलाना उसका पक्का नियम बन गया है। वर्षा, आधी, बीमारी—कोई बात भी इस नियम म बाधा नही डाल सकती।

कभी कभी पास पडोस के बच्चे उसे छेडते हैं। 'पगली! पगली!" पुकारते वे उसका पीछा करते हैं। पर भागवती गालिया देने के बजाय उन्हे आशीष देती है—"तुम युग युग जीओ! तुम्हारा बाल भी बाका न हो!"

दुनिया के किसी कोने म जब कभी लडाई भडक उठती है तो भागवती वहुत बेचैन हो उठती है। खाना, पीना सोना—सब भूल जाती है। न जाने किस से क्या-क्या प्रार्थना करती वह तालाब किनारे रात भर दिया जलाये बैठी रहती है, मानो यही उसका जीवन दीप हो।

एक वीतरागी के नोट्स

छोटू का पत्र आये बहुत दिन हो गए हैं। उसकी माँ चिन्ता कर रही थी। मैंने कहा, "भली लोके, चिन्ता करना फजूल है। वह बिल्कुल ठीक है। इसान जब मजे में होता है, तो घर पत्र लिखना उसे याद नहीं रहता, लेकिन जब मुसीबत में फसता है, तो एकदम पत्र लिखता है।" इस पर वह ताने देने लगी कि मैं घर वालों की चिन्ता नहीं करता। मैंने हँसते हुए उत्तर दिया, "भली लोके, अपनी सतीस साल की उम्र में मैंने इतनी चिन्ता की है कि मेरे सिर पर यदि तू एक बाल भी काला दिखा दे, तो मैं अपनी जेब में पड़ा दम पैसे का एकमात्र सिक्का तुझे इनाम में दे दूंगा। अब जब मुझे चिन्ता होती ही नहीं, तो क्या करूं।" इस पर वह मुझे और भी कोसने लगी।

× × ×

मेरी बात बिल्कुल ठीक निकली। छोटू का आज पत्र नहीं, तार आया। कोई अवैध काम करते पकड़ा गया है। पत्र सुनकर उसकी मां रोने लगी, लेकिन मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसकी हरकतों से मुझे पहले ही लग रहा था कि वह एक दिन अवश्य खानदान का नाम उजागर करेगा। बिना काम किये अमीर बनने की उसकी जबरदस्त इच्छा थी। उसकी मां जिद करने लगी कि मैं एकदम जाऊं और उसे छुड़ा कर लाऊं। मैंने कहा, "भली लोके, जाने को तो मैं अब तक चला गया होता। लेकिन आने जाने का किराया, जमानत वगैरा का खर्च कम से कम पाच सौ रुपया होगा। हम सब अपने को और अपने इन लड़कों को बेच भी दें, तब भी इतना पैसा नहीं जमा हो सकता। हां, तूने अगर कहीं दबा रखा है तो निकाल।" इस पर वह और भी अधिक रोने लगी। हार कर मैंने मकान गिरवी रख कर सौ रुपये का मनीआर्डर छोटू के मामा के नाम, जो उसी शहर में नौकरी करता है भेज दिया और लिख दिया कि वह छोटू की जमानत करवा दे। बाद में अपना केस वह स्वयं लड़ता फिरेगा।

× × ×

बारह वर्ष तक जंगल में घोर तपस्या के बाद महात्मा बुद्ध पर जीवन का सत्य प्रकट हुआ था। सतीस साल इस दुनिया में रहने के बाद मुझ पर भी एक सत्य प्रकट हुआ। इस दुनिया में केवल पागल आदमी ही खुश रह सकता है। निक्की को उसके पति ने छोड़ रखा है। कहता है, निक्की सुंदर नहीं है

और फूहड है। लेकिन असल बात यह है कि हम उसे काफी दहेज नही दे पाये हैं। निक्की के ससुराल वालो को यदि आज काफी मात्रा मे दहेज दे दिया जाय, तो निक्की एकदम अद्वितीय सुदरी और सुघड बन जाय। बेचारी तीन साल से यहा पडी है। पहले वह हर समय लम्बी-लम्बी आहें भरती रहती थी। रात दिन मे कम से कम बीस बार अवश्य रोती थी। लेकिन इधर कुछ दिनो से उसकी दशा मे परिवर्तन हुआ है। वह मे ढेर सारी रेत उठा लायी है। कोने में बैठी उसके घरौंदे बनाती और तोडती रहती है। और आप ही आप मुस्कराती रहती है। न किसी से बोलती है न कुछ। खाने को जब दे दिया, जितना दे दिया खा लिया। नही दिया तो हरि इच्छा। श्रीमती जी जिद पकडी हैं कि मैं उनका इलाज करवाऊ। मैं कहता हू, "भली लोके, इसका इलाज कराने की कोई आवश्यकता नही है। इस हाल मे यह बिल्कुल सन्तुष्ट है। मान लो, इलाज करवाने पर यह ठीक हो गयी और पहली दशा मे आ गयी, तो फिर जो यह हर समय लम्बी लम्बी आहें भरती रहेगी, और दिन रात टसुए बहाती रहेगी, उसका तू क्या इलाज करेगी बोल ? "

मेरा उत्तर सुन कर श्रीमती जी इस प्रकार मेरी ओर देखने लगती हैं, माना मैं भी पागल हो गया हू।

× × ×

बापू की चारपाई आज मैंने सराय मे डाल दी। न जाने क्या बात है, बुढऊ का सारा शरीर ही जैसे पेट बन गया है। हर समय खाऊ खाऊ लगाये रखते हैं। उधर श्रीमती जी हैं कि दूसरे से तीसरा फुलका नही देना चाहती। परिणामस्वरूप दिन रात दोनो मे चख चख लगी रहती है। वैसे भी हमारी अंधेरी कोठरी म इतनी जगह कहा कि हर समय दो चारपाइया डली रहें और श्रीमती जी के फिर चारपाई पर पडने के दिन आ रहे थे। वह काम जो श्रीमती जी करने जा रही हैं, किसी के सामने हो भी नहीं सकता। अत मैंने बापू की चारपाई सराय म डाल दी।

चारपाई डाल कर मुडने लगा, तो बुढऊ बोले, 'बेटा, एक घटी भी पहुचा देना। रोटी पानी की जरूरत पडने पर बजा दिया करूगा।" स्पष्ट है बूढे ने व्यग्य किया था। सकेत इसी से मिलती जुलती एक लोक कथा की ओर था। लेकिन मुझ पर प्रभाव नही पडा। मैंने उत्तर दिया, "वह भी हो जायगा बापू। जरा पैसा आने दो कही से हाथ मे।"

× × ×

शिमला के पास कहो कोई वृद्धाश्रम है, जिसमे ऐसे बूढा के मुफ्त रहने-खाने का प्रबध है, जिनका इस दुनिया मे कोई नही होता और जो बिल्कुल काम नही कर सकत। गाव के सरपच से तसदीक करवा कर कि वे लावारिस हैं, हमारे बुढऊ ने वहा जाने के लिए आवेदन पत्र दिया है।

यह बात मुझे मेरे प्रतिद्वन्द्वी रलिया राम ने बतायी। बताते समय रलिया राम के चेहरे पर दुख और वैराग्य के ऐसे भाव थे, मानो वह अभी आत्महत्या कर लेगा अथवा सन्यास ले लेगा—जबकि बताने का उसका असल मकसद मुझे चिढ़ाना और मेरा दिल दुखाना था। लेकिन दुखने के बजाय मेरा दिल एकाएक उत्साह से भर उठा और मैं बूढ़े की उसके साहसिक निर्णय पर बधाई देने एकदम सराय जा पहुंचा। मुझे देखकर बुढ़ऊ ने इस प्रकार सिर घुटनों में छिपा लिया, मानो उन्होंने बहुत बड़ा अपराध किया हो। मैंने कहा, "बापू इसमें शरमाने की कोई बात नहीं। हर इन्सान को अधिकार प्राप्त है कि जहां उसे अच्छा लगे, रहे। रही यह बात कि आपने हम आठ प्राणियों को जीते जी मार दिया है तो इसमें भी कोई बुरी बात नहीं, क्योंकि वास्तव में इस संसार में कोई किसी का है ही नहीं।"

× × ×

बापू आज वृद्धाश्रम चले गये। रात चपरासी आ गया था। सुबह ही बुढ़ऊ नहा धो, काली अचकन और सन्तरी पगड़ी पहन इस प्रकार ऐंठ कर खड़े हो गये थे मानो ससुराल जा रहे हों। बस आने पर सबसे पहले सवार हो गये थे, लेकिन थोड़ी देर बाद नीचे उतरे और माथे के आगे हाथ रखकर एकटक घर की ओर देखने लगे। शायद वह उस मकान को, जिसमें वह बचपन से रहते आये थे, अंतिम बार, जी भर कर देख लेना चाहते थे—या शायद उन्हें अब भी आशा थी कि कोई उन्हें रोकने आयगा।

मुझे देख बुढ़ऊ सकपका गये और फौरन बस के अन्दर चले गये। थोड़ी देर बाद सर से बस हमारे सामने से निकल गयी। घुटनों में सिर दिये लाश की तरह उन्हें सीट पर पड़े देख मेरे दिल में शंका उत्पन्न हुई—बुढ़ऊ सही सलामत वृद्धाश्रम पहुंच भी सकेंगे? लेकिन तभी अपने प्रतिद्वंद्वी रलिया राम को शरारत से मुस्कराते देख मैं ऐसे बन गया था, मानो कोई बात ही न हुई हो और दुगने उत्साह से ताश खेलने में जुट गया। दस मिनट में ही रलिया राम से मैंने दो बाजी जीत ली थीं।

लेकिन शीघ्र ही मेरा उत्साह ठंडा पड़ गया और मैं चार बाजी हार गया। तब मैंने ताश नीचे फेंक दिये, दुकान बन्द कर दी और घर की ओर भाग पड़ा था। घर पहुंच कर अंधेरी कोठरी से बीवी बच्चों को बाहर निकाल मैं स्वयं अन्दर हो गया और अन्दर से कुंडी चढ़ा ली—क्योंकि मैं जान गया था कि वीतरागी होने का लौह कवच, जो मैंने अपनी आत्मा को पहना रखा था आज टुकड़े टुकड़े हो जायगा। और बहुत प्रयत्न करने पर भी मैं घंटों अपनी रुलाई नहीं रोक पाया—नहीं रोक पाया। ●

समय के चरण

कम्मो मकान के दूसरे तल्ले मे अपनी सहेलियो से घिरी बैठी थी। नीचे उसके विवाह की तैयारिया हो रही थी। पर वह इनसे वेखवर खामोश बैठी सामने दीवार की ओर देख रही थी,—जिस पर भेड को ले जाते हुए एक कसाई का चित्र उभर उभर आता था।

तब वह कोई आठ साल की थी। एक भेड ने बच्चा दिया था, वर्फ सा सफेद और रेशम-सा नम। वह बच्चा उसे बहुत प्यारा लगता था। हरदम वह उस गोद मे उठाये रहती। रात को साथ ही सुलाती। उसने उसका नाम भी रख दिया था—सुन्दरी। सुन्दरी जब बडी हुई तो वह उसे जगल म चराने ले जाने लगी। और तभी एक दिन लाल आखो और लम्बी मूछो वाला एक भयानक आदमी आया। उसने सुदरी को खूब अच्छी तरह देखा। बापू स मोल भाव किया, जेब से निकाल कर कुछ नोट बापू को दिये और सु दरी को लेकर चलता बना। रोती रह गयी थी वह। उस चित्र स बचने के लिए उसने अपना ध्यान उधर स हटा लिया और दरवाजे मे से सामने पहाडो की ओर देखने लगी। इन पहाडो के पीछे दूर कही दिहनी है। और उसके मानस पटल पर उस गहा नारी म बिताये दिनो की अनेक यादे उभर आयी।

× × ×

सर्दियो की एक उदास शाम थी। बहन बहनोई बच्चो सहित डिस्पेसरी गये थे। क्वाटर का दरवाजा अन्दर से बन्द किये अगीठी के पास बैठी वह स्वेटर बुन रही थी। अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई। उठ कर उसने दरवाजा खोला। सामने चौबीस पच्चीस साल का एक खूब गोरा स्वस्थ नौजवान खडा था। 'पडित मुशी राम जी हैं घर पर ?' नौजवान की बोली मे पहाडी बोली का पुट था, जिससे कम्मो जान गयी कि वह भी उन्ही के ही इलाके का है।

'जी नही डिस्पेंसरी गये हैं।'

'आयें तो कहना, कल २४० नम्बर मे हमीरपुर सुधार सभा की बैठक है। जरूर बोल देना।'

× × ×

२४० नम्बर म हमीरपुर सुधार सभा की बैठक हो रही है। लान म तीस पतीस आदमी दरियो पर बैठे हैं। वह बहन के साथ अपने क्वाटर के बाहर धूप म बैठी देख रही है। एक के बाद दूसरा आदमी उठ कर भाषण रहा

है। किसी ने कहा, हमारे गाव मे स्कूल होना चाहिए। किसी ने कहा, हमारे गाव तक पक्की सडक होनी चाहिए। कोई बोला, हमें अमुक कस्बे म अस्पताल की माग करनी चाहिए। वह कुछ ऊब सी उठी। तभी वह नौजवान, जो पिछले दिन उनके घर आया था बोलने के लिए खडा हुआ।

कम्मो के कान अकस्मात उधर लग गये। वह कह रहा था—'हमने बहुत सी समस्याओ पर विचार किया, लेकिन एक समस्या है, जिस पर हम म स किसी का भी ध्यान नही गया है। वह समस्या है, हमारे इलाके म लडकियों का खरीदा और बेचा जाना। बडे दुख की बात है कि अब भी, जबकि हमारा देश आजाद है और यहा सविधान की ओर से औरत मर्द सब को एक-से अधिकार प्राप्त हैं, हमारे इलाके म लडकिया को भेड-बकरियो की तरह खरीदा-बेचा जाता है।'

कोई दस मिनट तक वह बोलता रहा। लोगो ने बडे ध्यान से उस की बातें सुनी। जब उसने बोलना बन्द किया तो लोगों न तालिया पीटी। इस के उपरान्त सब ने प्रण किया कि वे इस कुप्रथा को मिटाने में समाज की हर प्रकार सहायता करेंगे।

× × ×

कम्मो को रमेश (यही नाम था उस नौजवान का) की बातें बहुत अच्छी लगी और वह उसे बधाई देने के लिए अवसर खोज रही थी। आखिर एक दिन उसे अवसर मिल ही गया। उसकी बहन के लडका हुआ था और वह उनके घर बधाई देने आया था।

'बधाई हो!' दरवाजा पार करते हुए चेहरे पर मधुर मुस्कान लाते हुए उसने कहा।

'आप को भी!' कम्मो ने कुर्सी सरकाते हुए उत्तर दिया—'बैठिए।'

वह कुर्सी पर बैठ गया था। कई क्षण तक कोई कुछ नही बोला, फिर कम्मो ने झिझकते झिझकते कहा था, 'आप ने उस दिन बहुत अच्छी बातें कही बहुत ही अच्छी!'

तुम्हे पसन्द आयी?'

'बहुत,' कम्मो की झिझक अब कुछ कम हो गयी थी। 'आप सोलह आने सच बोल रहे थे। न जाने इस कुप्रथा के कारण बेचारी कितनी लडकियो की जिंदगी रोज बरबाद होती है। बहन को ही देख लो।" यह कहते हुए उसका गला भर आया।

रमेश भी उदास हो उठा। उस ने कहा—'बिल्कुल ठीक। लेकिन अब और अधिक देर यह कुप्रथा नही चल सकती। जसे जैसे स्त्रियो मे जागृति आयगी वैसे-वैसे यह कुप्रथा समाप्त होती जायगी। तुम पढी हो?'

'जी नही, हमारे गाव मे स्कूल ही कहा है ?'

'तुम्हे पढना चाहिए। पढ लिख कर ही कोई इसान बनता है। अच्छा अब चलू।'

और दूसरे ही दिन वह बाजार से हिंदी बोधमाला पहला भाग खरीद लायी थी। महीने भर के कठिन परिश्रम के उपरान्त वह एक एक शब्द जोडकर पुस्तक पढने योग्य हो गयी थी।

रमेश को उसकी प्रगति देख कर आश्चर्य होता था। वह कहता—'तुम्हारा दिमाग बहुत तेज है कम्मो ! एक साल मे ही तुम रत्न और भूषण तो क्या, प्रभाकर तक पास कर सकती हो।'

लेकिन प्रभाकर पास करना कम्मो के भाग्य म कहा लिखा था ! चार माह मे ही कम्मो दिल्ली मे अनचाही हो गयी और एक दिन उसका बहनोई उस गाव छोडने चल दिया। जाते समय रमेश ने कहा था, 'भूल न जाना, कम्मो ! याद रखना कि दिल्ली मे भी तुम्हारा कोई है।'

कम्मो के मुह से एक लम्बी सद आह फूट पडी।

× × ×

नीचे सहसा शोर उठा, बारात आ गयी, बारात आ गयी। सब लोग अपना अपना काम छोड कर बारात देखने भाग खडे हुए। कम्मो के पास बैठी सहेलिया भी उठ कर चल दी। कम्मो अकेली रह गयी।

बाजे बजने का स्वर क्रमश तेज होता जा रहा था। कम्मो की छाती म एक हूक सी उठी, मानो भीतर, बहुत भीतर, कोई तेज आरी स चीर रहा हो। बाजे गाजे, खुशिया, किसलिए ? जिस दिन कसाई भेड के उस बच्चे को ले गया था, उस दिन तो कोई खुशिया नही मनायी गयी थी, कोई बाजे नही बजे थे। तो क्या वह वास्तव म ही भेड है ? उसने अपने आप से प्रश्न किया और उसकी आखो के सामने कुछ दिन पहले का एक दृश्य घूम गया।

दिल्ली से लौटने के कोई दो सप्ताह बाद की बात है। उस दिन घर मे कुछ मेहमान आये थे। उसे नये कपडे पहन कर उनके लिए चाय लेकर जाना पडा था। चाय देते समय उसने अनुभव किया था कि एक—जो कि आयु मे उस के बापू से कुछ ही कम होगा—उसकी ओर विशेष ध्यान से देख रहा है। बिल्कुल उसी तरह जिस तरह उस कसाई ने भेड के उस बच्चे को देखा था।

चाय देकर लौटते समय बातें सुनने के लिए वह दरवाजे से लगकर खडी हो गयी थी। बापू कह रहा था—'दो हजार स कौडी कम नही। ब्याह का खच अलग। हजार हजार की तो लडकी की एक एक आख ही है। देख लो ।'

वह तिलमिला उठी। नही, वह भेड नही है कि उसके अग अग का मूल्य-

आवा जाय। यह जुल्म वह कभी बर्दाश्त नही करेगी, कभी नहीं! विरोध करेगी वह इसका!

विरोध करेगी! जैसे अब तक विरोध किया ही नही है। कई-कई दिन खाना न खाने के कारण सूख कर काटा हुआ यह शरीर, माथे पर का यह जख्म रमेश को केवल एक पत्र लिखने (जो कि पकडा गया था) के अपराध में पीठ पर पड़ी छडियो के निशान—क्या जाहिर करते हैं ये सब? पर बना क्या? कुछ भी नही। और अब तो कुछ करने का समय ही कहा था। बारात दरवाजे पर आ चुकी थी।

× × ×

बारात खाना खाने बैठी थी। अचानक अन्दर से एक खबर उडती उडती आयी—लडकी का कुछ पता नही चल रहा है।

तलाश शुरू हो गयी। नदी, नाले, खोडिया, जहा कही भी ऐसी दशा में एक गरीब बसहारा लडकी शरण ले सकती थी—सभी देखे जाने लगे, पर कम्मो कही नही मिली।

तीसरे दिन डाक से कम्मो के बापू को कम्मो का एक बैरंग पत्र मिला। टूटी फूटी हिन्दी में उसमे जो कुछ लिखा था, वह इस प्रकार था—

'प्यारे बापू!

मैं जा रही हू क्योकि मैं भेड बकरी नही हू, जिसे खरीदाबेचा जाय। मैं स्त्री हू और स्त्री की तरह ही रहना चाहती हू। पर बापू, घबराना नही! तुम्हारी कम्मो कोई ऐसा काम नही करेगी जिससे खानदान की इज्जत को बट्टा लगे। ऐसा काम करने से पहले वह मर जायगी। एक तेज चाकू उसने अपने पास रख लिया है। बापू, कही दूर जाकर मैं नौकरी कर लूगी, पढूगी और अपनी जिन्दगी को अच्छा बनाने की कोशिश करूगी। अच्छा प्रणाम!'

आप की पुत्री,
कम्मो

ककाल

यह दिल्ली शहर के एक सु दर पाक मे बेंच पर बैठा था—खूब सतुष्ट और प्रसन्न ! प्रसन्न वह इसलिए था, क्योकि आज उसने दिल्ली का हर देखने योग्य स्थान देख लिया था। लालकिला देखा था पुराना किला देखा था, कुतुब मीनार देखी थी, राष्ट्रपति भवन और ससद भवन देखा था, और दखा था आधुनिक रजवाडा का बाजार कनाट प्लेस। अब उसके मित्र उसे घरघुस नही कह सकते—वह सोच रहा था। अब वह भी कह सकता था कि उसने दिल्ली देखी है सारी दिल्ली !

शाम घिर रही थी। नीद से अभी अभी जागा पाक अपने सजग कानो से वार्तालापो के भोडे स्वरो, मर्दों औरतो और बच्चो के मिले जुले कहकहो, गाली गलौज और प्रेम भरी बातो को सुन सुन कर खुश हो रहा था। वह बेंच पर बैठा दिन भर देखे दृश्यो को अपनी कल्पना की आखो म एक बार फिर देख रहा था। अचानक कोई चीज उसके कानो के आगे से मक्खी की तरह भिनभिनाती गुजर गयी। बेंच से कुछ दूर एक अत्यन्त कमजोर मैले फटे कपडों वाला बूढा खडा भोडेपन से मुस्करा रहा था।

"क्या माल है तुम्हारे पास ? तुम तो बिल्कुल खाली हो।" उसने भोलेपन से पूछा।

बूढा उसके पास बेंच पर आ बैठा। "नये नये आये हो दिल्ली, शायद !" वह मुस्कराया।

"हा, पिछले महीने आया हू।"

"अकल्ले (अकेले) हो ?"

'जी।"

'तब तो आपको और भी अधिक लोड (आवश्यकता) होगी बिल्कुल कच्चा माल है सरसो की कच्ची गदल जैसा।"

उसकी इच्छा हुई कि वह इस बेशर्म बूढे को एक ऐसा थप्पड दे कि पाक से बाहर जा कर गिरे। कैसी बातें कर रहा है—मानो सब्जी के विषय म बात कर रहा हो ! किन्तु दूसरे ही क्षण उसकी जिज्ञासु प्रकृति ने जोर मारा। देखें तो सही, क्या होता है। और वह बूढे के साथ जाने को तैयार हो गया।

× × ×

मेन रोड छोड कर वे एक गली मे घुस गये। वह बूढे के पीछे पीछे चल

रहा था। उसे चलने मे बहुत असुविधा हो रही थी। गली बहुद तग थी। बीचो बीच गदी नाली बहती थी, जिसका पानी फैल कर सारी गली का कीचड से भर रहा था। गदी नाली से उठ रही दिमाग को फाड दन वाली बदबू स बचने के लिए एक हाथ से नाक पर रूमाल रखे, दूसरे से पट ऊपर उठाये, वह पजो के बल, बहुत सभल कर चल रहा था, क्योकि गली म या तो स्थान-स्थान पर टट्टी पडी थी या गदे कमजोर नगे बच्चे बैठे टट्टी कर रहे थे। हैरान था वह बेहद हैरान और दुखी ! कहा आ पहुचा वह ? क्या यह भी दिल्ली की ही कोई बस्ती है ? उसे एक धार्मिक पुस्तक मे पढा नरक का दृश्य याद आ रहा था रक्त, पीब, गन्दगी और आग की नदिया और उनम पडी कीडो की तरह बलबलाती, भट्टा की तरह भूनी जाती, आरा से चीरी जाती और गिद्धो से नोची जाती, पीडा से तडपती रूह।

एक स्थान पर नाक पर रुमाल रखे होने के बावजूद उसे लगा कि उसका दिमाग फट जायगा। गली के दाहिनी ओर गद पानी का जोहड था। जोहड के एक किनारे पर गदगी का बहुत बडा ढेर पडा था। सुअर, कुत्ते और मुर्गिया खुराक के लिए, नग धडग बच्चे और अधनगी आवारा औरतें चीथडो के लिए उसे कुरेद रही थी।

× × ×

जोहड के दूसरे दोनो किनारा पर फूस की छोटी छोटी सुअरा के बाडो जैसी कोठरिया बनी थी। बूढे ने उसे एक म ले जा कर चारपाई पर बैठाया और स्वय उससे पाच रुपये का नोट लेकर रफू चक्कर हो गया।

झोपडी बिल्कुल खाली गदी और सीलन भरी थी। घुटन बदबू और गर्मी के कारण उसका दम घुट रहा था। वह वहा से भाग जाने की सोच रहा था कि अचानक झोपडी के मध्य टगा टाट का मैला स्थान स्थान से फटा परदा हिला और एक बूढी औरत हा, शक्ल से बूढी ही लगती थी वह आयु भले ही उसकी तेरह चौदह साल से अधिक न हो बीमारो की तरह धीरे धीरे चलती हुई उसके पास चारपाई पर आ बैठी। वह फासी के तख्ते पर लटकाये जाने वाले आदमी की तरह डरी हुई थी।

उसके दिल में जैसे किसी ने बरछी घुसा दी हो। उसे लगा वह चारपाई पर नगा बैठा है और उसके सिर पर घडो पानी उडेला जा रहा है। क्या देखने आया था वह यहा ? वह चारपाई से उठने को हुआ कि बूढी बच्ची के शब्द तीर की तरह उसके सीने मे चुभे "मत जाइये, बाबू जी मत जाइये! आपके पाव पडती हू। न जाने मेरी जली शक्ल का क्या हुआ है। सभी इसी तरह चले जाते हैं और बाबा मुझे पीटते है।'

और पीछे घूम कर उसने जम्पर ऊपर उठा दिया। वह तिलमिला

उठा। पीठ पर मार के कितने ही निशान थे। क्रोध से पागल हो उठा वह। कतल कर देगा वह इस जालिम बूढे का, रक्त पी जायगा उसका! बूढे को ढूढ़ने चारपाई से उठ कर वह तेजी से बाहर की ओर लपका और दरवाजे के बाहर खडे बूढे से टकरा गया। बूढे के एक हाथ मे डबल रोटी का पैकिट था और दूसरे हाथ से वह डबल रोटी के टुकडे लगातार हडपता जा रहा था। उसने शायद सारी बातें सुन ली थी, क्योकि इससे पहले कि वह कुछ कहता, तेजी से आगे बढ़ कर, बूढे ने टाट का परदा उठा दिया। वह स्तब्ध रह गया। परदे के पीछे भूमि पर चार लाशें पडी थीं एक औरत की और तीन बच्चो की। लेकिन नहीं, वे लाशें नही थी, क्योकि बूढे के हाथ मे डबल रोटी देखते ही उन नर ककालो म हरकत हुई और वे भूतो की तरह उठ बठे और सुअर के बच्चो की तरह चीं चीं करते हुए डबल रोटी के लिए हाथ पाव मारने लगे।

वह खामोश खडा था पत्थर का बुत!

o

कुटिल जी की देश सेवा

श्री कुटिल जी चिंतन करने बैठे कि अदर से आवाज आयी, "बेटा कुटिल, देश की कोई विशेष सेवा किये बहुत दिन बीत गये हैं, जल्दी ही कुछ करो।"

आवाज आने के दो कारण थे। पहला यह कि कुटिल जी फुरसत मे थे। वे आयात निर्यात का धधा करते थे। निर्यात करते थे भगवान शकर की बूटी स तैयार किये गये एक मादक पदार्थ का। आयात करते थे सोने चादी का। कुछ समय से सरकार ने यह धधा करने वालो के विरुद्ध सख्ती करनी आरम्भ कर दी थी। कुटिल जी सरकार के इस कार्य से बहुत दुखी हैं। बिल्कुल निकम्मी और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक चीज के बदले व देश म सोना-चादी लाते थे। देश की इस महान सेवा के बदले उन्हे राष्ट्रपति की ओर से भारत रत्न की उपाधि मिलनी चाहिए थी। पर सरकार उन्हें जेल मे डालने की सोच रही थी। परिणामस्वरूप उनका धधा ठप्प हो गया था। अत वे फुरसत मे थे और इसलिए सरकार से बहुत नाराज थे।

दूसरा कारण यह था कि देश भक्तों की पाच साल बाद जो परीक्षा होनी है, वह नजदीक आ गयी थी, जिसके लिए तैयारी करनी जरूरी थी।

यहा कुटिल जी का थोडा परिचय दे देना ठीक रहेगा।

कुटिल जी पचपन वय के मझले कद और गोरे रग के व्यक्ति हैं। शरीर अच्छी खुराक और कसरत के कारण मजबूत है। आवाज मे कडक भी है।

कट्टर धार्मिक व्यक्ति हैं प्राचीन सस्कृति को मानने वाले दल के बडे प्रातीय नेताओ मे से एक हैं। राजाओ (भूतपूर्व) और सेठो को प्यार करते हैं। जनतत्र को ठीक नही समझते, हालाकि चुनाव लडते हैं।

उनके अनुसार आधुनिक विश्व मे केवल चार देश ही प्रशसा योग्य हैं— अमरीका, पश्चिमी जर्मनी, जापान और इस्राइल।

कम्युनिस्ट, उनके विचार म देशद्रोही और अधर्मी हैं। अत उनके कट्टर दुश्मन।

× × ×

श्री कुटिल जी विशेष कमरे म बैठे मनुस्मृति का अध्ययन कर रहे थे कि सफेद कमीज, खाकी निक्कर पहने, एक चुस्त सुदर किशोर ने आकर किसी के आने की सूचना दी।

कुटिल जी ने किशोर को उस 'किसी' को एकदम अदर भेज देने का

आदेश दिया और थोडी देर बाद हट्टे कट्टे जिस आदमी ने हाथ जोडे कमरे मे प्रवेश किया, वह चेहरे मोहरे और वेश भूषा मे अपराधी सा लगता था।

"क्या नाम तुम्हारे केस के विषय मे हम कल मजिस्ट्रेट साहब से मिले थे। चिंता न करो सब ठीक हो जायगा।" कुटिल जी ने ठडी रोबदार आवाज म कहा।

अपराधी-सा लगने वाला आदमी आजिजी से मुसकराया।

"और देखो क्या नाम हम तुम्हें पार्टी का एक अत्यत आवश्यक काम सौंप रहे हैं। हम तुम पर सबसे अधिक विश्वास है, इसलिए।" कुटिल जी की आवाज ठडी रोबदार होने के साथ साथ भेद भरी भी हो उठी थी।— क्या नाम काम अत्यत गोपनीय है। इतना गोपनीय कि दाहिना हाथ करे, तो बायें को पता न चले। यह रहा तुम्हारा इनाम। क्या नाम अपने केस म लगाओ। काम तुम्हे वर्मा जी (सचिव) बता देंगे।"

× × ×

उस दिन मदिर के पुजारी कुटिल जी के साथ खाने पर आमन्त्रित थे। कुटिल जी मदिर कमेटी के प्रधान हैं पुजारी जी सवेतनिक कमचारी।

'क्या नाम सुनाओ पुजारी जी कैसे चल रहा है?' खाना खा चुकने के बाद पान चबाते हुए कुटिल जी बोले।

"आप की कृपा से और तो सब ठीक है कुटिल जी लेकिन "

लेकिन क्या? क्या नाम कोई विशेष बात है क्या? कुटिल जी ने व्यग्रतापूवक कहा।

'कुटिल जी, दो दिन पहले एक अजीब घटना घटी" पुजारी जी उदास रहस्यमय आवाज मे बोले।—"मदिर के सहन मे एक अपवित्र वस्तु पायी गयी। न जाने कोई चील कौआ फेंक गया था "

"अरे! क्या कहा? अपवित्र वस्तु पायी गयी? राम राम राम!" कुटिल जी ऐसे लहजे म बोले, जैसे उन्हें एकाएक किसी अजीब बात का पता चला हो, हालाकि इस रहस्य के सूत्रधार वह स्वय थे। इसीलिए कुटिल जी यद्यपि बडी नाटकीयता स आखें फैलाये थे, तथापि उनके होठो के कोने पर अनायास एक कुटिल मुस्कराहट खिच गयी थी, जिसे वह भरसक दबा रहे थे।

'क्या नाम यह तो बहुत बुरी बात है पुजारी जी। आप को उसी दिन बताना चाहिए था। जरूर किसी ने शरारत की है। क्या नाम आपको सावधान रहना चाहिए, बहुत सावधान रहना चाहिए। मदिर की पवित्रता ही असल वस्तु है। आपको रखा भी इसी के लिए गया है नही तो पूजा तो कोई भी कर सकता है। यज्ञ की पवित्रता की रक्षा के लिए ही तो राम ने ताडका

का वध किया था। क्या नाम यदि आप मंदिर की पवित्रता की रक्षा नहीं कर सकते, तो छुट्टी कीजिए। क्या लाभ आपको रखने का। क्या नाम आप तो जानते ही हैं कि कमेटी में सदस्य पुजारी रखने के बिल्कुल विरुद्ध थे। हमारे बहुत कहने पर ही माने "

× × ×

अहमद साहब इलाके के बड़े जमींदार हैं। १९४७ से पहले वे लीग के अनुयायी थे। अब गैर-कम्युनिस्ट किसी भी दल में सुविधानुसार शामिल हो जाते हैं। बिरादरी में काफी धाक है। आजकल उनकी सहानुभूति कुटिल जी की पार्टी से है।

कुटिल जी को देख अहमद साहब खुशी से उछल पड़े।—"आइए, आइए! तशरीफ लाइए! अमा यार कुटिल साहब, आप तो ईद के चाँद हो गये।"

"क्या करें, क्या नाम समय ही नहीं मिलता," कुटिल जी तख्तपोश पर बैठते हुए बोले "कहिए, कैसे चल रहा है?"

अमा यार चलना क्या है। बुरा हाल है।" अहमद साहब ने ठंडी साँस भरी। "मजदूर मजदूरी ज्यादा चाहते हैं, काम कुछ करते नहीं। बटाईदार न जमीन छोड़ते हैं, न बटाई पूरी देते हैं। खाद, डीजल, पानी—सब महँगा और गेहूँ सरकार को सस्ते दामों बेचो। ऊपर से हदबंदी का चक्कर। नोटिस आ रहे हैं—इतने एकड़ से ज्यादा जमीन क्यों है आप के पास? लीजिए, पान नोश फरमाइए—'

इब्तदा ए इश्क है आगे-आगे देखिए होता है क्या।" पान चबाते हुए कुटिल जी ने शेर पढ़ा। "क्या नाम जनाब अभी तो सरकार कम्युनिस्टों के प्रभाव में आयी ही है। देखते जाइए क्या होता है। क्या नाम हर वस्तु पर सरकार का अधिकार हो जायगा।"

"बजा फरमाते है, बिल्कुल बजा फरमाते हैं।" अहमद साहब ने समर्थन किया।

"क्या नाम अहमद साहब, हमें तो इन कम्युनिस्टों से सख्त नफरत है।" कुटिल जी आगे बोले।—"कहते हैं सभी व्यक्ति समान हैं। क्या नाम हाथ की पाँचों उँगलियाँ तो समान नहीं, फिर सभी व्यक्ति कैसे समान हो जायेंगे? किसी धर्म जाति को नहीं मानते। क्या नाम अधर्मी लोगों का कौन विश्वास करे! अहमद साहब, आप दूसरे मजहब को मानने वाले हैं पर क्या नाम हम आपकी बेहद इज्जत करते हैं, क्योंकि आप अपने मजहब पर पक्के हैं। क्या नाम अपने मजहब के लिए आप कुछ भी कर सकते हैं।'

बिल्कुल।" अहमद साहब ने कहा, 'मैं अपनी जान तक दे सकता हूँ।"

× × ×

काफी रात गुजर गयी थी। चारों ओर गहरा सन्नाटा। कुटिल जी के

सचिव वर्मा जी ने अंधेरी गली की एक दुकान में बिल्ली की तरह प्रवेश किया। वहां अपराधी-सा लगने वाला हट्टा कट्टा आदमी दुकान बंद करने की तैयारी कर रहा था।

"आइए, आइए !" उसने वर्मा जी का स्वागत किया।

'आपको कुटिल जी ने कोई काम करने को कहा था न," वर्मा जी की आवाज बर्फ की तरह ठंडी और फुसफुसाने की हद तक धीमी थी।—"वह काम आज करना है। ठीक आधी रात को बस्ती वाले मंदिर में अंदर। समझ गये न ? काम अवश्य होना चाहिए "

और वह बिल्ली की तरह ही दुकान से निकल गये।

× × ×

और दूसरे दिन, कल सुबह, पुजारी जी की कर्कश ऊंची आवाज सुनकर बस्ती के लोगों की नींद टूट गयी। सब मंदिर की ओर भागे। वहां उन्हें जो दृश्य देखने को मिला, उससे पहले तो उनका खून नसों में बर्फ हो गया, फिर लावे की तरह उफनने लगा। मंदिर के अंदर, मूर्ति के पास, एक विशेष पशु का कटा सिर पड़ा था।

ठीक उसी समय, अहमद साहब की कोठी में फोन की घंटी टुनटुनायी, जिसके कुछ ही क्षण बाद कोठी के फाटक से निकल कर, कुछ आदमी आस-पास की गलियों में घुस गये। आध घंटा बाद जोश से उफनता हुआ काफी बड़ा हुजूम मस्जिद के बाहर जमा था।

शाम हो गयी पर बाजारों में जहां इस समय भीड़ के कारण सड़क पार करना कठिन होता था, उल्लू बोल रहे थे। खाकी वर्दी पहने सिपाहियों के जूतों की खट्-खट् के सिवा कोई आवाज नहीं। जले पीड़ितों के रोने की आवाजों के सिवा कोई आवाज नहीं। जले मकान और सड़कों पर फैले खून के धब्बे— उस भयानक घटना की कहानी कह रहे थे जो आज घटी थी।

× × ×

और दूर राजधानी के एक वातानुकूलित कमरे में भगवान शंकर के दूध, बादाम मिले भंग के प्रसाद का लोटा चढ़ा कर कुटिल जी ऐसे निश्चिंत सो रहे थे, जैसे परीक्षा समाप्त होने के बाद विद्यार्थी सोता है। साथ के कमरे में उनके सचिव वर्मा जी समाचारपत्रों के लिए बयान तैयार कर रहे थे, जिस में इस भयानक घटना के लिए सरकार की अल्प-संख्यकों के प्रति पक्षपातपूर्ण नीति को जिम्मेदार ठहराया जाने वाला था।

शिव

उसका दिल बहुत बेचैन हो रहा था। घटना मामूली थी, किन्तु उसके दिल पर जैसे जमकर रह गयी थी। उसने सुमन (अपनी बडी लडकी) को केवल इसलिए पीट दिया था कि उसने पेंसिल गुम कर दी थी।

"मुझे इतना कमजोर नही होना चाहिए। बच्चो को नसीहत देने के लिए कभी-कभी पीटना पडता है।" दिल को तसल्ली देने के लिए उसने सोचा, लेकिन दिल था कि किसी भी तरह मान नही रहा था।

बहुत दिनो से ऐसी ही दशा है उसकी। किसी भी तरह चैन नही पडता। एक दिन की सांकेतिक हडताल मे भाग लेने के कारण उसे जेल भेज दिया गया था। पाच दिन जेल मे रहने के बाद छूटने पर वह एक हीरो की तरह दफ्तर गया था। हडताल अत्यन्त सफल रही थी। सारे देश मे डाक, तार रेल, टेलीफोन सब ठप्प होकर रह गये थे। ऐसी सफल हडताल मे आगे बढ कर भाग लेने पर अपने को हीरो समझना उसके लिए स्वाभाविक ही था। इसलिए दफ्तर जाने पर जब उसे इस आशय का आदेशपत्र दिया गया कि उसकी सेवाए नियम पाच के अधीन अमुक तिथि से समाप्त की जाती हैं तो उसने आदेशपत्र ऐसी बेपरवाही से स्वीकार किया था मानो उसका कोई महत्व ही न हो, मानो वह रद्दी कागज का टुकडा हो।

इस बात को पाच माह से ऊपर हो गये हैं। पाच महीने से कोई आय न होने के कारण फाकेकशी की नौबत आ गयी है। आर्थिक तंगी अनिश्चित भविष्य कचहरी की परेशानिया, साथी कर्मचारियो और नाते रिश्तेदारो की ओर से उपेक्षा भाव इन सब ने मिलकर उसकी मानसिक शान्ति बिल्कुल छीन ली है। रात को ठीक से नींद नही आती। जरा सी आख लगती है कि सपने आने लगते हैं—पकडे जाते समय का दृश्य, जेल का कोई दृश्य अथवा दफ्तर मे काम करते समय का कोई दृश्य।

घर से बाहर निकलते शर्म लगती है। जान पहचान वाले वैसे तो सहानुभूति जताते हैं, पर उनकी आखें कहती प्रतीत होती हैं—"कहो, दिमाग ठिकाने आया? बडे नेता बने फिरते थे!" लेकिन मुश्किल यह है कि घर के अन्दर भी अधिक देर बैठा नही जाता। दिन हर समय उदास-उदास! हर समय दिमाग मे क्रोध क्रोध, जो उसे सरकार के प्रति है पर जो उतरता है केवल पत्नी और बच्चो पर। बात बेबात वह पत्नी को डाट देता है बच्चो

को पीट देता है। लेकिन फिर उसका दिल और भी अधिक बेचैन, और भी अधिक दुखी हो उठता है।

× × ×

मन किसी तरह नही माना, तो वह स्कूल जा पहुचा। सुमन को बाहर बुलवाया। सुमन डरी डरी बाहर आयी तो उसने जेब से निकाल कर पाच पैसे का सिक्का उसकी नन्ही मुट्ठी मे रख दिया। "कुसुम को मत बताना।" यह कहते हुए उसकी आवाज भर्रा गयी। सुमन पहले तो हैरान रह गयी, फिर खुश खुश अन्दर भाग गयी।

स्कूल के अहाते से निकल कर वह सडक पर आ खडा हुआ और सोचने लगा कि अब क्या करे। यह भी एक समस्या है। समझ मे नही आता कि दिन कैसे बिताये। काम कही मिलता नही। पहले ही क्या कम बेकार भरे पडे हैं। फिर यह जानकर कि वह हडताल मे निकाला हुआ आदमी है और उस पर कचहरी मे केस चल रहा है—नौकरी देने वाले इस तरह भडक उठते हैं मानो वह कोई बहुत बडा अपराधी हो। दोस्त रिश्तेदार किसी के घर जाने को मन नही करता। कोई ठीक से बात नही करता। शायद वे डरते हैं कि कही कुछ माग न ले।

अचानक उसे ख्याल आया कि बिट्टू को कई दिनो से खासी और जुकाम है उसे डाक्टर को दिखाना चाहिए। फिर याद आया कि घर मे कानी कौडी भी नही है। तभी उसे यह भी ख्याल आया कि इस महीने यूनियन के दफ्तर से अब तक वह रिलीफ के बीस रुपये भी नही लाया। पैदल ही वह यूनियन के दफ्तर की ओर चल दिया।

× × ×

आवाज सुन कर वह ठिठककर खडा हो गया। उसके दफ्तर के मिस्टर चोपडा हाथ मे चमडे का थैला पकडे शान से चले आ रहे थे। उसके दिल मे हूक सी उठी। साथियो से गद्दारी करने का इनाम मिला है इसे शायद।

"सुनाओ क्या बन रहा है तुम्हारा? कब आ रहे हो ड्यूटी पर?" पास आने पर उन्होने पूछा।

"क्या कह सकते हैं। गया गयी हड्डिया कहा वापस आती है!"

"नही, जल्दी ही आओगे।"

"देखो।" फिर जोडा "बैग उठाया है, क्या इन्सपेक्टर बन गये हो?"

"ऐसे ही है मैं तो चाहता नही था।"

"अच्छा ही है। हडताल न करने का कुछ तो लाभ होना ही चाहिए।"

मिस्टर चोपडा झेंप गये। "अच्छा भाई हम तो चाहते हैं जल्दी आओ," कह कर एक ओर को चल दिये।

× × ×

वह यूनियन के दफ्तर पहुंच गया। दफ्तर मे हारी हुई सेना के कैम्प जैसा वातावरण था। अस्त व्यस्त, उदास दफ्तर मे यूनियन के महामंत्रि मिस्टर गुप्ता एक मेज के पीछे बैठे थे। उनकी बायी ओर सोफे पर, दो आदमी और बैठे थे जो काफी परेशान दिखायी दे रहे थे। वह भी उनकी बगल मे जा बैठा।

"गुप्ता साहब, इसका कुछ कीजिए।" उनमे से एक बोला।

"इस बेचारे का काम तो बहुत ही खराब हो गया है। रात झुग्गी जल गयी। आटा, दाल बर्तन, बिस्तर कुछ भी नही बचा। रात से बच्चे भूखे प्यासे बाहर बैठे है।"

'देखो भई!" गुप्ता साहब ने अपना बच्चो जैसा भोला चेहरा ऊपर उठाया। "अभी तो हम केवल टर्मीनेटड (बर्खास्त) एम्प्लाइज को ही रिलीफ दे पा रहे हैं। सस्पेंडेड को यह सस्पेंड ही हैं न तो आधी तनख्वाह मिल रही है। मुसीबत है बचारे टर्मीनेटेड की, जिन्हे कुछ भी नही मिल रहा है। हम उन्हे बीस रुपये महीना दे रहे हैं। क्या बनता है आजकल बीस रुपयो से! एक दिन भी नही निकलता। लेकिन फिर भी हम दस हजार रुपये महीना भेजने पड रहे हैं। हम कोशिश तो कर रहे हैं कि जल्दी हो जाय लेकिन कौन जानता है कि यह सिलसिला कितने दिन चलेगा। बडी मुश्किल पड रही है। कोटा आना बहुत कम हो गया है। इस महीने अभी तक सब लोगो को हम रिलीफ नही भेज सके हैं।"

उनका चेहरा बहुत ही करुण हो उठा था।

वे दोनो आदमी खामोश बैठे रहे, मुह लटकाये। कुछ देर तक गुप्ता साहब भी बैठे रहे उदास कुछ सोचते हुए। फिर उन्होने अपनी जेबें टटोली और कुछ रुपये निकाल कर देते हुए बोले, "लो भाई किसी तरह काम चलाओ। इस समय इतने ही हैं मेरे पास।"

इसके बाद उसका अपने लिए कुछ मांगने का प्रश्न ही नही उठता था। निराश सा वह लौट पडा।

× × ×

घर के अन्दर कदम रखते ही उसका दिल धक से रह गया। बिट्टू चारपाई पर बुखार से बेसुध पडा था और पत्नी सिरहाने बैठी रो रही थी। बिट्टू के फेफडो से 'सा-सा' की आवाज निकल रही थी।

वह घबरा उठा। बस यहा आकर ही हारता है वह। बिट्टू जब तीन महीने का था, तब एक बार उसे डबल निमोनिया हो गया था। तभी से उसके फेफडे कमजोर हैं। जरा-सा जुकाम होने पर वे जकड जाते हैं।

उसकी सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी। क्या करे अब वह? घर मे तो एक नया पैसा भी नही है।

उसने चारो ओर नजर दौडायी। घर बिल्कुल खाली था। मटल पीस पर रेडियो का स्थान खाली था। घडी भी अपनी जगह पर नही थी। छत मे पखे के स्थान पर बिजली के दो टूटे तार लटक रहे थे। जहा सिलाई मशीन पडी रहती थी, वहा ईटें पडी थी।

चारो ओर घूमती उसकी दृष्टि अत मे आलमारी म रखी पुस्तको पर जा अटकी। पुस्तको से पागलपन की हद तक इश्क है उसे। वह कहा करता है कि उसे दोनो समय रूखी सूखी रोटी और अच्छी पुस्तकें मिलती रहे, फिर वह सालो तक एक कमरे म बन्द रह कर गुजार सकता है।

कुछ देर तक हसरत भरी नजरो से वह आलमारी म बन्द अपने छोटे से सुन्दर पुस्तकालय को देखता रहा। यह दिन भी देखना था क्या उसे ? उसके मुह से एक दीर्घ निश्वास निकला। फिर वह उठा। आलमारी खोली। पुस्तकें आलमारी से निकाल निकाल कर जब वह फर्श पर बिछी चादर पर रख रहा था, तो उसे ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे वह अपने किसी सगे की अर्थी तैयार कर रहा हो।

× × ×

वह बिट्टू को गोद म लिटाये बैठा हुआ था। टीका लगने के बाद बिट्टू की सास कुछ ठीक हो चली थी और अब वह सो रहा था। अभी मुश्किल से आठ बजे थे लेकिन घर म आधी रात जैसा अधेरा और उदासी व्याप्त थी। बिजली अधिक खर्च न हो, इसलिए बत्ती बुझा दी गयी थी।

उसका मन बहुत भारी था—बहुत खिन्न। वह सोच रहा था, क्या हडताल मे आगे बढकर भाग लेकर उसने गलती नही की ? उसने भी अगर साथियो से गद्दारी की होती, तो उसकी भी उन्नति हो गयी होती, उसका भी वेतन बढ गया होता। कम से कम दर दर की ठोकरें तो न खानी पडती।'

'नही उसने कोई गलती नही की।' फिर उसने सोचा। 'अपने अधिकारों और न्याय के लिए लडना कोई गलती नही है। बल्कि यह तो हर इसान का कर्तव्य है। आदमी यदि अपने अधिकारो और न्याय के लिए लडा न होता, तो क्या अभी तक वह दास युग मे ही न होता ? सघर्ष मे कुछ लोगो को नुकसान तो उठाना ही पडता है। वे लोग कोई भी हो सकते हैं। सागर मथन के समय शिव को विष नही पीना पडा था क्या ? इस सघर्ष का विष उस जैसो के भाग मे आया है। उन्हें इसे खुशी खुशी पीना चाहिए—शिव की तरह। और इसी लिए वह आज विष पी कर भी प्राणवन्त है और दूसरे जीवित हो कर भी प्राण हीन।

और उसे एकाएक लगा, उसके मन का बोझ हट गया है और वह बिल्कुल शान्त हो उठा है। ●

पतिता

कटर मास्टर की कैंची चलते चलते रुक जाती, कारीगरों के हाथ मशीन के हत्थों पर जाम हो जाते मालिक का हाथ शीशे की तरह साफ और चमकदार गंजे सिर पर से फिसल कर गोद में आ गिरता। सब की नजरें सामने सीढ़ियों पर कील-सी जम जाती यहां श्वेत साड़ी और ब्लाऊज मे लिपटी एक औरत धीरे धीरे शान से इस प्रकार सीढ़ियां उतर रही होती, माना कोई परी हवा मे तैरती हुई आकाश से उतर रही हो। सीढ़ियों के पास कोई स्कूटर टैक्सी या कार खड़ी होती। वह उसम बैठ कर चली जाती। सभी के मुहा से एक साथ लम्बी सर्द आहें निकलती और काम फिर चालू हो जाता।

वह दर्जी की उस दुकान के बिल्कुल सामने ऊपर के फ्लैट मे रहती थी, जहां मैं काम सीखता था। शाम के चार बजे के लगभग रोज यह ड्रामा दोहराया जाता। वह चली जाती और दर्जी की उस दुकान पर काम करने वाले छह आदमियों के दिलो म आग लगा जाती। रस ले ले कर, हस हस कर, घटो वे उसके विषय मे गन्दी अश्लील बातें करते रहते।

मुझे उनकी बातें बहुत बुरी लगती। मुझे वह किसी देवी की मूर्ति की तरह पवित्र, भोली और सुन्दर लगती। मेरा किशोर मन यह मानता ही न था कि वह कोई अनुचित काम कर सकती है। मुझे उन सब पर बेहद क्रोध आता। इसका कारण शायद यह था कि तेरह साल की अल्प आयु मे ही मैं बहुत अपमान और कष्ट झेल चुका था और इसलिए हर उस इन्सान से मुझे सहानुभूति हो जाती थी, जिसकी हसी उड़ायी जाती थी अपमान किया जाता था। मेरा जी चाहता, सूई से उनकी जबानें गोद दू, ताकि वे फिर कभी उसके विषय मे ऐसी बातें न कर सकें।

एक दिन मैंने उन्हे टोक दिया। 'तुम्हें शर्म नही आती एक गरीब औरत का मजाक उडाते। इतनी उमरें हो गयी हैं तुम्हारी।'

वे हैरान रह गये और बदले मे उसके साथ मेरा मा, बहन और प्रेमिका का सम्बन्ध जोड कर मुझे चिढाने लग और उस समय तक चिढाते रहे जब तक कि मुझे रोना नही आ गया।

उस रात मुझे ठीक से नीद नही आयी। जब कभी झपकी आती, एक सपना दिखायी देने लगता।... एक हिरणी कुत्तों से घिरी हुई है। फिर वह

हिरणी उस औरत मे बदल जाती, फिर उसकी आकृति मेरी बडी बहन जैसी हो जाती—मेरी मा जैसी हो जाती ।

× × ×

अगले दिन दुकान बन्द थी। नहा धो कर मैं सीढिया चढ गया। वह कमरे के बाहर अगीठी रखे रसोई तैयार कर रही थी।

"तुम नीचे दुकान पर काम सीखते हो न ? सतीश के साथ खेलना है ?" मुझे देख कर मन्द मन्द मुस्कराते हुए वह बोली और मुझे लगा जैसे नन्ही-नन्ही घटिया टुनटुनाता कोई बैल गुजर गया हो।

"नही" मैने क्रोध से कहा। 'मैं यह कहने आया हू कि तुम ऐसे काम क्यो करती हो ?"

"क्या ?" वह एकदम उछल कर खडी हो गयी, मानो उसे किसी ने सूई चुभो दी हो।

'मेरा मतलब है दुकान पर लोग तुम्हारा बहुत मजाक उडाते हैं। तुम ऐसा क्या काम करती हो ? मुझे बहुत दुख होता है बहुत ज्यादा।" उसकी करुणामयी आकृति देख कर मैं अपना क्रोध कायम न रख सका और रो पडा।

'ओह ! तो यह बात है।" पास आकर उसने मुझे गोद म ले लिया और मुझे वैसी ही अनुभूति हुई जैसी मा के ऐसा करने से होती थी। "लेकिन मेरे नन्हे मुन्ने अच्छे बच्चे तुम्हें दुखी नही होना चाहिए—बिल्कुल दुखी नही होना चाहिए। दुनिया का तो दस्तूर ही है कि वह पहले इन्सान को कीचड मे गिरा देती है और फिर उस पर हसती है। तुम्हें अभी दुखी नही होना चाहिए। तुम अभी बहुत छोटे हो। दुखी होने को बहुत समय पडा है। जाओ, अन्दर जा कर सतीश के साथ खेलो।" उसकी आखें भी गीली हो आयी थी।

उस दिन खाना इत्यादि खा कर जब मैं सीढिया उतरा तो बहुत खुश था बहुत खुश। वह मेरी मौसी बन गयी थी और सतीश मेरा छोटा भाई।

× × ×

अब जब कभी समय मिलता, मैं वहा चला जाता। उसका छोटा सा कमरा हर समय इतना शान्त स्वच्छ और सुगधित रहता था कि मुझे मन्दिर की अनुभूति होती थी। वहा बैठ कर मुझे हमेशा ऐसा लगता जैसे मैं अपने घर मे मा के पास बैठा हू। स्वभाव से वह बहुत ही अधिक मृदु, करुणामयी और दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने वाली थी। फिर भी लोग उसे क्या बुरा कहते थे, बुरा कहते हुए भी क्या उसको ललचायी सी नजरों से देखते थे, छोटा होने के कारण यह मैं तब समझ नही पाता था। आज जबकि मैं सब कुछ समझता हू मेरा दिल उसके प्रति और भी अधिक स्नेह श्रद्धा और सहानुभूति से भर उठा है।'

दुकान का मालिक मुझे वहा जाने से रोकता। अपने गजे सिर पर हाथ फेरते हुए वह कहता 'देखो बेटा, वहा मत जाया करो! वह बगाल का जादू जानती है। तुम्हें भेड बना कर रख लेगी। शहर के कितने ही वडे लोगो को उसने भेड बनाया हुआ है।"

"मैं ने तो वहा कोई भेड नही देखा।" मैं हस कर उत्तर देता।— 'हा, यहा तुमने अवश्य हम छ आदमियो को भेड बना कर रखा हुआ है।"

× × ×

उन्ही दिनो मुझे मा का वह पत्र मिला।

बात यह थी कि बापू की बीमारी के समय हमने बीनेवाल के साहूओ (शाहो) से कुछ रुपये कर्ज लिये थे। बापू की मत्यु के कारण अभी तक हम वह कर्ज अदा नही कर सके थे। साहूओ ने तीस साल के अर्से म हम पर पाच सौ से अधिक रुपये बना दिये थे और एकदम वापसी का तकाजा आरम्भ कर दिया था। इस तकाजे के पीछे एक भेद था। वडे साहू जिसकी आयु साठ से ऊपर थी, की दूसरी पत्नी का कुछ मास पहले देहान्त हो गया था और वे तीसरी शादी के फिराक मे थे और उनकी दृष्टि मेरी बडी बहन पर थी।

यह सब बताने के बाद मा ने पत्र में लिखा था —बेटा, मैं बहुत उलझन म फस गयी हू। साहूओ को न करती हू तो व घर बार कुरक करवा लेंगे। और अपने हाथो धी (बेटी) को कुए मे कैसे धकेल दू!

पत्र पढ कर मैं सन्न रह गया—पत्थर! जब होश आया तो म उसके सामन खडा था। पत्र पढ कर उस पर भी वही प्रतिक्रिया हुई जो मुझ पर हुई थी। काफी देर तक बुत बनी उदास एक टक दखते हुए वह खामोश बठी रही। फिर लम्बी सद आह भरते हुए बोली— चिता न करो बेटा! भगवान सब ठीक कर देंगे।"

"नही, भगवान कुछ ठीक नही करते।" मैंने खीज कर कहा। "भगवान कोई बहुत अच्छे नही है। वे मा और तुम जसे अच्छे लोगो को दुख और हमारे गजे मालिक और साहू जैसे बुरे लोगो को सुख देते हैं।"

'ऐसे न कहो बेटा पाप लगता है।" उसने मद्धिम आवाज मे कहा "न जाने पहले ही किन पापो ने जकडा हुआ है।'

× × ×

अब मेरे दिन बहुत ही उदासी और कष्ट मे बीतने लगे। काम करते हुए कितनी ही बार सुई मेरी उगलियों में चुभ चुभ जाती। गजे मालिक से कितनी ही बार डाट खानी पडती। जागते मे ही मैं सपने देखने लगता कि वढे साहू से मेरी बहन का विवाह हो रहा है। वेदी के नीचे साहू को दमे का दौरा

पडा और वह स्वर्ग सिधार गया। बहन का ताजा पहनाया चूडा तोड दिया गया।—कभी देखता, मैंने बूढे साहटू की हत्या कर दी है और पुलिस मुझे पकडे लिये जारही है।

कोई दस दिन बाद मा का मुझे एक और पत्र मिला। धडकते दिल से मैं पढ़ने लगा।—

प्यारे बेटे,

जीते रहो !

आगे समाचार यह है कि तुम्हारी मौसी के भेजे पाच सौ रुपये मिल गये। बेटा, मैं नही जानती तुम्हारी यह मौसी कौन है, लेकिन यह तो मेरी सगी बहन से भी अच्छी है। चीर हरण के समय जिस तरह कृष्ण ने द्रोपदी की लाज रखी थी, उसी तरह इसने हमारे घर की लाज रख ली है। अपनी भानजी को कुए मे गिरने से बचा लिया है। बेटा, उन्हे मेरी बहुत बहुत राम राम कहना और कहना कि इस जन्म मे तो क्या, जन्म-जन्मान्तर मे भी हम उसका यह कर्ज चुका नही पायेंगे।

तुम्हारी मा।

पत्र मे कही कही, कोई कोई अक्षर फैला हुआ था। शायद मा पत्र लिखते-लिखते रोयी थी। मेरा मन भी रोने रोने को हो रहा था।

× × ×

इस बात को सालो बीत गये हैं। वह अब इस ससार मे नही है। आधुनिक दुनिया मे, जिसमे सहानुभूति इसानियत, रहम इत्यादि शब्द तक दकियानूसी कहे जाने लगे है, सघर्ष करते-करते जब जी ऊब जाता है, तो मैं उसे याद कर लेता हू—पतिता कही जाने वाली उस औरत को।

तेल का कनस्तर

'चिंता तुम्हारे लिए जहर के समान है—चिंता और अधिक काम।'

वह तेल के लिए लाइन मे खडा था। लाइन मे उसका दो सौ पाचवा नम्बर था, जबकि वह सुबह छ बजे आ गया था। उसे और जल्दी आना चाहिए था पर उसे दूध लेने जाना पड गया था।

वैसे ये सारे काम श्रीमती जी करती है। उसे डाक्टर ने मना किया है। दिल का मरीज है वह। लेकिन दो दिन स श्रीमती जी बीमार हैं। बीमार हा भी क्यो नही! कितनी सख्त हो गयी है जिंदगी आजकल! दूध लेने के लिए रात बारह बजे लाइन मे लगो। आटे के लिए लाइन, चीनी के लिए लाइन, घी के लिए लाइन, कायले के लिए लाइन, मिट्टी के तेल के लिए लाइन। ये सभी चीजें लाइन म लगे बिना मिल सकती हैं काले बाजार मे। पर इतने पैस कहा से आयें!

× × ×

'चिंता तुम्हारे लिए जहर के समान है—चिंता और अधिक काम।'

डाक्टर के य शब्द उसके काना म गूज रह थे। पर क्या करे वह! चिंता हो ही जाती है। जस प्यार हो ही जाता है। वह चौदह वप का था, जब पिता की मत्यु हुई। तब से एक दिन भी ऐसा याद नही, जब उसे किसी न किसी बात की चिंता न रही हा। पिता के मरन पर जो कज लेना पडा था, वह सूद दर सूद कुछ साला म इतना बढ गया कि फिर उतर नही सका। और, वह कभी निश्चित नही हो सका।

× × ×

गीत की कोई कडी याद करने के लिए उसने दिमाग पर जोर डाला। डाक्टर न चिंता से बचने का यह एक उपाय बताया है। हर समय गीत की कोई कडी गुनगुनाते रहा।

तुसीं देवो सानूं वोट काई कम न रहे खण्ड दी नमाणी काणी बण्ड न रहे। कब सुना था यह गाना? १९४५ मे, एक चुनाव सभा म, अठाईस वप हो गये। और आज चीनी की ही नही, आटा तल, कोयला, हर चीज की बड हो गयी है। लेकिन वह फिर क्या सोचने लगा! भूखे को भाजन के सपने!

× × ×

उसने घडी पर दृष्टि डाली। नौ पाच। दुकान खुलने मे अभी पच्चीस

मिनट शेष हैं। दफ्तर तो आज जाया नही जा सकता। कल दरखास्त दे देगा। पर वेतन कट गया तो! एक बार पप्पू के अचानक बीमार पड जाने पर उसे दो दिन की छुट्टी की घर से दरख्वास्त भेजनी पडी थी तो उसका वेतन कट गया था। उफ गर्मी कितनी अधिक है! जी घबरा रहा है। आज फिर चक्कर न आ जाय कहीं! वह पृथ्वी पर बैठ गया।

× × ×

समय कितना बदल गया है! पहले ऐसी घटनाएं कुओं, तालावों, नदी तटों, चारागाहों और खेत-खलिहानों म घटा करती थी। युवक और युवती कोई बहुत अधिक सुदर नही थे, पर उनके चेहरो पर व्याप्त एक दूसरे के प्रति गहरे प्यार और आत्म-समपण के भाव ने उ ह बेहद आकषक बना दिया था। उसे रेशमा याद आ गयी।

रेशमा बचपन की सहेली थी उसकी। सालो वे साथ साथ हसे खेले थे। इस साथ ने दोनो को बिलकुल अभिन्न बना दिया था। कुछ देर की जुदाई भी दोनो के लिए असह्य हो उठती। और फिर एक दिन रेशमा हमेशा के लिए चली गयी और वह कुछ नही कर सका। गाव के घोर रूढिवादी समाज म और हो ही क्या सकता था! रेशमा के जाने के बाद कैसा हो गया था वह—एक जिंदा लाश!

× × ×

"दुकान खुल गयी ..तेल मिलने लगा!" अचानक कोई ऊची आवाज म बोला।

'मिलने तो लगा है पर लगता है, अभी अपनो को बाट रहे हैं। यह युवती अभी आयी थी और अभी चल दी तेल ले कर।' किसी ने खिन्न आवाज मे कहा।

"यही तो बात है।" एक क्रोधभरी आवाज उभरी।—"आप समझते हैं, चीजो की कमी है हमारे देश मे। कोई कमी नही है। कमी हो, तो ब्लैक म कहा से मिलें! मेरे एक परिचित दुकानदार ह। एक दिन कहने लगे आपको लाइन मे लगने की कोई जरूरत नही है। आवश्यकतानुसार गेहू मैं आपको दूगा, पर आपको मेरा एक काम कर देना होगा। आपके पास जगह बहुत है। कोई शक भी नही करेगा आप पर। आप मेरी सौ बोरी गेहू रख छोडें। किसी चीज की कमी नही हमारे देश मे। कमी केवल एक बात की है—सख्ती की।'

"सख्ती करे कौन!" खिन्न आवाज फिर बोली।—'सभी तो मिले हुए हैं। मेरे पडोस मे एक राशनिंग इसपेक्टर रहते हैं। क्या ठाठ हैं उनके! फर्स्ट क्लास वन अफसर भी क्या रहेगा एसे! कभी कोई चीज खरीदने नहीं जाते। चीनी, घी, आटा—सभी चीजें घर पहुच जाती हैं उनके, अपने आप।'

अचानक उस नौकरी के शुरू के दिनों की एक घटना याद हो आयी। ऐसी बातें सुन कर उसे हमेशा वह याद आ जाती है। कितना उत्साह था उन दिनों उसमें! कैसे-कैसे सपने देखा करता था! इन्स्पेक्टर के लिए परीक्षा पास करेगा वह। फिर सुपरिटेंडेंट बनेगा, फिर पोस्ट मास्टर जनरल, फिर ।

और वह परीक्षा में बैठा भी था। कितना परिश्रम किया था उसने! खाना खाते समय भी पढ़ता रहता था। परिश्रम करने का फल भी मिला था उसे। लिखित परीक्षा में वह देश भर में प्रथम आया था।

पर इतने पर भी वह चुना नहीं गया। इंटरव्यू में रह गया था। पर्सनेलिटी नहीं है, दांत आगे को निकले हुए हैं। उससे नीचे वाले दो चुन लिए गये थे। बाद में सुना गया कि एक की पत्नी किसी बड़े अधिकारी को राखी बांधती थी और दूसरा किसी का दामाद था।

× × ×

'चिंता तुम्हारे लिए जहर के समान है—चिंता और अधिक काम।" डाक्टर के शब्द उसके कानों में और भी तेजी से गूंज उठे।

पांच बज रहे थे, अफवाह उड़ रही थी कि तेल समाप्त होने वाला है, और उसके आगे अभी पचास से भी अधिक आदमी थे।

यदि तेल न मिला तो ? कोयला भी नहीं मिल रहा और लकड़ी मकान-मालिक जलाने नहीं देगा।

उसका नम्बर कब का आ गया होता, अगर दो बार लाइन टूट न गयी होती।

उसके साथ हमेशा ऐसा ही हुआ है। जब भी उसका नम्बर आया, कोई दूसरा झपट ले गया। प्रमोशन के लिए उसका नम्बर आया, वह प्रसन्न था। इन्स्पेक्टर की परीक्षा में रह जाने का जो नुकसान हुआ कुछ तो पूरा होगा। और तभी उस पर केस फ्रेम हो गया और प्रमोशन रुक गया। बाद में पता चला कि चार्जशीट दिलवाने में उस आदमी का हाथ था जिसका नम्बर उसके बाद था।

× × ×

वह उठ खड़ा हुआ। बैठे रहना अब संभव नहीं था। उसका नम्बर अब सिर्फ आठवां था। भीड़ बहुत बढ़ गयी थी, क्योंकि तेल बहुत थोड़ा रह गया था और कितने ही लोग बिना नम्बर के आ जमा हुए थे। मछली मार्किट जैसा शोर। इंसान को कुत्ते की स्थिति तक पहुंचा देने वाले वाक्य।

भाई मुझे एक बोतल दे दीजिए! मुझे आधा लिटर ही दे दीजिए मेरे घर में चाय बनाने को भी तेल नहीं! प्लीज, मैं सुबह पांच बजे से खड़ा हूं

उसने कलाई पर हाथ रखा। नब्ज कितनी तेज चल रही है! नहीं, अधिक उत्तेजित होना ठीक नहीं। अधिक चिंतित भी नहीं होना है। पर यह क्या बात है। जैसे-जैसे उसका नंबर नजदीक आता जा रहा है, दिल की धड़कन तेजतर होती जा रही है। दौरा न पड़ जाय कहीं! वह अपने को संयत करने की पूरी कोशिश करने लगा।

× × ×

अब उसका नंबर तीसरा था और टब में सिर्फ दो लिटर तेल बचा था।

नहीं मिलेगा किसी भी तरह नहीं मिलेगा।—उसने सोचा। खाना कैसे बनेगा अब? चिंता तुम्हारे लिए जहर के समान है। पर खाना कैसे बनेगा? कोयला भी नहीं मिल रहा है और लकड़ी जलाने से मकान मालिक नाराज होगा। चिंता तुम्हारे लिए जहर के समान है—चिंता और अधिक काम! नहीं, चिंतित नहीं होना है। तेल न मिले, न सही। डबल रोटी खा लेंगे एक दो दिन। पर जो क्या मितला रहा है? पेट से उठ कर यह धुआं-सा क्या बढ़ रहा है सिर की ओर? आंखों के आगे तारे से क्यों नाच रहे हैं? दौरा पड़ेगा। हां, दौरा पड़ेगा। दौरा पड़ने से पहले ऐसा ही होता है।

वह धरती पर बैठ गया, फिर लेट गया, फिर अंधेरे में डूब गया—ठंडे घुप अंधेरे में।

"क्या हुआ? क्या हुआ?" उसकी ओर दौड़ती हुई बहुत सी आवाजें। "चक्कर आ गया शायद।" "जहर दिया गया है, जहर!" एक क्रोधभरी ऊंची आवाज।

वह पसीने में डूबा पृथ्वी पर शांत लेटा था सब चिंताओं से मुक्त। तेल का कनस्तर पास पड़ा था। उसके अपने जीवन की तरह खाली।

खुशी भरा दिन।

सुबह आख खुली, तो याद आया, आज ३० दिसबर है। पिता जी रात भर प्रतीक्षा करते रहे होंगे। इस समय भी उनकी आखें सतोपगढ वाले माग पर लगी होंगी। लेकिन नही, ऐसी बातें सोच कर आज वह अपने को उदास नही करेगा। आज उसे खुश रहना चाहिए। कम से कम यह तो वह कर ही सकता है। आज उदास रहना बहन के लिए अपशकुन होगा।

वह बिस्तर से उठ खडा हुआ। बाहर अभी अधेरा था। पाच बजे होगे। शायद साढे पाच। हो सकता है छ ही बज गये हो। आजकल साढे छ सात तक अधेरा रहता है।

समय जानने का साधन उसे पिछली गर्मियों मे सभी ट्यूशन छूट जाने पर बेच देना पडा था। वह घडी पिता जी ने उसे मैट्रिक की परीक्षा मे तहसील भर में प्रथम आने पर बतौर इनाम खरीद दी थी। बेचने पर कई दिनो तक उसे ऐसे लगता रहा था, जैसे अपने किसी बहुत प्रिय से वह बिछुड गया हो।

इस दुखद विचार को एक झटके के साथ उसने दिमाग से निकाल बाहर किया, चप्पल पहनी, कम्बल ओढा, बाहर आ कर कमरे मे ताला लगाया और तेजी से एक ओर को चल दिया। तेजी से इसलिए क्योंकि वह जानता था कि किसी क्षण भी बाबू तेलू राम आ सकते हैं और फिर

× × ×

बाबू तेलू राम उसके मकान मालिक हैं। कब्र जैसी इस अधेरी कोठरी का किराया लेते हैं पचास रुपये नकद + प्रात आत्मप्रशसापूर्ण भाषण द्वारा दो घटे दिमाग चाटना + शाम को दो घटे बच्चो द्वारा दिमाग चटाना। बहुत ही कृपण प्रकृति के आदमी है। अत घी दूध खाने के बजाय, सुबह की ठडी हवा खा कर ही स्वास्थ्य बनाने के पक्ष मे हैं। मुह अधेरे ही उसे आवाज देते हैं। पार्क मे पहुच कर एक ओर खडे हो जाते है और इतनी लम्बी लम्बी सासें खीचने लगते हैं मानो वायुमडल की सारी वायु अपने नन्हे से पेट मे भर लेना चाहते हो। फिर आरम्भ होता है नगे पाव घास पर टहलना। साथ-साथ चलता है उनका आत्म प्रशसापूर्ण भाषण (शायद यही सुनाने के लिए वे उसे साथ लाते हैं) क्या क्या काम दिल्ली आकर उन्होंने किये कुलीगिरी से प्रेस एजेन्टी तक। किस प्रकार सरकारी नौकरी हथियाई। किन किन तिकडमो

से सुपरिंटेण्डेंट बने। किस किस रिश्तेदार की कब कब सहायता की। फिर उपदेश—जो भी काम मिले, उसे कर लेना चाहिए चाहे भगी का काम ही क्यो न हो। सब काम पवित्र होते हैं। गाधी जी ने यही कहा है। गाधी जी अपना मल तक स्वय उठाते थे। परिश्रम करते रहना चाहिए, लेकिन फल की इच्छा नही करनी चाहिए। गीता मे यही लिखा है, इत्यादि सुन कर उसके अन्दर लावा सा खौल उठता है। जी चाहता है, फट पडे। कहे, "बाबू तेलू राम, तुम ठीक कहते हो, क्योकि तुम एक सफल आदमी हो। तुम्हारी इस दुनिया मे सब ठीक है। एक प्रथम श्रेणी बी एस सी का भगी का काम करना ठीक है। एक बिल्कुल निरक्षर भट्टाचार्य का मत्री बन जाना ठीक है। और यह जो तुम्हारे बच्चे रोज दो घटे दिमाग चाटते हैं और मैं फल की इच्छा नही करता, यह उससे भी ठीक है।" लेकिन वह कहता कुछ नही, क्योकि वह जानता है कि सुनकर बाबू तेलू राम नाराज हो जायेंगे और फिर उसे यह कब्रनुमा कोठरी खाली करनी पडेगी।

× × ×

वह चित्रगुप्त रोड पर चल दिया। सर्दी बेहद थी, लेकिन वह मोटा कम्बल ओढे था। सुबह की निर्जन, शान्त, साफ शफ्फाफ सडक पर धीरे धीरे अकेले चलते जाना कितना अच्छा लग रहा था। पचकुइया रोड से वह लिंक रोड जा पहुँचा। लिंक राड से स्प्रिंग डेल्स स्कूल के पीछे से होता हुआ शकर रोड की चढाई चढ गया। अब वह रिज पर था। सूर्य निकल आया था और सरसो के फूलो जैसी सुनहरी धूप चारो ओर फैल रही थी। वह एक पत्थर पर बैठ गया और सामने बिडला मन्दिर की ओर एकटक देखता हुआ गुनगुनी धूप का आनन्द लेने लगा।

अचानक उसे नीलू की याद हो आयी। भोली भाली चचल, नाजुक सी लडकी नीलू लाहौर कमर्शल कालेज म मिली थी उसे। बेकारी से तग, दोनो मुसीबतजदा—कुछ ही दिनो मे घनिष्ठ बन गये। बिडला मन्दिर के बगीचे मे बैठ कर क्या क्या योजनाए नही बनाया करते थे वे दोनो! दोनो को नौकरी मिल जायगी। कुछ सालो बाद नीलू का छोटा भाई भी पढ लिख कर काम पर लग जायगा। तब दोनो लेकिन सभी योजनाए धरी रह गयी। एक दिन अचानक सुना,—नीलू ने एक साठ साला विधुर लखपति ठेकेदार से शादी कर ली है। सुन कर पत्थर ही तो बन गया था वह, मानो अपने किसी बहुत प्रिय की मृत्यु का समाचार सुन लिया हो। मृत्यु ही तो हो गयी थी नीलू की। विधवा बूढी मा और चार छोटे भाई बहनो को भूखा मरने से बचाने के लिए मृत्यु का वरण कर लिया था उस भोली भाली, चचल लडकी नीलू ने जिन्दा मृत्यु का

लेकिन यह वह फिर क्या सोचने लगा ! ऐसी उदास करने वाली बातें नही सोचनी हैं आज उस । वह पत्थर पर चित लेट गया और आकाश म उड रहे पक्षियो को देखता हुआ लेटा रहा लेटा रहा, यहा तक कि सूय काफी ऊचा उठ आया । लवर लेन अब खूब चल पडी थो । लोग दफ्तर जा रहे थे । वह घर की ओर मुड लिया ।

× × ×

घर आ कर उसने पानी गम किया और नहाने लगा । नहाते समय उसने फैसला किया कि आज वह ट्यूशन पढाने नहीं जायगा, टाइप सीखने भी नही जायगा, शाम को बाबू तेसूराम के बच्चो को भी नही पढायगा पूरी छुट्टी करेगा आज वह । साथ ही उसने खाना खाने के लिए 'चाचा के होटल' पर भी न जाने का फैसला किया, क्योंकि उसे डर था कि 'चाचा' नित्य की तरह पिछला बकाया माग कर उसे उदास कर देगा ।

× × ×

भूखा रहने का काफी अभ्यास हो चुका है उसे । इस बात मे बडे बडे नेताओ को भी मात दे सकता है वह । रजाई ओढ कर वह चारपाई पर पड गया और 'यशपाल' का 'झूठा सच' पढने लगा । पढते पढते न जाने कब उस की आख लग गयी । जागा, तब धूप गली से विदा ले चुकी थी । वह अपने को बेहद हलका महसूस कर रहा था । हाथ मुह धो, कपडे पहन, वह निकल पडा । कहा जाय ? आर के मिशन लाइब्रेरी ? नही वहा रेड्डी से भेंट हो जायगी

रेड्डी डाकतार विभाग मे क्लक था । यूनियन की गतिविधियो मे आगे बढ कर भाग लेने के कारण उस समय से पूव ही पेंशन दे दी गयी है । पेंशन मिली कुल साठ रुपये । परिवार म आठ सदस्य थे । कैसे गुजारा हो ? डेढ वष से दिल्ली मे पडा है । उच्च अधिकारियो को सकडो आवेदन पत्र दे चुका है, बीसियो बार लिख कर दे चुका है कि उसे दोबारा नौकरी दे दी जाय, वह यूनियन स कोई वास्ता नही रखेगा, पर कोई नही सुनता । पूरा खाना और दवाई न मिलने के कारण परिवार के दो सदस्य—बूढी मा और छोटा बेटा—मत्यु ग्रास बन चुके हैं । शेष को भूखा मरने स बचाने के लिए प्रथम श्रेणी एम ए रड्डी ने आर के मिशन लाइब्रेरी म चपरासी की नौकरी कर ली है । और वह काफी हाऊस भी नही जा सकता, क्योकि वहा शर्मा के मिल जाने की पूरी सम्भावना थी । शर्मा इजीनियरिंग कालेज रुडकी का स्नातक है और है तीन वष से बेकार । यद्यपि वह हर समय हसता रहता है, पर उसके चेहरे पर हमेशा ऐसे भाव अंकित रहते हैं, मानो उसने इजीनियरिंग पास न की हो, कोई बहुत बडा गुनाह किया हो ।—

× × ×

वह धीरे धीरे डी टी गुप्ता रोड पर चल दिया। पहाडगंज पुल पर पहुंच कर भाग्य बताने वाली चिडिया से उसने भाग्य कार्ड निकलवाया, जिसे पढ़ कर उसका मन पहले से भी अधिक हल्का हो उठा। "अच्छे दिन आने वाले हैं, अच्छे दिन आने वाले हैं!" कार्ड पर लिखा वाक्य गीत की कडी की तरह गुनगुनाता हुआ वह मिन्टो रोड पर मुड लिया और कनाटप्लेस की रंगीन शाम का आनन्द लूटते हुए न जाने कितने चक्कर उसने कनाटसर्कस के लगाये, यहा तक कि शाम रात में बदल गयी और वह थक कर चूर हो गया।

वह घर की ओर लौट पड़ा। उसका मन हल्का था बेहद हल्का, क्योंकि दिन ठीक से बीत गया था, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह वह चाहता था, बिना कोई उदास कर देने वाली घटना घटे।

× × ×

बंगाली मार्केट के बस स्टैंड के पास पहुंच कर वह ठिठक कर खडा हो गया। सामने चौक में से गुजर रही थी, वह जिसके ख्याल तक से वह सुबह से बचता आया था—एक बारात। लेकिन वह उसे नही देख रहा था, क्योंकि अब वह वहा था ही नही। वह तो चार सौ मील दूर अपने गाव जा पहुचा था, जहा इस समय धीरे धीरे बडी शान के साथ इसी तरह की एक बारात स्कूल वाली चढाई चढ रही होगी। आगे-आगे बैड, उसके पीछे पालकी में दूल्हा, फिर बारातियो की लम्बी पक्ति। अगवानी के लिए उसके पिता गाव के बडे बूढो के साथ सराय के दरवाजे पर खडे होगे, लेकिन उनकी आखें निरंतर सतोषगढ वाले मार्ग पर टिकी होगी उसी की प्रतीक्षा मे। शादी के कपडो मे लिपटी उसकी छोटी बहन पिछली कोठरी में बैठी होगी, पर उसके कान उत्कंठा से बाहर लगे होगे छोटे छोटे, प्यारे प्यारे, ये तीन शब्द सुनने को व्याकुल, "भइया आ गये! भइया आ गये!!"

अचानक कोई चीज पेट से उठ कर उसके गले में आ फसी। दम घुटने लगा। शरीर रोमांचित हो उठा। आखो के आगे गहरा अंधेरा छा गया। उसे लगा, खुश रहने का जो प्रयत्न वह सुबह से करता आया था, वह विफल हो गया है। किसी भी क्षण गले में फसी वह भारी चीज बाहर फट पडेगी और वह बीच सडक में ही पागलो की तरह फूट फूट कर रो उठेगा हा फूट फूट कर! लेकिन नही, आज उसे रोना नही है, दुखी नही होना है, यह बहन के लिए अपशकुन होगा—उसने सोचा। और उसके कदम तेजी से तारघर की ओर बढ चले।

बहन को केवल आशीर्वाद का तार भेजने के लिए।

●

ताया

मेरे ताया जन्माध थे। लेकिन सिवाय हल चलाने के कोई ऐसा काम नही है, जो वे न कर सकते हो। बहुत साल पहले जब हम गाव मे थे, तो वे जगल से लकडिया काट लाते थे, दो मील दूर कुए से पानी भर लाते थे, जगल म भस बकरिया चरा लाते थे। तबला बजाने मे उनकी दूर दूर तक धूम थी। गला उनका बेहद मधुर और सुरीला था। इकतारा बजाते हुए जब वे सूरदास का कोई भजन गाते तो सुनने वालो पर जादू छा जाता था। लेकिन गाने को उन्होने कभी पैसा कमाने अर्थात मागने का साधन नही बनाया। केवल एक अवसर मुझे ऐसा याद है, जब गा कर उन्होने पैसा कमाया था।

तब मैं पाचवी श्रेणी मे पढता था। गाव मे हमारी अपनी जमीन नही थी। गाव के जमीदार की जमीन हम बटाई पर बोते थे। दादा के समय से ही हमारा परिवार वह जमीन बोता आया था। फिर देश स्वतत्र हो गया। अफवाह थी कि जोतने वाले किसान ही जमीन के मालिक बन जायेंगे। जमीदार ने बापू से जमीन छोड देने को कहा, लेकिन बापू कैसे मान जाते? उन्होने साफ इनकार कर दिया। तब जमीदार न एक चाल चली। चोरी से हमारे बाडे मे देसी शराब की कुछ बोतलें रखवा कर पुलिस बुलवा ली। पुलिस बापू को पकड कर ले गयी। फिर बापू जीवित वापस नही लौटे। कुछ दिन बाद ताया उनकी लाश चारपाई पर उठवा कर लाय।

हम पर मुसीबतो का पहाड टूट पडा। हमे उन पाच रुपयो म ही गुजारा करना होता था, जो ताया को पानी भरने के बदले स्कूल से मिलते थे। हल, बैल कर्जे के बदले पहले ही बिक गये थे। अब तो कोई कर्ज भी नही देता था। रोटी के लाले पडे हुए थे। मेरी पढाई का खर्च कहा से आता। मा ने मुझे स्कूल से हटा कर नौकरी करने के लिए शहर भेजने को सोचा। ताया को पता चला, तो वे क्रोध से लाल हो उठे 'कौन होती है तू इसे स्कूल से हटाने वाली? मैं क्या मर गया हू? खबरदार जो इसे स्कूल से हटाया।"

और दूसरे दिन जब हम जागे, तो ताया अपने कमरे मे नही थे। उनका इकतारा भी खूटी से गायब था। सारा दिन उनका कोई पता नही चला। शाम को वे लौटे—थके हारे, लाठी से मार्ग टटोलते हुए। आते ही मन से उन्होने सिक्को की थैली मा के आगे फेंक दी। "लो, अब फिर कभी इसे स्कूल से हटाने की बात न करना।"

और फिर मुझे किसी ने स्कूल से नही हटाया। मैं प्रथम श्रेणी मे मैट्रिक पास कर गया, लेकिन उससे क्या ? अपने देश मे तो नौकरी सिफारिश से मिलती है, योग्यता से नही। दो साल तक इधर उधर भटकने के उपरान्त मैंने बिजली का काम सीख लिया और शहर आ कर एक फैक्टरी मे बिजली मिस्त्री बन गया। कुछ अर्से बाद गरीबी से लडते लडते एक दिन मा भी चल बसी। अब ताया को गाव मे किसके पास छोडता ! उन्हें शहर ले आया।

यहा पहले उनका दिल नही लगता था। मैं फैक्टरी की मजदूर यूनियन का सचिव चुन लिया गया था। हमारे मकान पर प्राय यूनियन की कार्यकारिणी की बैठकें हुआ करती थी। ताया एक ओर खामोश बैठे हमारी बहसें सुनते रहते। कहने पर कभी इकतारे पर सूरदास का कोई गीत भी गा देते। बाद मे दूसरे गीत भी गाने लगे। अपनी सुरीली आवाज मे जब वे शैलेन्द्र का निम्न गीत गाते, तो वातावरण अपार जोश से भर उठता —

तू जिन्दा है तो जिन्दगी की जीत मे यकीन कर,
अगर कहीं है स्वर्ग तो उतार ला जमीन पर !
ये गम के और चार दिन, सितम के और चार दिन,
ये दिन भी जायेंगे गुजर, गुजर गये हजार दिन,
सुबह और शाम के रंगे हुए गगन को चूम कर,
तू सुन जमीन गा रही है कब से झूम झूम कर,
तू आ मेरा सिंगार कर, तू आ मुझे हसीन कर !
तू जिन्दा है, तो जिन्दगी की जीत पर यकीन कर।

बैठक समाप्त होने पर वे प्राय पूछते, "बेटा, क्या भला ऐसे हो सकता है ?"

"हो क्यो नही सकता", मैं उत्तर देता। "आधी दुनिया म तो हो भी चुका है। वहा अब किसान और मजदूरो का राज्य है। जागीरदार, पूजीपति कोई नही है, कोई किसी को डराता धमकाता नही है, लूटता खसोटता नही है। सब भाइयो की तरह रहते हैं।"

"हा, सुना तो है लेकिन विश्वास नही होता। काश, यहा भी ऐसा हो जाय ! कितनी अच्छी जिन्दगी हो जाय तब !" वे लम्बी सर्द आह भर कर कहते। उनकी अन्धी आखो म आसू आ जाते। शायद उन्हें बापू की मृत्यु की याद आ जाती थी।

और फिर फैक्टरी मे हडताल हो गयी। हडताल बिल्कुल सफल रही। मजदूरो मे पूर्ण एकता थी। मालिको ने खरीदे हुए गुडो द्वारा मजदूरो मे फूट डालने की बहुतेरी कोशिश की, लेकिन उन्हें सफलता न मिली। तब उन्होंने पुलिस से मिल कर साजिश की। एक दिन आधी रात के समय कार्यकारिणी—

के सभी सदस्य पकड लिये गये। हम जान गये कि अब बाहर से मजदूर भर्ती किये जायेंगे लेकिन कर भी क्या सकते थे ।

दूसरे दिन दस बजे के करीब जेल के जमादार ने आ कर कहा कि मुझे दफ्तर मे बुलाया है। दफ्तर मे पहुचा तो जेलर ने बताया कि मुझे छोड दिया गया है और कि मुझे शीघ्र फैक्टरी पहुच जाना चाहिए।

मैं उसी दम फैक्टरी के लिए चल दिया। दिल धक धक कर रहा था। न जाने क्या बात हुई! मुझे अचानक क्यो छोड दिया गया! फैक्टरी के अहाते मे श्मशानघाट जैसी खामोशी छायी थी। स्थान स्थान पर लाल पगडी वाले सिपाही खडे थे। ऐसा लग रहा था जैसे कोई विशेष घटना घटी है।

धडकते दिल के साथ मैं मजदूर यूनियन के दफ्तर की ओर चल दिया। वहा सैंकडो मजदूर क्यू लगाये खडे थे। पास पहुँच कर देखा, लाइन के सिरे पर ताया लाल झडे म लिपटे भूमि पर बिछी श्वेत चादर पर लेटे थे।

बाहर से मजदूर ला कर मालिक हडताल तोडना चाहते हैं यह उन्हें पता चल गया था और वे अपना इकतारा ले कर शैलेन्द्र का वही गीत तू जिन्दा है, तो जिन्दगी की जीत पर यकीन कर गाते हुए फैक्टरी के गेट पर धरना दे कर बैठ गये थे। उन्हें देख कर और भी कितने ही मजदूर वही आ बठे थे। वातावरण अपार जोश से भर उठा था। पुलिस अपनी साजिश असफल होती देख भल्ला उठी थी और उसने जब नगे दमन का हथियार उठाया तो अ धे ताया भागते कहा—या शायद भागते क्यो!

काफी देर तक खामोश खडा मैं उन्हें देखता रहा। अ धी आखें बन्द थी, चेहरे पर अपार शान्ति व्याप्त थी, मुह जरा सा खुला था, मानो वे अब भी वही क्रान्तिकारी गीत गा रहे हो—"तू जिन्दा है तो "

और मुझे लगा—ताया मरे नही हैं। ऐसे आदमी कभी मरते नही हैं।

●